डॉक्टर

बर्नियरकी भारतयात्रा।

अर्थात

[१६५६ ई० से लेकर ६८ ई० तक मुगलराज्यमें की हुई

एक फ्रेञ्च विद्वान्‌की भारतयात्राका वृत्तान्त।

लेखक—फ्रैंकिवस बर्नियर एम० डी० (माण्ट पेलीयर)

अनुवादक—

बाबू गंगाप्रसाद गुप्त, काशी।

जिसे

गंगाप्रसाद वर्म्मा अध्यक्ष कल्पतरु प्रेसने अपने

व्ययसे छापकर प्रकाशित किया।

॥ काशी ॥

कल्पतरु प्रेसमें प्रथम बार मुद्रित।

सन् १९०५ ई०

प्रस्तावना।

हिन्दीभाषामें प्रवास और इतिहास–सम्बन्धी पुस्तकोंका बड़ा अभाव है। यदि सम्पूर्ण हिन्दीसाहित्यभाण्डारकी खोज की जाय तो इन विषयोंकी बहुत थोड़ी पुस्तकें देख पड़ेंगी। अतएव इस अभावकी पूर्त्तिके लिये उद्योग करना अत्यन्त आवश्यक है। वर्त्तमान पुस्तकके द्वारा हमारे पाठकगण फ्रैंक्विस बर्नियर साहब के सन् १६५६से लेकर १६६८ ई० तक भारतकी यात्रा करने और मुगल-राज्यकी तात्कालिक दशाका बहुत कुछ हाल जान सकेंगे। बर्नियर साहब फ्रान्स देशके एक प्रसिद्ध डाक्टर थे। उनकी लिखी बातें इतनी सत्य और विश्वसनीय समझी जाती हैं कि उनकी यात्रापुस्तकको लोग इतिहास मानकर बड़े आदरके साथ ग्रहण करते हैं। आज हम उसी पुस्तकका अनुवाद हिन्दीके स्वदेश-हितैषी और इतिहासप्रेमी पाठकोंकी सेवामें उपस्थित करते हैं। आशा है कि यह अनुवाद गुणज्ञ पाठकोंके आश्रयका पात्र होगा।

काशी
१—१०—०५

निवेदक—गंगाप्रसाद गुप्त।

डॉक्टर

बर्नियरकी भारतयात्रा ।

(१)

महान् मुगलराज्यमें संघटित अन्तिम राजद्रोहका इतिहास ।

दुनियाकी सैर करनेकी इच्छासे मैं पैलेस्टाइन और ईजिप्ट गया, फिर वहांसे भी आगे बढ़नेकी मेरे मनमें अभिलाषा हुई। लाल समुद्रको एक सिरे से दूसरे सिरे तक देखनेका विचार होतेही मैं ईजिप्टकी राजधानी कैरोसे जहां एक वर्षसे कुछ अधिक कालतक मैं ठहरा था चल पड़ा—और कारवांकी चालसे बत्तीस घण्टेमें स्वेज नगरमें आ पहुंचा। वहांसे मैं एक जहाज पर सवार हुआ। जहाज किनारे किनारे चल रहा था। १७ दिनके बाद मैं जद्दे पहुँचा। जद्देसे मक्का पहुँचनेमें दो पहर लगते हैं। यहां पहुँचना मेरी आशा के विरुद्ध था और उस प्रतिज्ञाके भी विरुद्ध जो मुझे लाल समुद्र के तुर्की हाकिमकी ओरसे दी गई थी। अतएव लाचार होकर मुझे मुसलमानोंकी उस पवित्र भूमि पर जहाजसे उतरना पड़ा जहां कोई ईसाई जबतक कि वह गुलाम न हो पांव रखनेका साहस नहीं कर सकता। यहां कोई पांच सप्ताह ठहर कर मैं एक छोटे जहाज पर सवार हुआ जिसने अरेबिया फेलिक्सके किनारे किनारे चलकर

पन्द्रह दिनमें मुझे बाबुलमन्दबकी समुद्रधुनीके पासवाले मुक्का नामक बन्दर पर पहुँचा दिया। यहां पहुँचकर मेरा यह इरादा हुआ कि मसोआ और आर्किको टापुओंको देखता हुआ हबूशियोंकी राजधानी अथवा इथिओपिया राज्यके मुख्य नगर गोंडरको जाऊं परन्तु इतनेमें मुझे यह समाचार मिला कि राजमाताके कपटप्रबन्धके कारण जिस दिनसे गोवासे जासूस पादरीको अपने साथ लानेवाले पोर्चु-गीज लोग मारे गये अथवा देशसे बाहर कर दिये गये उस दिनसे रोमन केथलिक वालोंका वहां उतरना सलामतीकी बात नहीं है। और वास्तवमें कुछ समय पूर्व इस राज्यमें प्रवेश करनेका प्रयत्न करनेके अपराधमें एक अभागा कपूचीन साधु सुवाकीनमें वध भी किया गया था। मैंने सोचा कि यदि मैं आर्मीनियन अथवा ग्रीक जैसा वेष बनाकर चलूंगा तो भय कुछ कम रहेगा और सम्भव है कि बादशाह मेरी योग्यता और कामोंको देखकर मुझे कुछ जमीन दे देगा जिसे यदि मैं उन्हें खरीद सकूंगा तो गुलाम जोत बोवेंगे। परन्तु साथही यह खटका हुआ कि इस वेषमें मुझे वहां विवाह भी अवश्य ही करलेना पड़ेगा, जैसे कि एक योरपीय सन्यासीको जिसने अपने को ग्रीकके बादशाहका वैद्य प्रसिद्ध किया था ऐसा करनेके लिये विवश होना पड़ा था। और फिर इस अवस्थामें मुझे इस देशके छोड़नेकी आशा एकबारही परित्याग करनी पड़ेगी।

मुगलवंश

इस तथा अन्य कई कारणोंसे जिनका हाल मैं आगे चलकर कहूंगा मैंने गोंडर जानेका विचार परित्याग किया और एक जहाज

की सवारी ली जो हिन्दुस्थानको आता था और बाईस दिनमें बाबुल-मन्दबकी समुद्रधुनीके मार्गसे सूरतमें जो मुगलराज्य भारतवर्षकी एक बन्दरगाह है आ पहुँचा। यहां पहुँचकर मुझे मालूम हुआ कि वर्त्तमान बादशाहका नाम शाहजहां है, जो जहांगीरका पुत्र और अकबरका पौत्र है। अकबरका पिता हुमायूं था। शाहजहांके पूर्व-पुरुषोंकी वंशावली देखनेसे मालूम होता है कि वह तैमूरलंगकी दसवीं पीढ़ीमें उत्पन्न हुआ है। तैमूरने जिसके पराक्रम और विजयकी बात सारे जगत्‌में विख्यात है अपनी एक सम्बन्धिनी को अर्थात् उस बाद-शाहकी इकलौती पुत्रीसे अपना विवाह किया था जो उस समय तातारियोंकी मुगल नामक प्रसिद्ध जाति पर राज्य करता था। परंतु अब मुगल शब्द उन सब अन्य देशके निवासियोंके लिये बोला जाता है जो वर्त्तमान समयमें भारतवर्षके राजकीय आसनपर विराज-मान हैं। इनसे यह न समझ लेना चाहिये कि भरोसे और मान मर्तबे के पद अथवा सेनाके बड़े बड़े ओहदे केवल मुगलोंहीको दिये जाते हैं। परदेशियोंमें ईरानी तुर्क और अरब हैं, उनको भी अच्छे अच्छे पद प्राप्त होते हैं। जिन लोगोंको आजकल यहां मुगल कहा जाता है उन की पहचानके लिये इतना संकेत बहुत है कि उनका रंग गोरा होता है और वे मुसलमानी धर्मको मानते हैं। योरपके ईसाइयोंकी पहचान जिनको यहां फिरंगी कहते हैं यह है कि उनका रंग सफेद होता है और धर्म खृष्टीय। और हिन्दू यह देखकर पहचाने जा सकते हैं कि रंग उनका गेहुआँ और धर्म मूर्त्तिपूजन होता है।

मैंने सूरतमें आकर यह भी मालूम किया कि शाहजहांकी उमर इस समय सत्तर वर्षके लगभग है और उसके चार पुत्र तथा दो पुत्रियां हैं और कई वर्ष हुए उसने अपने चारों पुत्रोंको भारतवर्षके

बड़ेबड़े चार प्रदेशोंका जिनको राज्यका एकएक भाग कहना चाहिये सम्पूर्ण अधिकार प्रदान कर दिया है। मुझे यह भी विदित हुआ कि एक वर्षसे कुछ अधिक कालसे बादशाह ऐसा बीमार है कि उसके जीवनमें भी सन्देह है और उसकी ऐसी अवस्था देखकर शाहजादों ने राज्यप्राप्तिके लिये मनसूबे बांधने और उद्योग करने आरम्भ कर दिये हैं। अन्तमें भाइयोंमें लड़ाई छिड़ी और वह पांच वर्ष तक चली।

इस युद्धकी कई प्रधान घटनाएं मैंने स्वयं देखी हैं, उनका इस ग्रन्थमें वर्णन करनेका मैं यत्न करूंगा। राज्यके बड़ेबड़े नगर आगरा और देहली हैं। वहां जाते समय रास्तेमें लुटेरोंके द्वारा लूटे जाने तथा सात सप्ताहकी यात्राके खर्चके कारण मैं तंगीमें आ गया। इससे मुगलराज्यमें मुझे नौकरी करनी पड़ी और आठ वर्ष तक मुगलोंसे मेरा संसर्ग रहा। पहले मैं राज्यका हकीम नियुक्त हुआ परन्तु थोड़ेही दिनोंमें भाग्यवशात् दानिशमन्दखां नामक एशिया खंड के एक बड़े श्रेष्ठ विद्वान्का मुझे आश्रय मिला जो पहले मीरबख्शी अथवा घोड़ोंके सरदारके पदपर नियुक्त था परन्तु इस समय मुगल दरबार का सबसे जबर्दस्त और प्रतिष्ठित उमरा हो गया था।

शाहजहांके बड़े बेटेका नाम दाराशिकोह, दूसरेका सुलतान शुजा, तीसरेका औरंगजेब, चौथेका मुरादबख्श और दोनों पुत्रियोंमें बड़ीका नाम बेगमसाहब † और छोटीका रौशनआरा बेगम है।

इस देशमें राजकुटुम्बके लोगोंका ऐसाही नाम रखनेकी रीति है जो राज्यका बड़प्पन प्रगट करे। इसीलिये शाहजहांकी बेगमका

† शाहजहांके समयके फारसी-इतिहासलेखकोंने इसका नाम जहानआरा बेगम बताया है और लिखा है कि बेगम साहब इसका उपनाम था (गं० प्र० गुप्त।)—

नाम जो अपनी सुन्दरताके लिये जगत्प्रसिद्ध था ताजमहल था। ताजमहलकी दर्शनीय समाधिके सामने जो आगरेमें है इजिप्ट वा मिश्रदेशके बड़े बड़े पिरामिड जो संसारके सात अद्भुत स्थानोंमें समझे जाते हैं अनगढ़ पत्थरोंके ढेर और बेढंग पथरीले ढोकोंके समान मालूम होते हैं। वैसेही जहांगीरकी बेगमका नाम पहले नूरमहल था पश्चात् नूरजहां बेगम हुआ। इसने बहुत दिनोंतक अपने पतिकी उस अवस्थामें जबकि वह सब कामकाज छोड़कर मद्यपान और विलासितामें लिप्त हो गया था राज्यको स्वयं सम्हाल लियाथा।

भारतवर्षमें जो ये बड़े बड़े और प्रतिष्ठित नाम राजकुटुम्बके लोगों और उमराके रखे जाते हैं और योरपकी भांति स्थान अथवा राज्याधिकारका परिचय देनेवाले नाम नहीं रखे जाते इसका कारण यह है कि यहां सब जमीन बादशाहकी समझी जाती है। अतएव योरपकी तरह यहां कोई अर्ल मार्क्विस अथवा ड्यूक नहीं हो सकता, क्योंकि दरबारियोंको जो कुछ भूमि आदि दी जाती है वह केवल पेन्शनकी भांति और उनके निर्वाहके लिये; और जो कुछ उनको दिया जाता है उसका बढाना घटाना या उसे वापस कर लेना बादशाहकी इच्छा पर निर्भर करता है। अतएव यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है कि राज्यके उमरा ऐसी प्रतिष्ठित पदवियोंसे भूषित किये जाते हैं, जैसे कोई राअन्दाजखां, कोई सफेशकुनखां, कोई बर्कन्दाजखां, कोई दियानतखां या दानिशमन्दखां या फाजिलखां, इत्यादि।

दाराशिकोह—दारामें अच्छे गुणोंकी कमी नहीं थी। वह मञ्जुभाषी, हाजिर-जवाब, नम्र और अत्यन्त उदार पुरुष था। परंतु अपनेको वह बहुत बुद्धिमान् और समझदार समझता था और उसको इस बात का घमण्ड था कि अपने बुद्धिबल और प्रयत्नसे वह

हर कामका बन्दोबस्त कर सकता है। वह यह भी समझता कि जगत् में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो उसको किसी बातकी शिक्षा दे सके। जो लोग डरते डरते उसे कुछ सलाह देनेका साहस कर बैठते उनके साथ वह बहुत बुरा बरताव करता। इस कारण उसके सच्चे शुभचिन्तक भी उसके भाइयोंके यत्नों और चालोंसे उसे सूचित न सकते। वह डराने और धमकाने में बड़ा निपुण था। यहां तक कि बड़े बड़े उमराको बुरा भला कहने और उनका अपमान कर डालने में भी वह संकोच न करता। परन्तु सौभाग्यकी बात यह थी कि उसका क्रोध शीघ्रही शान्त हो जाता। दाराका जन्म मुसलमान जातिमें हुआ था इसलिये वह इस धर्मकी रीति नीतिके अनुसार चलना और लोगोंके दिखावमें ऐसा रहता कि मानों वह इस धर्मपर बहुत आस्था रखता है, परन्तु वास्तवमें हिन्दुओंके साथ वह हिन्दू बन जाता और ईसाइयोंके साथ ईसाई। बहुतसे हिन्दू पण्डित सदा उसे घेरे रहते और पुरस्कारमें उससे बहुत द्रव्य पाते। ऐसा भी कहा जाता है कि इन्हीं लोगोंकी संगतिके कारण मुसलमानी धर्मके प्रति उसका विश्वास कम होगया था। इस सम्बन्धमें आगे चलकर हिन्दुओंके धर्मके विषयमें लिखते समय मैं कुछ विस्तारके साथ लिखूंगा। कुछ कालतक उसने बुजी नामक एक पादरीकी शिक्षा भी बड़े ध्यानसे सुनी थी और उस शिक्षाकी सत्यता पर उसे कुछ कुछ विश्वास भी उत्पन्न होने लगा था। इतना होने पर भी लोग ऐसा कहते हैं कि असलमें दारा नास्तिक था और ये दिखाऊ बातें केवल कौतुक और मनोविनोदके लिये थीं। कुछ लोगोंका यह भी कथन है कि वह जो कभी ईसाईपन दिखाता उसका यह कारण है कि ईसाई लोग जो उसके तोपखानेमें नौकर थे और जिनकी संख्या बहुत थी

उसे चाहै और हिन्दूपन प्रगट करनेसे उसका यह अभिप्राय था कि जिसमें राज्यके प्रतिष्ठित राजाओं और सरदारोंकी वह प्रीति सम्पादन कर सके, ताकि काम पड़ने पर दोनों जातिके लोग उसकी सहायता करें। परन्तु इन दो तीन धर्म्मोंके बीचमें पड़ कर वह न केवल अपनी युक्तियोंमें विफलही हुआ बल्कि अन्तमें उसे अपने प्राणोंसे भी हाथ धोना पड़ा। इस इतिहाससे आगे चलकर पाठकों को मालूम होगा कि औरंगजेबने उसे काफिर अथवा धर्म्मद्रोही और धर्म्म-रहित कहकर ही उसका प्राण लिया।

सुलतान शुजा—शाहजहांका दूसरा पुत्र सुलतान शुजा बहुत सी बातोंमें अपने बड़े भाई दारासे मिलता जुलता था, परन्तु उसकी अपेक्षा यह अधिक बिनयी और दृढ़ विचारका मनुष्य था। सामान्य चरित्र और बोलचालमें भी यह दारासे बढ़ चढ़ कर था। किसी प्रकारका कपट-प्रबन्ध भी यह बड़ी दक्षतासे कर लेता। गुप्त रूपसे धन देकर बहुतसे रईसों उमरा और (जोधपुर-नरेश) महाराज यशवन्तसिंह जैसे बड़े बड़े प्रतिष्ठित राजाओंको अपना मित्र बना लेना भी यह खूब जानता था। परन्तु इतने गुण होने पर भी शुजा आनन्द और विलास-रसमें डूब जाता। जिस समय सुन्दरियोंके जमघटेमें वह बैठता उस समय नाचरंग गानतान और मद्यपानमें दिन दिन और रात रात भर बीत जाते। ऐसे समयमें उसका कोई मुसाहिब जो अपनी भलाई चाहता उससे कुछ कहनेका साहस न करता। तरंगमें आकर वह अपने प्रियपात्रोंको उत्तमोत्तम वस्त्रादि इनाम दे देता और अपने आश्रितोंका वेतन भी घटा या बढ़ा देता। ऐसे रंगतानमें दिन बीतनेके कारण उसके प्रान्तका राज्य-सम्बन्धी कारोबार बिगड़ने लगा और प्रजाकी प्रीति उसपरसे दिन पर दिन कम होती गई।

यद्यपि शुजाका पिता और उसके भाई तुर्कोंका धर्म्म मानते (अर्थात् सुन्नी) थे, परन्तु वह स्वयं ईरानियोंके धर्मका अनुगामी (अथवा शीया) था। मुसलमानी धर्म्ममें बहुतसे भेद हैं जैसा कि पुस्तक "गुलिस्तां" के रचयिता प्रसिद्ध शेखसादीके एक शेरके भावार्थसे जो आगे दिया जाता है जान पड़ेगा—

"मैं एक घूमने फिरनेवाला शराबी फकीर हूं। मेरा कोई धर्म नहीं है। तौभी मैं बहत्तर जातियोंमें गिना जाता हूं।"

इन बहुतसी जातियोंमें दो मुख्य हैं और इन दोनोंके लोग एक दूसरेके कट्टर शत्रु हैं। इनमें एक जाति तुर्कोंकी है जिनको ईरानी उसमानका अनुगामी बतलाते हैं। इस जातिके लोग उसमानको अपने पैगम्बर मुहम्मदका सच्चा और योग्य प्रतिनिधि मानते हैं और कहते हैं कि खलीफा अथवा स्वतन्त्र धर्माध्यक्ष और कुरानका अर्थ समझाने तथा धार्मिक वाद विवादका समाधान करनेवाला केवल वही था। दूसरी जाति ईरानियोंकी है जिनको तुर्क लोग राफजी वा शीया और अलीमर्दान अर्थात् धर्मद्रोही और अलीके धर्मका पक्षपाती कहते हैं। कारण यह कि ईरानियोंको इस बातका विश्वास है कि उत्तराधिकारी और धर्मगुरु होनेका स्वत्व केवल मुहम्मदके दामाद अली कोही था।

सुलतान शुजाने जो शीया-धर्म्म ग्रहण किया था इसमें उसकी चतुराई थी। शाहजहां बादशाहके दरबारमें उस समय अधिकतर इसी धर्मके लोग बड़े बड़े पदोंके अधिकारी थे और दरबारमें उनका बड़ा मान था। शुजाको आशा थी कि काम पड़ने पर इन लोगोंसे बहुत कुछ सहायता मिलेगी और लाभ पहुँचेगा।

औरंगजेब—तीसरा भाई औरंगजेब यद्यपि दाराके समान

शिष्ट और उदार ...का नहीं था तौभी उसकी अपेक्षा अधिक दृढ़ विचारका और ऐसे मनुष्योंके चुननेमें अधिक चतुर था जो उसके कामोंको भक्ति और योग्यताके साथ पूरा कर सकते। उसके इनाम आदि बाँटनेमें यह विशेषता थी कि वह केवल उन्हीं लोगोंको खूब इनाम देता जिनको प्रसन्न करना या प्रसन्न रखना उसके लिये अत्यन्त आवश्यक होता। वह अपने भेदको बहुत छिपाकर रखता। धूर्त्तता और कपटता उसमें कूट कूट कर भरी थी। जिस समय वह अपने पिताके दरबारमें जाता उस समय जो भक्ति उसमें जरा भी न होती उसके भी दिखानेका प्रयत्न करता और सांसारिक सुख वैभवको धिक्कार बताता; परन्तु भीतरही भीतर भविष्यमें ऊंचा पद पानेका मार्ग तैयार करता जाता। यहांतक कि जब उसे दक्षिणकी सूबेदारी दी गई तबभी उसने बहुतोंसे यही कहा कि "अगर मुझे तर्क-दुनिया और दरवेशीकी इजाजत मिलजाती तो मैं जियादा खुश होता, क्योंकि मेरी दिली तमन्ना भी यही थी कि बाकी जिन्दगी पारसाई और इबादतहीमें सर्फ करता। अफकारे दुनियावी और उमूर सल्तनत की जिम्मेदारीमें पड़ना मुझे नामरगूब और नापसन्द है।" यद्यपि औरंगजेबका समस्त जीवन धूर्तता और कपटाचरणमेंही बीता तथापि वह ऐसी बुद्धिमानीके साथ काम करता कि उसके भाई दारा शिकोहको छोड़ दरबारके सभी लोग उसकी चतुराईके समझनेमें धोखा खाते। शाहजहाँ बादशाहके औरंगजेबके विषयमें ऊंचे विचार थे, इसमे दाराको ईर्षा होती और अपनी मित्रमंडलीमें बैठकर वह कभी कभी कहा करता कि "अपने सब भाइयोंमें मुझे सिर्फ एकही का शुबहा और खौफ है। वह और किसीका नहीं, इन्हीं हजरत दीनदार और नमाजी साहबका।"

मुरादबख्श—शाहजहांका सबसे छोटा पुत्र मुरादबख्श विचार और विवादमें अपने तीनों बड़े भाइयोंसे उतर कर था। जिस तरह हो मौज मारनाही उसका प्रधान उद्देश्य था और शिकार तथा भोजनके लक्ष्में उसका अधिक समय बीतता। तौभी वह उदार और सभ्य था। परन्तु उसे इस बातका गर्व था कि वह कोई भेदकी बात रखताही नहीं। छिपी सलाहों और छलबलसे उसे घृणा थी और इस बातको वह लोगों पर प्रकाशित करना चाहता कि वह केवल तलवार और अपने भुजबलका भरोसा रखता है। वास्तवमें मुराद साहसी था। यदि इस साहस और वीरताके साथ साथ उसमें चतुराई और बुद्धिमानी भी होती तो यथासम्भव वह अवश्य अपने तीनों भाइयोंसे उन्नत हो जाता और निस्सन्देह हिन्दुस्तानकी बादशाहत प्राप्त करता, जैसा कि आगे चलकर मालूम होगा।

बड़ी शाहजादी बेगमसाहब—बादशाहकी बड़ी बेटी बेगमसाहब अत्यन्त रूपवती प्रसन्न-वदन और अपने पिताकी बहुत ही प्यारी थी। पिताका अपनी पुत्रीके साथ ऐसा सम्बन्ध हो जाने की खबर थी कि जिसपर कभी विश्वास नहीं किया जा सकता। कहते हैं कि मुल्लाओंने यह व्यवस्था दी थी कि बादशाहका उसी वृक्षके फलका आनन्द लेना जिसको उसने स्वयं लगाया है अनुचित और अन्याय नहीं है! शाहजहांको अपनी इस प्यारी पुत्रीपर बेहद विश्वास था। यह भी अपने पिताकी सलामती पर खूब ध्यान रखती और उसकी रक्षा करनेमें यहांतक सावधान रहती कि कोई भोजन जो स्वयं उसके सामनेका बना न होता वह बादशाहके लिये नहीं भेजा जाता। इसलिये बेगम साहबका शाहजहांसे सम्बन्ध रखनेवाली

बातोंमें इतना अधिक अधिकार रहना और बादशाहके मिजाजकी बागडोर उसके हाथमें होना तथा राज्यके बड़े और गम्भीर विषयों में भी उसका पूरा दबाव माना जाना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। बादशाहकी ओरसे मिलनेवाली बंधी हुई वार्षिक रकममेंसे और अपने अधिकारमें सौंपे हुए सहस्रों राजकीय कामोंसे तथा चारों ओरसे आने वाली बहुमूल्य भेटोंसे बेगमसाहबने बहुत धन इकट्ठा कर लिया था। दारा अपने कामोंमें सफलता प्राप्त करता सुखी होता और बादशाहकी उसपर अधिक प्रीति रहती, इसका यह कारण था कि बेगमसाहब उसके कामोंमें बराबर भाग लेती, उसका हित चाहती और खुल्मखुल्ला लोगोंपर अपनेको उसका पक्षपात करने वाली प्रगट करती। बेगमसाहबकी कृपा बढ़ानेका दारा भी निरन्तर यत्न करता और यह भी कहा जाता है कि उसने उससे प्रतिज्ञा भी की थी कि जब मैं बादशाह हो जाऊंगा तब तुरन्त तुझको शादी करने की अनुमति दे दूंगा। किन्तु दाराकी यह प्रतिज्ञा हिन्दुस्तानके बादशाहोंकी नीतिके विरुद्ध थी जिसके अनुसार शाहजादियोंका विवाह बिल्कुल अनुचित माना गया है। इसका पहला कारण तो यही है कि कोई व्यक्ति राज-कुटुम्बका सम्बन्धी होनेके योग्य नहीं समझा जाता; दूसरा यह कि इस बातका खटका रहता है कि कहीं शाहजादीका पति किसी समय बलवान् होकर राज्यलोभी न बन जाय और राज्य को अपने अधिकारमें कर लेनेका उद्योग न करने लग जाय।

बेगम साहबकी प्रेम-सम्बन्धी दो बातें यहांपर लिखकर मैं आशा करता हूं कि इसके पढ़नेवाले मुझपर किसी प्रकारका सन्देह नहीं करेंगे। मैं जो कुछ लिखता हूं वह ऐतिहासिक है और हिन्दुस्तानकी रीति नीतिका पूरा पूरा विवरण लिखना मेरा मुख्य उद्देश्य है।

प्रेमका जैसा भयंकर परिणाम एशियामें होता है वैसा योरपमें नहीं होता। फ्रान्सदेशमें ऐसी प्रेम-घटनाओंको लोग हँसी और मनोविनोद का कारण समझते हैं और थोड़े दिनोंमें भूल जाते हैं; परन्तु संसारके इस भाग अर्थात् हिन्दुस्तानमें ऐसाही कोई अवसर आ पड़ता है जब ऐसी बातोंका महा भयानक और दुःखद परिणाम नहीं होता, नहीं तो बहुत बुरी दशा देख पड़ता है।

शाहजादी बेगमसाहब महलके अन्दर रहती और दूसरी स्त्रियोंकी तरह उसपर भी पहरा रहता, किन्तु इतना होनेपर भी कहते हैं कि किसी छिपी रीतिसे उसके पास एक युवकका आना जाना आरम्भ हो गया जो यद्यपि कोई ऊंचे दर्जेका मनुष्य नहीं था तथापि सुन्दर बहुत था। परन्तु ऐसी बातोंका बेगमकी सहेलियों और बांदियोंसे छिपा रहना सम्भव नहीं था। जब इस बातकी खबर शाहजहांको लगी (कि उसकी बड़ी बेटी छिपे छिपे किसी युवा पुरुषसे मिलती है) तब उसने धोखे और कुसमयमें महलमें आकर इस बातकी जाँच करनेका निश्चय किया। एक दिन बादशाह अक-स्मात् ऐसे समय महलमें चला गया और उसके आनेकी खबर इतने पीछे बेगमको मालूम हुई कि अपने प्रेमीके छिपानेका विचार करने तकका उसे अवकाश नहीं मिला। लाचार एक पानी गर्म करनेकी बहुत बड़ी देग जो रखी हुई थी उसीमें उसने उस घबराये हुए प्रेमी को लिटा दिया। जिस समय बादशाह अन्दर आया उस समय उसके चेहरेपर क्रोध और आश्चर्यका चिन्ह नहीं था, बल्कि सदा की भांति आकर उसने बेगमसे अनेक प्रकारकी बातें करना आरम्भ किया। कुछ देरके बाद उसने कहा "मालूम होता है तुमने आज हस्ब-मामूल गुस्ल नहीं किया है। हम्माम करना चाहिये।" इतना

कहकर उसने ख्वाजःसराओं को देगके नीचे आग बालनेकी आज्ञा दी। फिर जबतक उसे इस बातका निश्चय नहीं होगया कि वह व्यक्ति (अर्थात् शाहजादी बेगमका प्रेमी) जलकर प्राण-रहित नहीं हो गया तबतक वह वहांसे नहीं हटा।

कुछ दिनोंके बाद शाहजादी एक दूसरे पुरुषके प्रेमजालमें उलझ गई और अन्तमें वह भी ऐसी ही शोकजनक दशाको प्राप्त हुआ। अबकी उसने नजरखां नामक एक ईरानी नवयुवकको जोकि सुन्दरतामें प्रसिद्ध होनेके अतिरिक्त सुयोग्य बुद्धिमान् साहसी और वीरपुरुष था और जिसको दरबारके सब लोग बहुत मानते थे अपने खानसामोंके पदके लिये पसन्द किया। औरंगजेबका मामूँ शाइस्ताखां इसकी बहुत प्रशंसा करता; यहांतक कि एक दिन भरे दरबारमें उसने यह प्रस्ताव कर डाला कि "यह ईरानी शख्स इस काबिल है कि बेगमसाहबकी शादी इससे कर दी जावे।" शाहजहांको यह बात बहुत बुरी मालूम हुई। उसे पहलेहीसे कुछ कुछ सन्देह था कि नजरखां और शाहजादीमें परस्पर कुछ अनुचित सम्बन्ध हो गया है। अब इस नवीन प्रस्तावको सुनकर वह सन्देह और भी पक्का होगया। फिर तो उसने उस नवयुवकको इस संसारसे बिदा करनेके लिये कोई विशेष उपाय या सोच विचार करनेकी आवश्यकता नहीं समझी, वरन् दरबारेआममें उसे बुलाकर कृपा दिखानेकी रीतिपर अपने हाथसे उसे पानका बीड़ा खानेको दिया। पान लेनेके समय युवकके मनमें किसी प्रकारका खटका वा सन्देह नहीं हुआ; क्योंकि इस राज्यमें पान देना बड़े मान और प्रतिष्ठाकी बात है। अतएव उसने बीड़ा लेकर मुँहमें रख लिया। इस बातका उसे कुछ भी ध्यान नहीं था कि इस हँसमुख बादशाहने धोखे से उसे विष दे दिया है

बरञ्च यह सोच कर कि अब बादशाहकी कृपादृष्टि होनेसे दिनपर दिन उन्नति होती जायगी वह हर्षपूर्वक पाल्कीपर सवार होकर अपने घरकी ओर चला; परन्तु विषका असर बहुत कड़ा होनेके कारण अपने घर पहुँचनेसे पहलेही वह दूसरे घर पहुँच गया।

रौशनआरा बेगम--शाहजहांकी छोटी बेटी रौशनआरा बेगम सुन्दरतामें अपनी बड़ी बहिनसे कम थी और बुद्धिमत्तामें भी कुछ ऐसी प्रसिद्ध नहीं थी। तौभी वह वैसीही मौजवाली चञ्चला और विलासिनी थी। वह औरंगजेबका बहुत पक्ष करती और बेगम साहब तथा दारासे खुलेआम ईर्षा रखती। कदाचित् इसी कारणसे वह बहुत धन इकठ्ठा नहीं कर सकी और राज्य-सम्बन्धी कामोंमें भी उसका बहुत कम अधिकार रहा। परन्तु फिर भी महलमें रहने और धोखेबाजी तथा चतुराईमें निपुण होनेके कारण वह बराबर आवश्यक बातोंकी सूचना जासूसोंके द्वारा औरंगजेबके पास पहुँचाती रहती।

भाइयोंका राज्यलोभ-लड़ाईसे कई वर्ष पहले शाहजहांका चित्त अपने उपद्रवी स्वभावके पुत्रोंसे दुःखित और भयभीत हो गया था। यद्यपि उसके चारों पुत्र ब्याहे हुए और बालिग थे तौभी वे आपसमें बन्धुभाव नहीं रखते थे वरन् राज्यके लोभसे एक दूसरे के कट्टर शत्रु हो रहे थे; यहांतक कि दरबारमें शाहजादोंके भिन्न भिन्न पक्षपातियोंके भी भिन्न भिन्न दल हो गये थे। शाहजहां स्वयं अपने प्राणोंके भयसे सदा काँपा करता और भविष्यमें आनेवाली आपत्ति-योंकी चिन्तामें डूबा रहता। उसने अपने पुत्रोंको ग्वालियरके सुदृढ़ और दुर्भेद्य पहाड़ी किलेमें जहां स्वच्छ जल और रसद आदिकी कमी नहीं थी और जिसमें पहले भी अनेक बार राजकुटुम्बके लोग नजर-

बन्द रखे जा चुके थे प्रसन्नतापूर्वक कैद कर दिया होता, परन्तु सोच विचार कर अन्तमें उसने इस बातको अपने मनमें मान लिया कि वास्तवमें अब वे इतने सबल हो गये हैं कि उनके साथ ऐसा बरताव नहीं किया जा सकता। बादशाहको निरन्तर इस बातका भय लगा रहता कि यदि ये परस्पर लड़ गये तो यातो अपने लिये अलग अलग स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लेंगे—या राजधानीमेंही मार काट मचाकर उसे एक घोर संग्रामकी रंगभूमि बना डालेंगे। अतएव इन भविष्यमें आनेवाली आपत्तियों और दुःखोंसे बचनेके लिये उसने अपने पुत्रोंको चार सुदूर प्रदेशोंका अधिकारी बनाना निश्चित किया। निदान अपने विचारके अनुसार शुजाको बंगाले, औरंगजेबको दक्षिण, मुरादको गुजरात और दाराको मुलतान एवं काबुलका हाकिम बनाया। सुलतान शुजा, औरंगजेब और मुरादबख्श तुरन्त अपने अपने प्रान्तको चले गये और वहां जाकर उन्होंने स्वतन्त्र नरेशोंकी भांति रहना आरम्भ किया। इस प्रकार उनकी राज्य-लोलुपता शान्त हुई। वे राज्यकी आमदनी स्वयं अपने कामोंमें खर्च करने और देशियों तथा विदेशियों पर रोब रखनेके बहाने बड़ी बड़ी सेनाएँ इकट्ठी करने लगे। परन्तु दाराने जो अपने सब भाइयोंमें बड़ा था और जिसे इस बातकी आशा थी कि शाहजहांके बाद गद्दी का अधिकार मुझीको मिलेगा अपने पिताका दरबार नहीं छोड़ा। शाहजहांने भी उसे राज्य-सम्बन्धी कामोंमें अनेक अधिकार प्रदान कर तथा दरबारमें अपने सिंहासनके पासही एक दूसरे नीचे सिंहासन पर बैठनेकी अनुमति देकर उसकी आशाओंको उत्तेजना दी। जिस समय दरबार लगता और पिता पुत्र दोनों अपने अपने आसन पर विराजमान होते उस समय ऐसा जान पड़ता कि मानों दो दो नरेश

एकही राज्यका शासन कर रहे हैं। इन बातोंसे यद्यपि प्रगटमें यही मालूम होता है कि स्वयं बादशाह दाराकी आज्ञाओंको पुष्ट करता परन्तु इस बातका पूरा प्रमाण तैयार है कि यद्यपि दारा अपने पिताको बहुत चाहता और उसका अदब मानता किन्तु बादशाह उसके प्रति अपने मनमें कपट रखता। उसे सदा विष दिये जानेकी चिन्ता लगी रहती और ऐसा कहा जाता है कि औरंगजेबसे जिसके विषयमें उसके विचार ऐसे ऊंचे थे कि यह लड़का राज्य-शासनके लिये बहुतही योग्य और उपयुक्त है वह छिपे छिपे पत्र-व्यवहार भी किया करता।

इस इतिहासकी उन बातोंको अच्छी तरह समझानेके लिये जो आगे आनेवाली हैं मैंने शाहजहां और उसके पुत्रोंका संक्षिप्त वृत्तान्त भूमिकाकी भांति लिख देना आवश्यक समझा; उसी प्रकार उसकी दोनों पुत्रियोंका भी कुछ हाल दे देना उचितही हुआ; क्योंकि ये दोनों भी इन भयंकर घटनाओंसे बहुत बड़ा सम्बन्ध रखती हैं। कदाचित् लोग इस बातको न जानते हों और अपनी अज्ञानताके कारण उनकी निन्दा और उनके विषयमें शंकाएँ करते हों परन्तु हिन्दुस्तान कुस्तुनतुनियां और एशियाके अन्यान्य देशोंकी बहुत बड़ी बड़ी घटनाएँ प्रायः औरतोंहीके द्वारा हो जाया करती हैं।

भाइयोंमें संग्राम आरम्भ होनेसे पहले औरंगजेब शाह गोलकुण्डा और उसके मंत्री मीरजुमलासे सम्बन्ध रखनेवाली जो घटनाएँ हुईं उनका कुछ हाल यहां पर लिख देनेसे आशा है कि इस पुस्तकका आगेका वृत्तान्त समझनेमें पाठकोंको अधिक सुभीता जान पड़ेगा और यह भी मालूम हो जावेगा कि शाहजहांके बाद हिन्दुस्तानका बादशाह होनेवाला तथा इस इतिहासका नायक औरंगजेब कैसा

था और उसकी युक्ति तथा रीति नीति किस ढंगकी थी। मीरजुमला ने जिस भांति शाहजहांके तीसरे पुत्र औरंगजेबकी क्षमता और सर्वोपरिताका पाया जमाया उसका विवरण यों है—

मीर जुमला--जिस समय औरंगजेबको दक्षिणकी सूबेदारी दी गई थी उस समय मीरजुमला नामक एक व्यक्ति शाह गोलकुण्डाका मंत्री और उसकी सारी सेनाका प्रधान अध्यक्ष था। मीरजुमलाका जन्म ईरान देशमें हुआ था और भारतवर्षमें आकर उसने बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त की थी। यह व्यक्ति उच्च कुलका न होने पर भी बुद्धिमान् बहुत था। वह पूर्ण योद्धा और कामकाजमें विशेष निपुण था। उसके पास बहुत धन था, परन्तु यह धन उसने केवल गोलकुण्डा-नरेशका मन्त्री होनेके कारणसे नहीं इकट्ठा कर लिया था वरञ्च देश देशान्तरोंमें व्यापारकी फैलावट तथा हीरेकी खानोंके ठेकोंसे भी जो दूसरोंके नामोंसे ले रखे गये थे पैदा किया था। इन खानोंकी खुदाई निरन्तर इतने परिश्रमसे होती और उनसे इतनी अधिकताके साथ हीरे निकलते कि उनकी गिनती न की जा सकती। उनकी गणनाके लिये उसने यह नियम जारी कर रखा था कि हीरोंसे भरे बड़े बड़े टाटके बोरे गिन लिये जाया करते थे। उसकी राजनैतिक शक्ति भी बड़ी प्रबल थी, जैसा कि इस बातसे मालूम होगा कि गोलकुण्डा-नरेशका प्रधान सेनाध्यक्ष होनेके सिवा उसने खास अपने लिये अपने खर्चसे एक बहुत बड़ी सेना मय एक तोपखानेके जिसमें प्रायः ईसाई नौकर थे नियुक्त कर रखी थी। यहां पर यह भी कह देना आवश्यक जान पड़ता है कि कर्नाटक पर अधिकार करनेके बहाने उसने वहांके सब प्राचीन देवमन्दिरोंको लूट लिया और इस

प्रकार अपनी सम्पत्तिको बहुत ऊंचे दर्जेको पहुँचा दिया था ।

मीरजुमलाको गोलकुण्डाका राजा अपने पाससे दूर कर देने अथवा मार डालनेका अवसर ढूँढ रहा था । उसे स्वाभाविक रीतिसे ही वजीरको देखकर डाह होती और एक आज्ञाकारी नौकर न समझ कर वह उसे अपना भयंकर शत्रु समझता । इतना होने पर भी वजीरके शुभचिन्तकों और मित्रोंके डरसे ... सदा दरबारमें वर्त्तमान रहते वह अपना इरादा बहुत छिपाकर रखता । गोलकुण्डा-नरेशकी माकी उमर अधिक हो गई थी तोभी अबतक वह बहुत सुन्दर थी । बादशाहको कहींसे खबर मिली कि वजीर और उसकी मांमें कुछ अनुचित सम्बन्ध पैदा हो गया है । इतना सुनतेही जो बात बहुत दिनोंसे उसके हृदयमें छिपी थी वह स... ना फूट पड़ी; उसने ठान लिया कि इस जबर्दस्त शत्रुको इस अपराधके लिये अवश्य दण्ड देना चाहिये ।

इस समय वजीर कर्नाटकमें था परन्तु दरबारमें बड़े बड़े पदों पर उसके तथा उसकी स्त्रीके सम्बन्धियों और मित्रोंके नियुक्त होनेके कारण इन आनेवाली आपत्तियोंकी खबर तुरन्त उसके कानोंतक पहुँच गई । उस धूर्त्त वजीरने पहली काररवाई तो यह की कि अपने एकमात्र बेटे मुहम्मद अमीरखांको जो उस समय गोलकुण्डामें था लिखा कि "जिस हीले और बहानेसे मुमकिन हो इस मुहिममें अपने शरीक होनेकी जरूरत शदीद जाहिर करके तुम फौरन मेरे पास चले आओ ।" परन्तु जब उसका पुत्र शाही चौकीदारोंके पहरेसे बचकर निकल न आ सका तब उसने एक दूसरी चाल चली । उसकी यह चाल ऐसी प्रबल थी कि जिसने गोलकुण्डा-नरेशको एकबारही बर्बादीके किनारे पर पहुँचा दिया । सच है, जो बादशाह अपना भेद छिपा कर नहीं रख सकता वह अपने राज्यकी रक्षा करनेमें समर्थ नहीं हो

सकता। वजीरकी दूसरी चाल यह थी कि उसने औरंगजेबको जो दक्षिणकी राजधानी दौलताबादमें था नीचे लिखे अनुसार एक पत्र लिखा ——

पत्र

“साहबे आलम,

“मैंने शाह गोलकुण्डाकी वह बड़ी बड़ी खिदमतें की हैं कि जिनको तमाम जमाना जानता है और जिनके लिये उसे मेरा बहुतही ममनून होना चाहिये। मगर इतने पर भी वह मेरी और मेरे खान्दानकी बर्बादीकी फिक्रमें है। इसलिये मैं आपकी पनाह लेना और आपके हुजूरमें हाजिर होना चाहता हूं और इस दरख्वास्तकी कुबूलियतके शुक्रानेमें जिसकी पिज़ीराईकी आपकी जानिबसे कामिल उम्मीद है एक मनसूबा अर्ज करता हूं जिसके जरियेसे आप बआसानी बादशाह मजकूरको गिरफ्तार करके उसके मुल्क पर कब्जा कर सकेंगे। आप मेरे वादेकी सचाई पर एतबार और भरोसा फर्मायें। इन्शाअल्लाह यह मुहिम न तो कुछ मुश्किलही होगा न कुछ खतरनाक ही। यानी आप पांच हजार चीदा सवारोंके साथ बहुत जल्द और बिला तवक्कुफ़ कूच करते हुए गोलकुण्डाकी तरफ चले आवें जिसमें सिर्फ सोलह दिन लगेंगे और यह मशहूर करदें कि शाहजहांका सफीर शाह गोलकुण्डासे बाज जरूरी मुआमिलातमें गुफ्तगू करनेको भागनगर जाता है और यह फौज

उसकी अर्दलीमें है। चूंकि वह दबीर जिसकी मार्फ़त हमेशा ऐसे उमूरकी इत्तला बादशाहको हुआ करती है मेरा करीबी रिश्तेदार है और उसपर मुझे कामिल भरोसा है इसलिये मैं वादा करता हूँ कि एक ऐसा हुक्म जारी हो जायगा जिसकी वजहसे बगैर पैदा होने किसी शक व शुबहाके आप भागनगर के दरवाजे तक पहुँच जायँगे और गोलकुण्डावाले आपको सफीरके सिवा कोई दूसरा शख्स नहीं समझेंगे। पस जब बादशाह मामूलके मुआफिक फर्मानके इस्तकबालके लिये जो सफीर के पास हुआ करता है आवे तो आप उसे बआसानी पकड़कर जो कुछ मुनासिब जानें उसकी निस्बत तजवीज़ कर सकते हैं। माहजा इस मुहिमका कुल खर्चा मैं आपको दूंगा और इसके इख्तताम तक पचास हजार रुपये रोज देता रहूंगा।

न्याज़मन्द—मीरजुमला।"

गोलकुण्डा—औरंगजेब जो सदा ऐसे विचारोंमें लगा रहता मीरजुमलाकी प्रार्थनाके अनुसार तुरन्त तैयारी करके गोलकुण्डा की ओर चल खड़ा हुआ और इस ढंगसे चला कि भागनगर पहुँचने तक किसीको भी यह सन्देह नहीं हुआ कि यह बहुत बड़ी सेना शाहजहांके सफ़ीर या एलचीकी नहीं है। यहाँ तक कि बादशाह उस नियमके अनुसार जिसका बरताव ऐसे समयों पर किया जाता है उस नकली एलचीकी अगवानीके लिये आया। परन्तु इसी बीचमें जब कि वह निःशंक मनसे अपने विश्वासघाती शत्रुकी ओर जा रहा था और सम्भव था कि १०—१२ जार्जियन गुलाम जो पहले हीसे इस कामके लिये नियुक्त थे उसे पकड़ लेते कि इतनेमें एक उमरा जो

इस कपट-प्रबन्धमें शामिल था मनमें पश्चात्ताप और दया आ जानेसे एकदम चिल्ला उठा—"जहांपनाह झटपट निकल जायँ वर्ना फँस जावेंगे। यह औरंगजेब है, एलची नहीं।" इस अवसर पर बादशाह के चित्तमें जितनी घबराहट और हैरानी आई होगी उसका कहना ही क्या! वह वहांसे भागा और जो घोड़ा उसे पहले मिला उसीपर सवार होकर भागनगरसे तीन मीलके अन्तर पर गोलकुण्डा नामक किलेकी ओर बड़ी तेजीके साथ निकल गया।

यद्यपि औरंगजेब अपने आखेटसे निराश हुआ तौभी उसने सोचा कि यह डरनेका अवसर नहीं है; निडर भावसे उसके पकड़ने के उपायों और युक्तियोंमें लगा रहना चाहिये। अतएव सबसे पहले उसने यह काम किया कि भागनगरके समस्त महलोंको लूट लिया और सब बहुमूल्य वस्तुओंको अपने अधिकारमें कर लिया; परन्तु महलकी स्त्रियोंको पूर्वी बादशाहोंकी रीतिके अनुसार बड़ी सावधानीसे उनके बादशाहके पास भेज दिया। इसके बाद उसने बादशाहको जो गोल-कुण्डेके किलेमें था कैद करनेका विचार किया। यद्यपि तोपोंके न होनेसे वह लाचार था तथापि उसने यह निश्चय किया कि दुर्गको घेर रखना चाहिये, क्योंकि इस दशामें बादशाहको रसद आदिके न पहुँचनेके कारण देरतक बचाव करना कठिन होगा। किन्तु इसी अवस्था में जब कि वह दुर्गको घेरे पड़ा था और दो महीने बीत चुके थे कि इतनेमें शाहजहांका यह आज्ञापत्र आया कि तुरन्त किला छोड़कर अपने सूबेको चले जाओ। इस समय गोलकुण्डाका दुर्ग भोजनके पदार्थ और युद्धकी सामग्री न होनेके कारण अपनी अन्तिम अवस्थाको पहुँच चुका था; परन्तु ऐसा अवसर पाकर भी लाचार होकर औरंगजेबको लौटना पड़ा।

औरंगजेबको विश्वास था कि दारा और बेगम साहबके आग्रहसे ही बादशाहने यह आज्ञा जारी की है; कारण कि वे समझते होंगे कि यदि औरंगजेब गोलकुण्डा-नरेश पर विजय प्राप्त कर लेगा तो बहुतही बलवान् हो जायगा। परन्तु इतना होने पर भी उसमें कुछ भी क्रोध न दिखाकर एकदम पिताकी आज्ञा मानली। दुर्गका मुहासरा छोड़ने से पहले चढ़ाई करनेमें जो व्यय हुआ था उसके बदलेमें उसने हर-जानेकी रीति पर गोलकुण्डा-नरेशसे बहुतसा द्रव्य प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त उससे इस बातकी प्रतिज्ञा कराई कि जिसमें मीर जुमलाको अपने कुटुम्ब और माल असबाबके सहित राज्यके बाहर हो जानेकी परवानगी दी जाय और भागनगर-राज्यके चांदीके सिक्कों पर शाहजहां बादशाहके शस्त्रकी छाप रहे। यह सब हो जानेके बाद राज्यकी बड़ी शाहजादीके साथ उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र सुलतान महमूद (मुहम्मद सुलतान?) का विवाह किया और बादशाहसे इस बात का वचन भी ले लिया कि उक्त शाहजादा ही अबसे गोलकुण्डा-राज्य का उत्तराधिकारी समझा जायगा। शाहजादीके साथ साथ यौतुकमें उसने रामगढ़का दुर्ग भी मय उसके सब सामानोंके ले लिया।

औरंगजेब और मीरजुमला बहुत दिनों तक एक साथ नहीं रहे तथापि उन दोनोंने साहसके बड़े बड़े काम किये। दौलताबादको लौटते समय रास्तेमें ही उन्होंने बीदरके दुर्गको जो बीजापुर-प्रदेशमें एक अत्यन्त दृढ़ स्थान है घेरकर जीत लिया। वहांसे दौलताबादमें आकर वे बड़े मित्रभावसे रहने लगे। इस बीचमें उन्होंने भविष्योन्नति के अनेक अच्छे अच्छे उपाय किये। औरंगजेब और मीरजुमलाकी मैत्री हिन्दुस्तानके इतिहासमें एक चिरस्मरणीय बात समझी जानेके योग्य है; कारण कि औरंगजेबको जो कुछ बड़प्पन प्रसिद्धि और

प्रतिष्ठा आदि मिली वह इसीके सम्बन्धसे मिली।

दौलताबाद पहुँचतेही मीरजुमलाने इस ढंगका पत्र-व्यवहार आरम्भ किया कि शाहजहां बादशाहकी ओरसे उसके लिये निमन्त्रण पर निमन्त्रण आने लगे। अन्तमें वह आगरेको गया और इस आशासे अपने साथ भेटमें देनेकी बहुतसी वस्तुएँ लेता गया कि जिसमें बादशाह उसके उभारनेमें आकर गोलकुण्डा और बीजापुर राज्यों तथा पुर्त्तगालोंके साथ युद्ध करने पर उद्यत हो। वह यही अवसर था जब कि उसने कोहेनूर नामक वह अद्वितीय हीरा बादशाहको उपहारमें दिया था जो अपनी सुन्दरता, बहुमूल्यता और बृहदाकारके लिये संसारभरमें प्रसिद्ध है। उसने बादशाहको समझाया कि कन्दहारके कंकड़ पत्थरोंकी अपेक्षा जहां आप चढ़ाई करने वाले हैं गोलकुण्डा-राज्य पर जिसकी खानोंसे बड़े बड़े बहुमूल्य रत्न निकलते हैं अधिकार कर लेनेसे अनेक लाभ हैं। उसने यह भी कहा कि आपको गोलकुण्डा-राज्यके प्रति अपनी सैनिक शक्ति उस समय तक बराबर काममें लाना चाहिये जबतक आप समस्त देश कन्याकुमारी तक अपने अधीन न करलें।

आश्चर्य नहीं कि मीरजुमलाकी बातोंने शाहजहांके चित्त पर बहुत असर किया हो और इसी कारण उसने उसकी राय पसन्द की हो, परन्तु बहुतोंका यह कथन है कि असलमें शाहजहांने दारा की बराबर बढ़ती ही जानेवाली उद्धता वा बेअदबीको रोकनेके लिये ही चढ़ाईके निमित्त एक नई सेना नियुक्त की और मीरजुमलाकी सम्मति मान ली।

अस्तु जो हो, कारण कुछ भी हो परन्तु बादशाहने इस बातका दृढ़ निश्चय कर लिया कि मीरजुमलाकी अध्यक्षतामें एक सेना

दक्षिणकी ओर अवश्य भेजी जाय।

दारासे शाहजहांके रुष्ट होनेका यह कारण था कि उसने अपनी सर्वोपरिता और गौरव बनानेके लिये छिपे प्रपंच रचनेके उद्योग किये थे बल्कि एक ऐसा काम किया था जिसके कारण शाहजहां उससे बहुतही घृणा और भय करने लगा था। उसके इस अपराध को वह क्षमा नहीं कर सकता था। दाराका वह अपराध यह था कि उसने वजीर सआदुल्लाखांको जिसे शाहजहां एशिया भर में एक प्रवीण और सुयोग्य मन्त्री समझता और जिससे वह इतना स्नेह रखता कि समस्त दरबारके लोग इस बातको खूब जानते मरवा डाला था। मालूम नहीं यह कौनसा अपराध था जिसके कारण दाराने वजीर सआदुल्लाको वध किये जानेके योग्य समझा। कदाचित् उसने यह समझा होगा कि बादशाहकी मृत्यु हो जानेपर अपनी शक्तिके कारण यह बात उसके अधिकारमें होगी कि वह जिसे चाहे उसे राज्यासन पर बिठादे अथवा बादशाहका ताज शुजाके सिर पर रख दे जिसका वह पक्षपाती जान पड़ता है। यह भी कहा जाता है कि सआदुल्लाखां हिन्दुस्तानी था अतएव दरबार के ईरानियोंको देखकर उसे ईर्षा होती थी। दाराके उसपर क्रुद्ध होनेका यह भी एक कारण हो सकता है, क्योंकि लोगोंने ऐसी गप उड़ा रखी थी कि बादशाहके देहान्तके पश्चात् वह मुगलोंके हाथसे गद्दीका अधिकार छीन लेनेको है। कुछ लोग कहते थे कि वजीर स्वयं अथवा अपने पुत्रको राज्यका अधिकारी बनाना चाहता है और कुछकी यह राय थी कि वह पठानोंको राज्यका स्वामी बनाने के विचारमें है। इस गपकी पुष्टिके लिये यह बात गढ़ी गई थी कि उसकी स्त्री पठानी है और अपने कामोंमें सहायता लेनेके लिये उसने

जुदे जुदे स्थानोंमें पठान सिपाहियोंकी सेनाएँ नियुक्त कर रक्खी हैं।

दारा भली भांति जानता था कि यह बड़ी सेना जो दक्षिणको भेजी जाती है औरंगजेबका बल बढ़ानेके लियेही जा रही है, अतएव उसने अनेक युक्ति प्रयुक्ति और वाद विवादसे जहांतक उससे बन सका बादशाहके इस विचारको रोकना चाहा, परन्तु जब उसने देखा कि इस विचारका रोकना किसी प्रकार सम्भव नहीं है तब उसने नीचे लिखे अनुसार शर्तें उपस्थित कीं—

१—यह कि औरंगजेब इन बातोंमें किसी प्रकार हस्तक्षेप न करे। २—कि वह दौलताबादसे बाहर न निकले। ३—यह कि उसे जिस प्रदेशका अधिकार प्रदान किया गया है वह उसीके प्रबन्धमें लगा रहे; इस युद्धसे उसका कोई सम्बन्ध न रहे। ४—यह कि सेना की अध्यक्षताका सम्पूर्ण अधिकार केवल मीरजुमलाकेही हाथमें रहे परन्तु वह अपने सब आत्मीय सम्बन्धियों और बालबच्चोंको अपनी विश्वस्तताके लिये शरीर-बन्धककी रीति पर देहलीमें छोड़ जाय।

यह पिछली बात यद्यपि मीरजुमलाको एकदम नापसन्द थी परन्तु शाहजहांने उसे यह समझा कर सन्तुष्ट कर लिया कि यह केवल दाराको प्रसन्न रखने और उसका सन्देह मिटानेके लियेही है; तुम्हारे बालबच्चे बहुत शीघ्र तुमसे जा मिलेंगे। निदान मीर-जुमलाने उस सुन्दर सेनाका अध्यक्ष बनकर दक्षिणकी ओर प्रस्थान किया और बिना कुछ विलम्ब किये वहांसे कूच करके वह बीजापुर प्रदेशमें पहुँच गया। यहां आतेही उसने कल्यानी नामक दुर्गको जो (बीदरसे ३० मील दक्षिणकी ओर) एक बहुतही दृढ़ स्थान है घेर लिया।

इस समय जब कि देशकी ऐसी दशा थी शाहजहांकी उमर सत्तर

वर्षके पार हो चुकी थी और वह ऐसी बीमारीमें फँस गया था जिसकी अवस्थाका वर्णन करना उचित नहीं है। इतनाही कहना बहुत होगा कि ऐसे वृद्धको ऐसे खटपटमें पड़ना कदापि योग्य नहीं था, वरन् बची हुई शारीरिक शक्तिको नष्ट न करके सावधानीके साथ उसकी रक्षा करना उचित था।

भाइयोंमें युद्ध—बादशाहकी इस बीमारीके कारण राज्य भरमें विशेष भय और घबराहट फैल गई। दाराने राज्यके प्रधान नगर देहली और आगरेमें बड़ी बड़ी सेनाएँ इकट्ठी कीं। बंगालेमें शुजाने भी ऐसीही तैयारियाँ आरम्भ कीं। उधर दक्षिण और गुजरातमें औरंगजेब तथा मुरादबख्शने भी समर-सज्जासे इस भाँति अपनेको सज्जित किया जिससे उनके विचार साफ प्रगट होते थे। चारों भाइयोंने हर ओरसे अपने मित्रों और सहायकोंको बुला बुलाकर एकत्रित किया, इधर उधर पत्र भेजे, बड़ी बड़ी प्रतिज्ञाएँ कीं और भाँति भाँतिकी युक्तियाँ और उपाय करने आरम्भ किये। यद्यपि दाराने उनमेंसे कुछ पत्र पकड़कर पिताको दिखाये, अपने भाइयों की खूब निन्दाकी और (उसकी बहन) बेगमसाहबने भी अवसर देखकर बहुत लगाव बुझाव किया, परन्तु बादशाहको दारापर जरा भी विश्वास नहीं हुआ, यहां तक कि उसकी ओरसे उसे इस बातका पूरा सन्देह था कि वह उसे विष दिलवानेकी चेष्टा कर रहा है और इस कारण वह खाने पीनेके समय बहुत सचेत और सावधान रहता था, बल्कि यह भी कहा जाता है कि उसने औरंगजेबसे भी कुछ पत्रव्यवहार किया था जिसका समाचार पा और क्रोधमें आकर दारा ने पिताको बहुत धमकाया भी था। इस बीचमें बादशाहकी बीमारी इतनी बढ़ी कि उसके मरनेकी खबर उड़ गई और सारे दरबारमें

उथल पुथल मच गया; आगरेके निवासियोंमें इतना भय समाया कि कई दिन तक बाजारोंमें हड़ताल रही; चारों राजकुमारोंने खुलेआम यह बात प्रगट कर दी कि अब केवल तलवार हमलोगोंकी इच्छाओं का निर्णय करेगी। वास्तवमें अब उनको उनके इस इरादेसे रोकना बहुतही कठिन था; क्योंकि जीतकी दशामें तो राज्य पानेकी आशा थी और हारकी अवस्थामें प्राणोंका नाश होना निश्चित था। अब केवल दोही बातें थीं; यातो मृत्यु या राज्यलाभ। जिस भांति शाहजहांने अपने भाइयोंके रक्तसे हाथ भरकर राज्यका अधिकार प्राप्त किया था उसी भांति इनको भी पूरा पूरा विश्वास था कि यदि हम भी अपनी आशाओंमें सफल न होंगे तो हमारे विजयी और शक्तिमान् शत्रु (भाई) दाहके मारे हमको भी अवश्य मरवा डालेंगे।

निदान सबसे पहले सुलतान शुजाने जिसने कुछ तो अपने प्रान्त के राजाओंको बर्बाद करके और कुछ और लोगोंको लूट खसोटके अपनेको विशेष धनवान् बना लिया था एक बड़ी सेना एकत्रित की और बड़ी शीघ्रताके साथ आगरेकी ओर वह चल खड़ा हुआ। शुजा को दरबारके ईरानी उमराका भी जिनका धर्म्म वह स्वयं मानता था बहुत कुछ भरोसा था। उसने यह बात प्रसिद्ध करदी कि ' चूंकि बादशाहको दाराशिकोहने जहर देकर मार डाला है इसलिये हम इस खूनेनाहक और हरकते नाशाइस्ताका बदला लेंगे और तख्ते-सल्तनत् पर जो खाली है जुलूस करेंगे। " यद्यपि शाहजहांने दाराके आग्रह से बहुत शीघ्र उस सम्बादका जो उसकी मृत्युके सम्बन्धमें फैल गया था खण्डन किया और स्पष्ट शब्दोंमें यह लिखकर कि दवासे मैं अच्छा होता जाता हूं उसे अपने प्रान्तको लौट जानेकी आज्ञा दी तथापि वह बराबर आगरेकी ओर बढ़ताही चला आया और यह

बहाना उसने कर दिया कि "मुझे बन्दगानेवालाकी सलामतीकी खबर पर यक़ीन नहीं आता और फिर्फ़ अगर वे जिन्दा और सलामत हैं तो कदम्बोसी हासिल करने और इर्शाद व अहकामसे सर्फराज होनेकी मुझे बड़ी तमन्ना है।"

इधर दक्षिणसे औरंगजेबने भी ऐसेही विज्ञापन प्रगट किये और अपनी सेनाको कूचकी आज्ञा दी। यह भी ठीक उसी समय आगरेकी ओर बढ़ा जिस समय शुजा बंगालेसे चला था। इसे भी दारा और शाहजहांकी ओरसे लौट आनेका आदेश हुआ जिसमें दाराने तो यहांतक लिख दिया कि "अगर तुम दक्खिनसे हटोगे तो सजा पाओगे।" परन्तु शुजाकी भांति इसने भी वही बहाना करके पत्रका उत्तर भेज दिया। औरंगजेबकी आय बहुत अधिक नहीं थी और सेना भी उसके अधीन औरोंकी अपेक्षा कम थी इसलिये जो काम सामरिक बलसे नहीं हो सकता था उसे उसने बुद्धिबलसे करनेका विचार किया। मुरादबख्श और मीरजुमला ही दो ऐसे व्यक्ति थे जो तुरन्त उसकी चालके जालमें फँस सकते थे। अतएव उसने मुरादको नीचे लिखे अनुसार एक पत्र भेजा,—

"प्यारे भाई, इस बातकी याद दिलानेकी कोई जरूरत नहीं कि उमूर सल्तनतकी मेहनत उठाना मेरे असली मिजाज और तबीयतके किसी कदर खिलाफ है। इस वक्त जब कि दारा और शुजा निहायत सरगर्मीसे हुसूले सल्तनतके लिये कोशिश और सई कर रहे हैं मैं सिर्फ फक़ीराना जिन्दगी बसर करनेमें मुतरद्दिद हूं। मगर, प्यारे अजीज, अगर्चे सल्तनतके हक हुकूक और दावोंसे मैं बिल्कुल दस्त-बरदार हूं ताहम इस राय और खयालसे आपको मुत्तिला करना वाजिब समझता हूं कि यही नहीं कि दाराशिकोह फरमाँरवाईके

अवसाफसे खाली है बल्कि ला-मजहब और काफिर होनेकी वजहसे बिल्कुल ताज व तख्तके काबिल नहीं। बड़े बड़े उमराए-सल्तनत और अरकाने दौलत सब उससे मुतनफ्फिर है। अलाहाजलकयास शुजा भी सल्तनतके काबिल नहीं; क्योंकि वह राफजी मजहब और हिन्दोस्तानका दुश्मन है। पस इस सूरतमें इस अजीमुश्शान सल्तनतकी फरमाँरवाईके लायक सिर्फ आपही हैं। यह सिर्फ मेरी ही राय नहीं है बल्कि पायए-तख्तके तमाम मशीर और अमीर जो आपकी बहादुरी के कायल हैं सब इसमें मुत्तफ्फिकुर-राय और हमजबान होकर दारुलखिलाफतमें आपकी रौनकबख्शीके मुन्तजिर हैं। मेरी बाबत तो यह तसव्वुर कर लीजिये कि अगर आपकी तरफसे मुस्तहकम तौर पर मुझे यह वादा मिल जायगा कि जब खुदाके फज्लसे आप बादशाह हो जावेंगे तो मुझे कोई खिलवतके मौकेका गोशए-आफियत बइत्मीनान खातिर इबादत-इलाही बजा लानेके लिये इनायत फर्मायेंगे तो बस इतनेहीसे मैं फौरन आपकी तरफदारीमें खिदमत बजा लानेको आमादा और तैयार हो जाऊंगा, और सलाह व मशविरेसे, अपने दोस्तों और रफीकोंसे, अपनी तमाम फौज आपके हुक्ममें कर देनेसे, गरज किसी किस्मकी मददसे मैं दरेग नहीं करूंगा। बिलफेल मैं आपकी खिदमतमें एक लाख रुपये भेजता हूं और उम्मीद करता हूँ कि आप इसको बतौर नजर कुबूल फर्मायेंगे जो कि मेरी खुशीका बायस होगा। हुनर-आजमाई और जवाँमर्दीका यही वक्त है; पस आप एक लमहा भी जाया न कीजिये, मौकेको गनीमत समझिये और जल्दीसे सूरतके किले पर जहां मुझे खूब मालूम है कि बेशुमार दौलत मदफून है कब्जा कर लीजिये।"

मुरादबख्श जिसकी आर्थिक और सामरिक अवस्था औरोंकी

अपेक्षा घटकर थी भाईकी इस प्रार्थनासे जिसके साथ इतने रुपये भी आये थे बहुत ही प्रसन्न और आशान्वित हुआ। उसने इस भरोसे पर वह पत्र बहुत लोगोंको दिखलाया कि जिसमें युवा पुरुष उसकी सेना में भरती होना चाहें और धनाढय महाजन जिनसे वह बलपूर्वक रुपये मांग लिया करता था उसे ऋण देनेमें आगा पीछा न करें। इस पत्रके आनेके बादसे मुराद लोगोंसे ऐसी ऐसी प्रतिज्ञाएँ करने लगा कि मानों वह स्वयं बादशाह हो और ऐसी युक्ति और विजयसे उसने काम लिया कि थोड़ेही समयमें उसके पास एक बहुत बड़ी और सुन्दर सेना एकत्रित हो गई। सेना एकत्रित कर लेनेके बाद सबसे पहले उसने यह काम किया कि शाहअब्बास नामक ख्वाजासराके अधीन जो एक बड़ा वीर योद्धा था उनमेंसे तीन सहस्र सिपाहियों को चुनकर सूरतका दुर्ग घेर लेनेके अभिप्रायसे उस ओर भेज दिया।

इधर इस ओरसे निबट कर औरंगजेबने मीरजुमलाकी ओर दृष्टि डाली। अपने ज्येष्ठ पुत्र महम्मद सुलतानको जिसका विवाह गोलकुण्डा-नरेशकी पुत्रीसे हुआ था उसने मीरजुमलाके पास भेजा और उसे इस आशयका एक पत्र लिखा कि एक बहुतही आवश्यक कार्य आ पड़ा है आप जरा आकर मुझसे मिल जाइये। परन्तु मीर-जुमला अपनी दूरदर्शितासे तुरन्त इस आवश्यक कार्यका मतलब समझ गया। उसने औरंगजेबके पत्रके उत्तरमें लिखा—"कल्यानीका मुहासरा छोड़ और फौजसे अलहदा होकर मेरा दौलताबाद आना नहीं हो सकता। अलावाअर्जी आप यकीन फर्मायें कि मैंने आगरेसे अभी इस मजमूनकी ताजा खबर पाई है कि शाहजहाँ हनोज जिन्दा है। इसके सिवा यह बात है कि जबतक मेरे अहलो अयाल दारा-शिकोहके काबूमें हैं तबतक मैं आपके साथ शरीक नहीं हो सकता,

बल्कि मेरा असल मन्शा तो यह है कि मैं इस हंगामेमें किसीका भी तरफदार न बनूँ।"

इच्छानुसार कार्य न होते देख मुहम्मद सुलतान मीरजुमलासे बहुत रुष्ट होकर दौलताबाद लौट आया; परन्तु औरंगजेब इस बात से निराश नहीं हुआ; उसने अपने छोटे पुत्र सुलतान मुअज्जमको फिर उसके निकट भेजा। इसने ऐसी चपलता और सुजनतासे काम लिया कि मीरजुमला किसी प्रकार इसकी बात नहीं टाल सका, बल्कि उसने ऐसी चतुराई की जिससे लाचार होकर किलेके रक्षकों को उसे खाली कर शरणमें आही जाना पड़ा। इसके बाद अपनी सेनामेंसे चुने हुए मनुष्योंको लेकर वह बहुत शीघ्रताके साथ दौलताबादकी ओर बढ़ा।

जिस समय मीरजुमला दौलताबाद पहुँचा उस समय औरंगजेब ने "बाबा" और "बाबाजी" कहकर बड़ी प्रीति और आदरसे उसका स्वागत किया। फिर सैकड़ों बार उसके गले मिल अलग ले जाकर उससे कहा—"मुझे बखूबी मालूम है कि आपने जो सुलतान मुहम्मदसे इनकार किया था वह मजबूरीके बायससे था और बेशक मेरे सब दूरन्देश अहले-दरबारकी भी यही राय है कि जब तक आपके बालबच्चे दाराशिकोहके काबूमें हैं तबतक आपको जाहिरा कोई ऐसी हरकत हरगिज न करना चाहिए जो हमारे हकमें मुफीद नजर आती हो। लेकिन आप जैसे आकिल शख्सको इस बातके समझानेकी कोई जरूरत नहीं कि दुनियामें हर मुश्किल काम की आखिर एक तदबीर होती है। चुनाँचे एक मन्सूबा मेरे खयाल में गुजरा है जिससे बजाहिर गोकि आप हैरान होंगे मगर जब उसके मसेलो-फराज पर बखूबी गौर करेंगे तो बेशुबहा आपके

अहलो-अयालकी सलामतीके लिये वह एक यकीनी जरिया हो जायगा । वह मन्सूवा यह है कि आप बजाहिर कैद हो जाना मञ्जूर करलें । इससे तमाम जहानको मेरी आपकी दुश्मनीका यकीन कामिल हो जायगा और इस हिकमतसे हमलोग अपनी तमाम ख्वाहिशोंमें कामयाब हो सकेंगे; क्योंकि किसी शख्सको हरगिज ऐसा गुमान नहीं होगा कि आप जैसे रुतबेका कोई आदमी इस तरह अपनी खुशीसे कैद हो गया । इसके साथही मैं आपकी फौज का एक हिस्सा जिस वजा और हैसियतसे आपको पसन्द और मुनासिब मालूम होगा नौकर रख लूंगा । मुझे यह भी यकीन है कि जिस तरह पहले आप बारहा मुझसे वादा करते रहे हैं इस वक्त कुछ रुपये देनेसे भी इनकार नहीं करेंगे; क्योंकि मुझे रुपयोंकी बड़ी जरूरत है और आपके इन रुपये और लश्करसे मैं अपनी किस्मत-आजमाई करूंगा । इसलिये अगर इजाजत होतो मैं आपको इसी वक्त दौलताबादके किलेमें पहुँचा दूं । उस जगह मेरा एक बेटा आपका निगराने-हाल रहेगा । बाद इसके हम दोनों इस मुहिम की दुरुस्तीकी तदबीरोंकी निस्बत बाहम गौर व फिक्र कर सकेंगे । इस सूरतमें हरगिज मेरे खयाल और कयासमें नहीं आता कि दारा-शिकोहके दिलमें कोई शुबहा पैदा होगा और वह ऐसे शख्सके बालबच्चोंके साथ बदसलूकी करेगा जो बजाहिर मेरा इस कदर दुश्मन हो ।"

मैं विश्वासके साथ कह सकता हूं कि मीरजुमलासे बातें करते समय औरंगजेबने ऐसीही नम्रताका प्रयोग किया था । इस विचित्र योजनाके उत्तरमें उसने क्या कहा यह तो मुझे नहीं मालूम, परन्तु हां इसमें सन्देह नहीं कि उसने औरंगजेबकी प्रार्थना मानली और

अपना लश्कर उसके अधीन कर देने तथा धनसे सहायता करने और साथही दौलताबादके किलेमें कैद हो जाने पर भी वह राजी हो गया जोकि एक बड़े आश्चर्यकी बात है! कुछ लोग यह कहते हैं कि औरंगजेबने मीरजुमलाको समझा बुझाकर सचमुच इस बातका विश्वास करा दिया था कि आपके प्रसन्नता-पूर्वक कैद हो जानेसे बहुत लाभ होंगे और मीरजुमला भी उसकी पुरानी मैत्री और सहायताका स्मरण कर वास्तवमें कैद हो जाने पर राजी हो गया था। औरोंका जिनकी बात अधिक सकारण मालूम होती है यह कथन है कि उसने केवल भयभीत होकर इस प्रार्थनाको स्वीकार कर लिया था; क्योंकि कहते हैं कि इस साक्षात्कार और बातचीतके समय औरंगजेबके दो युवा पुत्र (एक सुलतान मुअज्जम, दूसरा मुहम्मद सुलतान) उसके सिर पर खड़े थे और यद्यपि सुलतान मुअज्जम का अस्त्र शस्त्रसे सुसज्जित होना स्पष्ट बतला रहा था कि यदि उसने प्रार्थना अस्वीकार की तो बहुतही बुरा परिणाम होगा परन्तु मुहम्मद सुलतान तो सचमुच तलवार लिये मूछोंपर इस भाँति ताव दे रहा था कि मानो अब वह उसे मारही डालना चाहता है। सुलतान मुहम्मदके इतना क्रोध प्रकाश करनेका इसके सिवा दूसरा कोई कारण नहीं था कि मीरजुमलाकी ओरसे उसका पहलेसे अपमान हो चुका था, क्योंकि उसका छोटा भाई उसे औरंगजेबके पास तक ले आनेमें कृतकार्य हुआ था और वह स्वयं नहीं। अतएव उसे अपने क्रोध और दुःखके छिपानेकी कुछ भी चिन्ता नहीं थी।

निदान जब मीरजुमलाके कैद होनेका सम्वाद चारों ओर प्रसिद्ध हो गया तब उसकी सेनाके उस भागने जो बीजापुरसे उसके साथ आया था सबल शब्दोंमें कहा कि 'हमारे सरदारको छोड़ दो नहीं

तो हम बलपूर्वक उसे छुड़ा ले जायँगे।' वास्तवमें यदि औरंगजेब अपनी चतुराईसे उस समय तुरन्त उनका सन्तोष न कर देता तो वे अवश्य मीरजुमलाको निकाल ले जाते। औरंगजेबने यह किया कि उस सेनाके बड़े बड़े सरदारोंको तो यह समझाकर अपना मित्र बना लिया और शान्त कर दिया कि मीरजुमला अपनी इच्छा और प्रसन्नतासे कैद (नजरबन्द) हुआ है और यह भी कहा कि यह एक चाल है जो असलमें मेरी और उसकी सलाहसे की गई है; और सैनिकोंको खूब जी खोल कर इनाम देकर अपने वशमें किया। तात्पर्य यह कि उसने सरदारोंको तो भविष्योन्नतिकी बहुतसी प्रतिज्ञाएँ करके और साधारण सिपाहियोंको उनका वेतन बढ़ाके तथा तीन महीनेका (वेतन) पेशगी देके अपना पक्षपाती बनाया।

सूरतमें लूट—इस उपायसे जो सैनिक अबतक मीरजुमलाके हाथमें थे वे औरंगजेबकी नीति-कुशलतासे उसकी सेनामें आ मिले। उसने समझ लिया कि अब सब काम अच्छी तरहसे हो जायँगे। अतएव सबसे पहले उसने सूरतकी ओर कूच किया, क्योंकि किलेवाले जैसा कि अनुमान किया गया था अभी तक मुराद-बख्शकी सेनासे अधीन नहीं किये जा सके थे और उसकी इच्छा यह थी कि बहुत शीघ्र यह किला ले लिया जाय। परन्तु उसके सूरतकी ओर चल पड़नेके कुछही दिन बाद उसे समाचार मिला कि मुरादने सूरतके दुर्ग पर अधिकार कर लिया। यह समाचार सुनतेही उसने अपने विजयी भाईके पास बधाई और धन्यवाद-सूचक एक पत्र भेजा जिसमें उसने इस बीचमें मीरजुमला और उसके सम्बन्धमें जो बातें हुई थी उन सबको भी लिख दिया। उस पत्रमें अपने विषयमें उसने लिखा—"मैं एक बड़ी फौजकी

सरदारीमें हूं और दौलत भी मैंने बेशुमार इकट्ठी करली है। बड़े बड़े उमराए-दरबारेशाहीसे मुझसे पुख्ता बातें हो चुकी हैं और अब बुरहानपुर व आगरेकी तरफ बढ़नेमें मेरी तरफसे कुछ भी देर नहीं है। पस आपसे भी इल्तिजा करता हूं कि आप भी कूचमें देर न कीजिये और दोनों लश्करोंके मिल जानेके लिये कोई जगह करार देकर जल्द मुझे खबर कीजिये।"

सूरतके दुर्गमें आशाके विपरीत बहुत थोड़ा खजाना मिलनेसे मुराद बहुत निराश हुआ। इस कमीका कारण यातो यह था कि लोगोंने केवल झूठ ही यह बात प्रसिद्ध कर दी थी कि वहां बहुत धन है अथवा यह हो सकता है जैसा कि बहुतोंको सन्देह था कि दुर्गके हाकिमने स्वयं बहुतसा द्रव्य चुपचाप उड़ा लिया था। अस्तु, वहांसे जो रुपये मुरादबख्शके हाथ लगे वे इतनेही थे कि उनसे केवल उन सैनिकोंका वेतन दिया जा सका जो यह लालच देकर नौकर रख लिये गये थे कि सूरतकी लूटमें बहुत धन प्राप्त होगा। इस दुर्गका घिराव करने और उसके जीतनेमें मुरादकी कोई समर-कुशलता भी नहीं प्रगट हुई, क्योंकि यद्यपि वह (दुर्ग) जैसा कि चाहिये युद्धके सब सामानोंसे सुसज्जित नहीं था तौभी उसके पानेमें मुरादको बहुत परिश्रम और यत्न करने पर भी एक महीनेसे अधिक समय लग गया और जबतक कि डच जातिके ईसाईयोंने (जो उसकी सेनामें थे) सुरंग लगानेकी युक्ति उसे नहीं सिखलाई तबतक घिराव आदिसे कुछ भी लाभ नहीं हुआ। डचोंकी पहलेही पहल * सिखाई हुई युक्तिसे दुर्गकी दीवारका एक बड़ा भाग उड़

* यह बात ठीक नहीं है, क्योंकि इस घटनासे २६—२७ वर्ष पहलेही शाहजहांके सरदारगण सुरंग उड़ाकर हुगलीमें पुर्तगालों पर विजय प्राप्त कर चुके थे। देखिये उर्दूका इतिहास بادشاه نامه (बादशाहनामा)— गं० प्र० गुप्त।

गया, जिससे उसके भीतरके लोगोंमें बड़ी व्याकुलता फैल गई और कुछ शर्तें उपस्थित कर वे शरणमें आगये।

सूरतके दुर्गपर अधिकार हो जानेसे मुरादबख्शको भविष्यमें करनेवाले कामोंके लिये बहुत सुगमता हो गई। इस जीतसे उसका बड़ा नाम हुआ और यहांके लोग सुरंग लगानेकी रीति भली भाँति नहीं जानते थे इसलिये उसकी इस युक्तिने लोगोंके चित्तपर बहुत ही विचित्र असर डाला। इसके सिवा यह बात भी सर्वसाधारणमें मशहूर हो गई कि सूरतसे मुरादबख्शको बहुत धन प्राप्त हुआ है। परन्तु इस जीतके कारण इतनी प्रशंसा और प्रसिद्धि होनेपर भी तथा औरंगजेबकी ओरसे बहुतसे स्तुति-वचनोंसे भरे प्रतिज्ञा-सूचक पत्रोंके आते रहने पर भी शाहअब्बास ख्वाजा मुरादबख्शको बराबर ऐसाही समझाता रहा कि आप अपने भाईकी व्यर्थ बातोंपर भरोसा और विश्वास करके कदापि अपनेको उसके हाथोंमें न फँसावे। यह ख्वाजा मुरादका बड़ा शुभचिन्तक था। एक दिन उसने स्पष्ट वाक्यों में उससे कहा—"आप अब भी मेरी सलाह मानलें, और अगर आपकी ऐसीही मरजी है तो औरंगजेबको चिकनी चुपड़ी बातोंमें फुसलाये रखें; लेकिन फौज और लश्कर लेकर उससे शामिल हो जानेका इरादा हरगिज न फरमाएँ। बिलफैल आगरेकी तरफ उसे अकेलाही जाने दें। रफ्ता रफ्ता जब हमको बादशाहकी सेहत और मर्जकी पुख्ता खबर और सहीह हालात मालूम हो जावेंगे तब उस वक्त जैसा मुनासिब मालूम होगा वैसा किया जायगा। इस अर्से में आप सूरतके किलेको जो इस तरफमें सबसे ज्यादा कारआमद मुकाम है खूब मुस्तहकम बना लें। इस जगहके काबूमें कर लेनेसे एक वसीह और जरखेज मुल्ककी हुकूमत आपके हाथ आ जायगी।

और फिर थोड़ीसी तदबीरसे शहर बुरहानपुर भी जो सूबे दक्खिन का दरवाजा और निहायत कारआमद मुकाम है आपके कब्जेमें आ जायगा।"

मुराद और औरंगजेब-इधर औरंगजेबकी ओरसे मुराद बख्शके पास बराबर यही पत्र आते रहे कि तुम अपने काममें सुस्ती न करना; अतएव बुद्धिमान् और स्वामिभक्त शाहअब्बास ख्वाजाकी शिक्षा एकबारही अस्वीकृत हुई। यह ख्वाजा दृढ़ राजनीतिज्ञ, उत्साही और मायालु स्वभावका मनुष्य था और स्वभावसेही इसे मुरादसे प्रीति थी। अच्छा होता यदि मुराद भी अपने इस समझदार मित्रकी बातें मान लेता; परन्तु वह तो राज्यलाभमें अन्धा हो रहा था, तिसपर उसके कुटिल भाईके प्रतिदिन इस आशयके आग्रहपूर्ण पत्र आते रहे कि मैं तुम्हारे कामोंमें बहुत अनुरक्त हूं। मुरादने सोचा कि वह काम जिसमें बादशाही और राज्य मिलजानेकी आशा है अकेले नहीं हो सकेगा। अतएव अहमदाबादसे जहां वह डेरे डाले पड़ा था उसने कूच कर दिया और गुजरातसे चलकर पहाड़ों और जंगलोंका सीधा मार्ग अवलम्बन किया, जिसमें कि जल्दीसे वह उस जगह पहुँच जाय जहां औरंगजेब कुछ दिन पहलेही आकर उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

निदान जब दोनों सेनाएँ मिल गईं तो बड़ा उत्सव और आनन्द मनाया गया। दोनों भाई एक दूसरेसे मिले और औरंगजेबने अपना अत्यन्त स्नेही और एकदम स्वार्थ-रहित होना नये सिरेसे जताया। उसने कहा—"भाई, बादशाही और सल्तनतकी मुझे जरा भी हवस नहीं है। यह फौजकशी मैंने सिर्फ इसवास्ते की है कि जिस तरह बन पड़े दाराशिकोहसे जो मेरा और आपका मशहूर जानी दुश्मन

है लड़ भिड़कर आपको तख्ते-सल्तनत पर जो खाली पड़ा है बिठा दूं।" राजधानीकी ओर बढ़ते समय रास्तेभर औरंगजेब ऐसाही कहता गया। इस बीचमें क्या अकेलेमें क्या सबके सामने वह मुरादको "हजरत" और "जहाँपनाह" आदि कहकर उसी प्रकार सम्बोधन करता रहा जैसे प्रजा अपने राजाके प्रति करती हो। आश्चर्य है कि मुरादने उसके कपट-वचनोंपर जरा भी सन्देह नहीं किया, न यह सोचा कि हालहीमें वह गोलकुण्डा-नरेशके साथ ऐसीही युक्ति और अविश्वासका बरताव कर चुका है। बात यह है कि मुराद राज्य-लोलुपताके कारण ऐसा अन्धा हो रहा था और उसकी बुद्धिपर ऐसा पर्दा पड़ गया था कि इतनी मोटी बात भी उसकी समझमें नहीं आई कि जो व्यक्ति कल इतनी बेईमानीके साथ एक राज्यके छीन लेनेके लिये उद्योग कर चुका है आज कैसे सम्भव है कि उसके विचार ऐसे बदल गये कि फकीरोंकी भाँति जीवन-निर्वाह करनेके सिवा उसके मनमें किसी और बातकी अभिलाषा हैही नहीं!

दोनों सेनाएँ मिलकर बहुत बड़ी हो गईं और उनके आनेकी खबर पहुँचतेही राजधानीमें बड़ी हलचल मच गई। दाराकी घबराहटका ठिकाना नहीं रहा और शाहजहाँ भी परिणाम सोचकर डर गया। इस घटनाके भावी परिणामके विषयमें उसने कुछ भी क्यों न सोचा हो परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि वह इस बातको भली भांति जानता था कि औरंगजेबकी योग्यता बुद्धिमत्ता और मुरादकी शूरताके एकत्रित हो जानेसे ऐसा कोई कार्य नहीं जो असम्भव जान पड़े। यद्यपि शाहजहांने यह सम्वाद पहुँचानेके लिये आदमी पर आदमी भेजे कि अब हम बहुत अच्छी तरहसे है और यदि

लोग अपने अपने प्रान्तको लौट जाओगे तो तुम्हारी इस अनुचित कारवाई पर ध्यान नहीं दिया जायगा, परन्तु उसकी सब लिखावट और आज्ञा व्यर्थ हुई। दोनों सेनाएँ बराबर बढ़तीही चली आईं और इस कारण कि बादशाहकी बीमारी वास्तवमें असाध्य समझी जाती थी ये लोग निरन्तर ऐसेही बहाने करते और जवाब लिखते रहे कि जो पत्रादिक बादशाही मुहर लगकर आते हैं वे जाली और बिल्कुल दाराकी बनावट हैं और शाहन्शाह यातो मर चुके या मरनाही चाहते हैं और यदि मान लिया जाय कि हमारे सौभाग्यसे अभीतक वे जीते जागते हैं तो हम उनके चरणोंकी रज अपने शिर पर चढ़ाकर कृतार्थ होंगे और दाराने जो उनको एकबारही अपने अधीन कर रखा है उससे भी उनका छुटकारा करेंगे।

इन दिनों शाहजहांकी दशा सचमुच बहुत दुःखसे भरी थी। रोगग्रस्त होनेके सिवा वह वास्तवमें दाराके पञ्जेमें फँस गया था। इधर तो दाराशिकोहके हृदयमें क्रोधकी आग भड़क रही थी और लड़ाईके अतिरिक्त जिसकी वह बड़े यत्नसे तैयारी कर रहा था कोई दूसरी बात उसे सूझती ही नहीं थी उधर उसके दूसरे भाई पिताके आज्ञापत्रोंकी जो निरन्तर आते थे कुछ भी परवा न करके बराबर आगरेकी ओर बढ़ेही चले आते थे। एक ओर बादशाहको इस बातकी भी चिन्ता थी कि यदि उसका एकत्रित धन इन नवयुवक शाहजादोंके हाथ लग जायगा तो वे न जाने किस किस तरह उसको उड़ाकर नष्ट भ्रष्ट कर देंगे। निदान जब उस वृद्ध बादशाहको कोई दूसरा उपाय न रहा तब लाचार होकर उसने अपने स्वामिभक्त वीर योद्धाओं तथा बलवान् सरदारोंको अपने पास बुलवाया। यद्यपि ये सरदार और योद्धे प्रायः दाराके विरुद्ध थे और बादशाहको भी

दाराकी अपेक्षा अपने तीनों चढ़ाई करनेवाले पुत्रोंसे अधिक प्रीति थी तौभी उसने अपने कामोंको ठीक करनेके लिये उन्हीं अमीरोंको (जो दाराके विपक्षी थे) अपने बाकी तीनों पुत्रोंकी चढ़ाई रोकनेके लिये भेजना उचित और आवश्यक समझा। जिस ओरसे सुलतान शुजा बढ़ा चला आता था उस ओरकी अधिक चिन्ता थी, अतएव एक सेना तुरन्त उसको रोकनेके लिये उस ओर भेजी गई और दूसरी सेना इस मतलबसे इकट्ठी की गई कि जिसमें वह औरंगजेब और मुरादबख्शकी युक्त सेनाओंसे युद्ध करनेको तैयार रहे।

शुजा और सुलेमानशिकोह—दाराका ज्येष्ठ पुत्र सुलेमान शिकोह उस सेनाका नायक नियुक्त किया गया जो शुजाके बराबर बढ़तेही आनेवाले सैनिकोंके रोकनेको भेजी गई। इस नवयुवककी उमर २५ वर्षकी थी और यह अत्यन्त रूपवान्, शक्तिशाली उदार और प्रसिद्ध पुरुष था। बादशाहने इसको बहुत धन दिया था और उसकी ऐसी इच्छा थी कि यदि दाराकी अपेक्षा मेरे पश्चात् यह देहलीके राजासन पर बैठे तो अधिक उत्तम बात हो। शाहजहां का असल मतलब यह था कि इस अस्वाभाविक झगड़ेमें रक्तके छींटे न उड़ें और अपने पौत्रसे उसे बहुत प्रीति थी अतएव उसने मन्त्री और उपदेशककी भाँति वृद्ध राजा जयसिंहको उसके साथ कर दिया। राजा जयसिंह इस समय भारतवर्षके राजाओंमें सबसे अधिक धनवान् श्रेष्ठ और योग्य पुरुष समझे जाते थे। शाहजहांने यह बात भली भाँति उनको समझा दी कि जहांतक बने लड़ाई न होने पावे और शुजाको उसके प्रान्तको लौट जानेके लिये बाध्य करनेमें कोई बात उठा न रखी जाय। इसके अतिरिक्त अलग लेजाकर उसने उनसे कहा—"आप शुजासे कह दीजियेगा कि शाही हुक्मके

मुआफिक वापस चले जाना सिर्फ तुम्हारा फर्ज ही नहीं है बल्कि फने हुकूमत और सल्तनतकी रूसे भी यह निहायत जरूरी है कि तुम इस तौर पर अपना जोर और ताकत न दिखलाओ, इसलिये जब तक कि एक मुनासिब मौका इस कामके लिये न आ जाय, यानी तावक्ते कि हमारी बीमारी लाइलाज न साबित हो या औरंगजेब और मुरादबख्शकी शामिल फौजोंका कोई नतीजा न मालूम हो जाय, ऐसी जल्दबाजी तुम्हारे लिये मस्लहत नहीं है।"

जयसिंहने लड़ाई न होने देनेके लिये अनेक यत्न किये परन्तु सब विफल हुए; क्योंकि एक ओर तो सुलेमान शिकोह नाम पानेके लोभमें युद्धकी सामग्रियोंसे सुसज्जित तैयार था और दूसरी ओर शुजाको यह चिन्ता थी कि यदि मैं कूचमें देर करूंगा तो सम्भव है कि अवसर पा औरंगजेब दाराको हराकर आगरा और देहली अपने अधिकारमें करले। अतएव ज्योंही कि दोनों सेनाओंका एक दूसरेसे सामना हुआ त्योंही दोनों ओरसे दनादन गोलोंकी मार आरम्भ हो गई। इस युद्धका सविस्तर वर्णन लिखकर मैं अपने पाठकोंका समय नष्ट नहीं करना चाहता, क्योंकि आगे चलकर इससे भी आवश्यक बातें लिखनी हैं, अतएव इतना ही कहना बहुत होगा कि प्रारम्भमें दोनों ओर बड़ा जोश था किन्तु घोर युद्ध होनेके पश्चात् शुजाको रास्ता खाली कर देना और अन्तमें मारे घबराहटके भाग जाना पड़ा। इस बातका निश्चय है कि यदि राजा जयसिंह अपने मित्र दिलेरखांके सहित जान बूझकर पीछे न हटे रहते तो दूसरी ओरकी सेना एकदम नष्ट हो जाती बल्कि शुजा भी कैद कर लिया जाता; परन्तु उन्होंने राजकुटुम्बके कुमार और अपने स्वामीके पुत्र पर हाथ डालना उचित नहीं समझा। यह भी है कि उन्होंने बादशाह

की सलाहके अनुसार शुजाको भाग जानेका अवसर दे दिया। इस हारमें यद्यपि शुजाकी कुछ अधिक हानि नहीं हुई तोभी जीत होने के कारण उसकी कई तोपें सुलेमान शिकोहके हाथ आ गई और सर्वसाधारणमें यह बात प्रसिद्ध हो गई कि शुजा हार गया। तात्पर्य यह कि इससे सुलेमानशिकोहकी बहुत प्रशंसा और शुजाकी बड़ी बदनामी हुई और दरबारके उन ईरानी सरदारोंका उत्साह भी जो शुजाका बड़े पक्षपाती थे धीरे धीरे ठंडा पड़ गया।

सुलेमान शिकोह अभी शुजाके पीछे कुछ कुछ लगाही था कि इतनेमें समाचार मिला कि औरंगजेब और मुरादबख्श बड़ी शीघ्रता और मुस्तैदीसे आगरेकी ओर बढ़ रहे हैं। सुलेमान शिकोह जानता था कि उसके पिताकी बुद्धि कितनी है और उसे यह भी मालूम था कि वह छिपे शत्रुओंके द्वारा चारों ओरसे घिरा हुआ है, अतएव बड़ी समझदारीसे उसने आगरेकी ओर लौट आनेका निश्चय किया जिसके आसपास दाराके अपने भाइयोंके साथ युद्ध करनेकी सम्भावना थी। सबकी यही सम्मति है कि सुलेमान शिकोहका यह विचार बुद्धमानी और समझदारीका विचार था और यदि वह अपनी सेना समेत समयपर आगरेमें पहुँच गया होता तो औरंगजेब इतनी बड़ी सेनापर कभी विजय न प्राप्त कर सकता वरन् सामना करने का भी साहस न करता।

औरंगजेबकी सवारी—इधर इलाहाबादमें (जहां गंगा और यमुना परस्पर मिली हैं) सुलेमान शिकोहके सैनिकोंने सफलता प्राप्त की परन्तु उधर आगरेका कुछ और ही दृश्य था। अर्थात् आगरे में यह सम्बाद पहुँचतेही—कि औरंगजेब बुरहानपुरकी पासवाली नदीके पार उतर आया है और उन दुर्गम पर्वतोंकी घाटियोंको भी

ते कर चुका है जिनसे बचावका बहुत कुछ भरोसा था—दरबारमें बड़ी घबराहट और हैरानी फैल गई और सेनाकी तैयारी आरम्भ कर दी गई। बिना कुछ विलम्ब किये सैनिकोंका एक दल इस मतलबसे उज्जैनकी ओर भेजा गया कि जिसमें वह तुरन्त वहां पहुंचकर नदीका घाट रोकले और शत्रुओंको पार न उतरने दे। इस छोटी सेनाकी सरदारीके लिये दो महानुभाव जो बुद्धिमान् और श्रेष्ठ पुरुष थे चुने गये। एकका नाम कासिमखां था जो एक प्रसिद्ध वीर तथा साहसी योद्धा होनेके सिवा शाहजहांका सच्चा शुभचिन्तक था। परन्तु वह दारासे सन्तुष्ट नहीं था, अतएव सेनापति होना उसने प्रसन्नता-पूर्वक नहीं किन्तु केवल इस विचारसे स्वीकार किया कि जिसमें शाहजहांकी आज्ञाका उल्लंघन न हो। दूसरे सरदार राजा यशवन्तसिंह थे जो श्रेष्ठता और प्रतिष्ठामें राजा जयसिंहसे किसी प्रकार कम नहीं थे। राजा यशवन्तसिंह (उदयपुरके) उस सुप्रसिद्ध वीर राजराणाके दामाद थे जो अकबरके समयमें सब राजाओंका अधिराज समझा जाता था।

दाराने इन दोनों सेनापतियोंसे बड़ी नम्रता और शिष्टताके साथ बातें कीं और जब वे जाने लगे तो उस समय उसने उनको बहुतसी बहुमूल्य वस्तुएँ भी भेटमें दीं; परन्तु शाहजहांने शुजाके विरुद्ध राजा जयसिंह और दिलेरखांको भेजते समय जो शिक्षा उनको दी थी वैसेही सावधानीसे काम करनेको इनसे भी कहा; जिसका यह परिणाम हुआ कि जासूस पर जासूस औरंगजेबके पास यह कहकर भेजे गये कि आपको अपने प्रदेशकी ओर लौट जाना चाहिये परन्तु जब इधर अभी युद्धके विषयमें सन्देह ही सन्देह था तब औरंगजेब बड़ी दृढ़ता और फुर्तीके साथ लड़ाईकी तैयारियाँ करनेमें लिप्त था।

जो जासूस यशवन्तसिंह आदिकी ओरसे भेजे जाते थे वे लौटकर नहीं आते थे । योंही करते करते सहसा औरंगजेबकी सेना एक ऊंचे टीले पर जो (क्षिप्रा) नदीसे कुछ अन्तर पर है दिखाई दी ।

गर्मीकी ऋतु थी और मारे उत्तापके नदीका जल इतना सूख गया था कि वह सहजमें पार की जा सकती थी. अतएव कासिमखां और राजा साहबने यह सोचकर कि औरंगजेब पार उतरना चाहता है लड़ाईकी तैयारी आरम्भ कर दी । परन्तु वास्तवमें औरंगजेबकी पूरी सेना अभी पीछे थी । इन थोड़ेसे सिपाहियोंको आगे भेज देना एक बिल्कुल धोखा था । कारण यह कि औरंगजेबको इस बातका भय था कि कहीं बादशाही सेना नदीके पार न उतर आवे और हमारा मार्ग रोक कर हमारे थके माँदे सैनिकों पर आक्रमण न करदे । औरंगजेबका ऐसा सोचना उचित था क्योंकि उस समय उसके सैनिक सचमुच लड़ने योग्य नहीं थे और यदि कासिमखां और राजा साहब इस अवसर पर आक्रमण कर देते तो अवश्य उन्हींकी जीत होती । इस लड़ाईके समय मैं स्वयं उपस्थित नहीं था, परन्तु जिन लोगोंने इसका दृश्य अपनी आंखोंसे देखा है वे,विशेषकर औरंगजेबके तोपखानेके फ्रेञ्च लोग,इस युद्धके विषयमें ऐसाही वर्णन करते हैं । परन्तु कासिमखां तथा राजा साहब ऐसा किस तरह करते—क्योंकि उनको तो बादशाहकी गुप्त आज्ञाके कारण केवल इतनाही करने का अधिकार था कि नदीके इस पार उपस्थित रहें और यदि औरंगजेब इधर आना चाहे तो उसे रोकें ।

यशवन्तसिंहकी वीरता—जब औरंगजेबके सैनिकोंने दो तीन दिनतक विश्राम कर लिया तब उसने बलपूर्वक उनको नदी पार उतारनेका प्रबन्ध किया । पहले तो उसने अपना तोपखाना

एक ऊँचे स्थानमें रखा; फिर सैनिकोंको गोले दागते हुए आगे बढ़ने की आज्ञा दी। इनको रोकनेके लिये दूसरी ओरसे भी तोपें चलना आरम्भ हुई। प्रारम्भमें घोर संग्राम हुआ। राजा यशवन्तसिंहने बड़ीही वीरता और युक्तिसे शत्रुओंको पद पदपर रोका; परन्तु कासिम खांने—यद्यपि उसके एक वीर योद्धा होनेमें किसीको कुछ सन्देह नहीं—तथापि इस अवसर पर न तो कुछ वीरताही दिखाई न कुछ सामरिक युक्तिही प्रगट की। वरन् उसपर यह सन्देह किया जाता है कि इस अवसर पर उसने विश्वासघातकता की और लड़ाईसे पहलेही रातके समय अपनी ओरकी सब गोली बारूत रेतमें छिपा दी जिसका यह परिणाम हुआ कि लड़ाईके समय कई बार दागनेके बाद इधरकी सेनाके पास इस प्रकारका कोई सामान न रहा। अस्तु कुछ भी हो, परन्तु युद्ध घमसान हुआ और घाटके रोकनेमें सैनिकोंने बड़ी वीरता दिखाई। उधर औरंगजेबकी यह दशा हुई कि बड़े बड़े पत्थरोंके कारण जो नदीके पाटमें थे उसको बहुत कष्ट हुआ और किनारोंकी असाधारण ऊँचाईके सबबसे ऊपर चढ़ना बहुत दुस्तर जान पड़ा; तथापि मुरादबख्शके साहसने इन सब कठिनाइयोंको दूर कर दिया। अपनी सेनाके साथ वह पार उतर आया और पीछेसे बाकी सैनिक भी बहुत शीघ्र आ पहुंचे। इस समय कासिमखां यशवन्तसिंहको घोर संकटमें छोड़कर बड़ी अप्रतिष्ठाके साथ लड़ाईके मैदानसे भाग निकला। अब यद्यपि इस वीर राजा पर चारों ओरसे शत्रुसैन्य टूट पड़ा परन्तु उसके साहसी राजपूत साथियोंने अपने प्राणोंका संहार करके उसे बचा लिया। लड़ाईके आरम्भमें इनकी संख्या आठ साहस्र थी जिनमेंसे इस भयंकर खूनखराबीके पश्चात् केवल ६०० वीर जीवित बचे। इस घटनाके

बाद आगरे जाना उचित न जानकर इन बचे खुचे स्वामि भक्त सैनिकोंको अपने साथ लिये हुए राजा यशवन्तसिंह सीधे अपने राज्यकी ओर चले गये।

राजपूत--राजपूत शब्दका अर्थ है राजाका पुत्र। वंशपरम्परासे राजपूतोंको अस्त्र शस्त्रकी शिक्षा दी जाती है। जिन राजाओंके राज्यमें ये रहते हैं उनकी ओरसे इस बात पर इनके भरणपोषणके लिये इनको भूमि दी जाती है कि जिसमें लड़ाईके समय काम पड़ने पर ये उनकी सहायता करें। जबतक वह निष्कर भूमि जो राजाकी ओरसे मिली रहती है ले लिये जानेके योग्य नहीं होती अथवा उनकी पैतृक रहती है तबतक बराबर ये राजपूत ठाकुर उस भूमिके मालिक समझे जाते हैं। राजपूत बचपनहीसे अफीम खानेके बड़े अभ्यस्त होते हैं। कभी कभी मैंने उनको इतनी अफीम खाते देखा है कि मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ है। लड़ाईके दिन वे इसकी मात्रा दूनी कर देते हैं। अफीम उनको इतना सतेज और मस्त बना देती है कि वे मृत्युकी कुछ भी परवा न करके भयानकसे भयानक मारकाटमें लग जाते हैं। यदि कोई राजा स्वयं शूरवीर हो तो उसके मनमें कभी यह सन्देह नहीं उत्पन्न हो सकता कि मेरे राजपूत कभी किसी अवसर पर मेरा साथ छोड़ देंगे। युद्धके समय ये लोग केवल इतना ही हैं कि कोई उनका सरदार वा परिचालक हो। अपने स्वामीको शत्रुओंके हाथोंमें छोड़ देनेकी अपेक्षा उसके आगे अपना जीवन दे देनेमें वे अधिक मान समझते हैं। लड़ाईके मैदानमें जानेसे पहले जब राजपूत अफीमके नशेमें झूमते हुए मरनेका मनमें निश्चय रखकर एक दूसरेसे गले मिल मिल कर बिदा होने लगते हैं तो वह दृश्य बहुतही मनोहारी और देखने योग्य होता है।—फिर ऐसी अवस्थामें यह

कुछ आश्चर्यकी बात नहीं कि मुगल बादशाहगण जातिके मुसलमान और हिन्दुओंके कट्टर विरोधी होने पर भी अपने यहां ऐसे ही राजपूतोंके सरदार राजाओंकी मंडली रखते हैं, दरबारके दूसरे अमीरों और सरदारोंकी तरह उनके साथ भी बहुत उत्तम बर्ताव करते हैं और सेनाके बड़े ऊंचे ऊंचे पदोंका उनको अधिकारी बनाते हैं।†

राजपूतानियां—इस अवसर पर यशवन्तसिंहकी पत्नीने जो राणाके कुलकी थी अपने स्वामीकेसाथ जो व्यवहार किया वह भी सुननेके योग्य है; अर्थात् जिस समय उसने सुना कि उसका पति आठ सहस्रमेंसे पांचसौ योद्धाओंको लिये हुए अप्रतिष्ठाके साथ नहीं वरन् बड़ी वीरतासे लड़कर युद्धक्षेत्रसे चला आता है उस समय उस शूरवीर योद्धाके निकट बधाई और आश्वासनका सम्वाद भेजना तो दूर रहा उसने बड़ी निष्ठुरतासे आज्ञा दी कि किलेके सब फाटक बन्द कर दिये जायँ। इसके बाद उसने कहा—"मैं ऐसे निन्दित पुरुषको किलेके अन्दर नहीं आने दूंगी। ऐसा व्यक्ति और मेरा पति! राणाका दामाद और ऐसा निर्लज्ज! मैं कदापि ऐसे पुरुषका मुख नहीं देखना चाहती। ऐसे महान् पुरुषका सम्बन्धी होकर इसने उसके गुणोंका अनुसरण नहीं किया। यदि यह लड़ाईमें शत्रुओंको

† प्रोफेसर ब्लाकमैनने लिखा है कि भारतपर विजय प्राप्त करनेवाले मुसलमान यातो लड़ना भिड़ना जानते थे या पढ़े लिखे थे, परन्तु हाथकी कारीगरी उनको बिलकुल नहीं आती थी। अतएव शिल्पसे लेकर खेतीबारी तकमें उनको हिन्दुओंका भरोसा करना पड़ता था। हिन्दू उनको बहुतसी बातें जैसे जोतने बोने सीने, सिक्के बनाने, औषधि तैयार करने, मकान बनाने, भिन्न भिन्न ऋतुओंमें पहनने योग्य कपड़े बुनने और फीलवानी आदिकी भी शिक्षा देते थे। See Professor Blochmann's article in the Calcutta Review, No. C. I. V. of 1871.— (गं० प्र० गुप्त)

हरा नहीं सका तो यहाँ आनेकी क्या आवश्यकता थी; वहीं युद्धक्षेत्रमें वीरताके साथ लड़कर प्राण दे देना उचित था।" फिर तुरन्त ही उसके मनमें दूसरा विचार उत्पन्न हुआ और उसने कहा—"अरे कोई है जो मेरे लिये चिता तैयार कर दे! मैं अपनी देह अग्निको अर्पण करूंगी। सचमुच मुझे धोखा हुआ; मेरा पति वास्तवमें संग्राम में मारा गया; इसके अतिरिक्त कोई दूसरी बात नहीं हो सकती।" और फिर क्रोधमें आकर बहुत बुरा भला बकने लगी। ८—९ दिन तक उसकी यही दशा रही; इस बीचमें यशवन्तसिंहको मह एकबार भी नहीं मिली। अन्तमें जब उसकी माँ उसके निकट आई और उसने समझाया कि घबराओ नहीं, राजा जरा विश्राम लेकर और नई सेना एकत्रित करके पुनः औरंगजेब पर आक्रमण करेगा और इसकी वीरता और साहसकी लोग फिर प्रशंसा करेंगे तब वह कुछ शान्त हुई।

इससे यह प्रगट होता है कि इस देशकी स्त्रियोंको अपने मान प्रतिष्ठा और सम्मानका कितना ध्यान है और उनका हृदय कैसा सजीव है। मैं ऐसे और भी दृष्टान्त दे सकता हूं, क्योंकि मैंने बहुत सी स्त्रियोंको अपने पतियोंके साथ चितामें जलकर मरते अपनी आँखोंसे देखा है। परन्तु ये बातें मैं किसी दूसरे अवसर पर (आगे चलकर) वर्णन करूंगा जहां मैं दिखाऊंगा कि मनुष्यके चित्त पर आशा, विश्वास, प्राचीन रीतिनीति, साधारण मत और मान सम्मान के ध्यानका कितना दृढ़ प्रभाव पड़ता है।

जिस समय दाराने उज्जैनमें संघटित दुःखदायिनी घटनाओंका हाल सुना उस समय यदि शाहजहाँ उसे उपदेश और युक्तिपूर्ण बातोंसे ठंढा न करता तो क्रोधके आवेशमें पड़ न जाने क्या क्या

कर डालता। यदि उस समय कासिमखां वहां होता तो वह निस्सन्देह मारा जाता और मीरजुमलाके पुत्र मुहम्मदअमीरखांको भी अपने प्राणोंसे हाथ धोने पड़ते और उसकी पत्नी तथा कन्या भी वेश्या बनने पर विवश की जातीं; क्योंकि दाराको सन्देह था कि मीरजुमलाने औरंगजेबकी सेना और धन दोनोंसे सहायता की है और वही इस उपद्रवका प्रधान कारण है,—परन्तु बादशाहकी युक्तियुक्त बातों से उसका क्रोध और जोश शान्त होगया और मीरजुमलाके कुटुम्ब के लोग बच गये। बादशाहने उसे समझाया कि मीरजुमलाका औरंगजेबकी इन बातोंसे सम्बन्ध रखना कदापि सम्भव नहीं है। यह कैसे हो सकता है कि ऐसा दूरदर्शी और बुद्धिमान् आदमी एक ऐसे व्यक्तिके लाभके लिये जिससे उसको कुछ भी स्नेह वा प्रीति नहीं है अपने बालबच्चोंको ऐसे जोखिमके स्थानमें छोड़ देगा, बल्कि इससे यह प्रगट होता है कि वह स्वयं औरंगजेबके पेचमें पड़ गया है।

इधर औरंगजेब और मुरादबख्शकी यह दशा थी कि वे मारे हर्षके फूले नहीं समाते थे। उनको इस बातका अहंकार हो गया था कि हमपर कोई विजय नहीं प्राप्त कर सकता और ऐसा कोई कठिन काम नहीं जिसे हम न करसकें। औरंगजेब अपने सैनिकोंका साहस बढ़ानेके लिये खुलेआम कहता फिरता था कि दाराकी सेनामें ३० हजार ऐसे मुगल हैं जो अभी हमारी सेवामें आ जानेको तैयार हैं। औरंगजेबका ऐसा कहना एकदम झूठ भी नहीं था क्योंकि पाठकों को आगे चलकर मालूम होगा कि कई उमराने वास्तवमें दाराशिकोह से विश्वासघातकता की। अब यद्यपि मुराद बहुत शीघ्रता कर रहा था और उसकी यह इच्छा थी कि बराबर आगे बढ़ते चलें परन्तु

औरंगजेबने उसे रोका और कहा कि इस सुन्दर नदी (क्षिप्रा) के किनारे ठहर कर जरा दम ले लेना और आराम करना आवश्यक है क्योंकि इस बीचमें हमको अपने मित्रों और शुभचिन्तकोंसे पत्रव्यवहार करके राजधानीका हाल जान लेनेका भी अवसर मिल जायगा। अतएव अब ये लोग धीरे धीरे कूच करते थे और आगरेसे जो समाचार आते थे उनपर खूब विचार करके आगे बढ़ते थे।

शाहजहांकी अवस्था--इस समय शाहजहां निराश और दुःखद स्थितिमें आ पड़ा था। एक ओर अपने दोनों पुत्रोंके राजधानीमें प्रवेश करनेके दृढ़ विचार और दूसरी ओर दाराको युद्धकी बड़ी बड़ी सामग्रियां एकत्रित करते देखकर उसे बड़ी शंका होती थी। वह पहलेहीसे जान गया कि जिस भयंकर कालचक्रको वह अनेक उपायोंसे टालना चाहता था वह उसके कुटुम्ब पर गिरना चाहता है। दाराकी इच्छाओंको रोकना अब उसकी सामर्थ्यसे बाहर था, क्योंकि प्रथम तो वह अभी तक रोगसे मुक्त नहीं हुआ था दूसरे अपने ज्येष्ठ पुत्र (दारा) के शासक नहीं किन्तु नौकरके समान हो रहा था। दाराकी दुष्टताके कारण लाचार होकर उसने राज्यशासनके कामोंसे हाथ खींच लिया था और दरबारियों तथा अफसरोंसे कह दिया था कि उसकी आज्ञा और अनुमतिके अनुसार काम करना। मतलब यह कि इन दिनों उसकी यह अवस्था थी कि मानो दाराशिकोह तो बादशाह और शासक था और वह प्रजा अथवा शासित। अतएव यह कोई आश्चर्य नहीं कि दाराने सहजमें इतनी बड़ी सेना एकत्रित करली जितनी बड़ी सेना कदाचित् हिन्दुस्तानकी रणभूमिमें पहले कभी इकट्ठी नहीं हुई होगी। एक लाख सवार, बीस सहस्रसे भी अधिक पैदल, अस्सी

तोपें और असंख्य नौकर बनिये दूकानदार मजदूर इत्यादि, जिनका रसद देने तथा अन्यान्य कामोंके लिये चाहे जीत हो चाहे हार लड़ाईके समय वर्त्तमान रहना आवश्यक होता है और जिनको प्रायः इतिहासलेखक भूलसे लड़ने भिड़नेवाले सिपाहियोंमें मिलाकर लिख देते हैं कि अमुक स्थानमें चार लाख योद्धे थे, एकत्रित हो गये। यद्यपि इस बातका निश्चय है कि दाराशिकोहकी सेना इतनी अधिक थी कि वह औरंगजेबकी सी. जिसकी अधीनतामें चालीस सहस्रसे अधिक सैनिक नहीं थे और वे भी कड़ी धूपमें बराबर चले आनेके कारण थके मांदे थे दो तीन सेनाओंको हरा सकता था परन्तु इतने पर भी किसीको उसकी जीत होनेकी आशा नहीं होती थी। इसका कारण यह था कि जिन सिपाहियों और सरदारोंसे यह भरोसा किया जा सकता था कि ईमानदारीके साथ अन्ततक लड़ेंगे वे केवल वेही थे जो सुलेमानशिकोहके साथ गये थे; बाकी दरबारमें जितने लोग थे उनके रंगढंगसे साफ प्रगट होता था कि न तो वे दारासे प्रीति रखते हैं न उसका कुछ लाभ चाहते हैं। दाराके मित्रोंने यह अवस्था देखकर उसे सलाह दी कि आप इस भयानक लड़ाईमें पड़नेका साहस न करें। स्वयं बादशाह (शाहजहां) ने सेनापति बनकर औरंगजेबके विपक्षमें युद्धक्षेत्रमें जानेकी इच्छा प्रगट की। बादशाहकी यह युक्ति बहुतही योग्य और उचित थी। इससे अवश्य लड़ाई टल जाती और औरंगजेब जो बड़े अहंकारमें भरा था सफलता न प्राप्त कर सकता। प्रथम तो मुरादबख्श और औरंगजेब सम्भवतः पिताके विरुद्ध लड़ते ही नहीं और यदि आते भी तो अवश्य उनकी दुर्दशा होती क्योंकि औरंगजेब और मुरादके सब सरदार तथा सैनिक बादशाहके हृदय से भक्त थे।—

जब दाराने किसी प्रकार अपने मित्रोंकी सलाह न मानी तब लाचार होकर उन्होंने समझाया कि सुलेमान शिकोहके आ जाने तक जो आपकी सहायताके लिये शीघ्रतासे बढ़ा चला आता है आप ठहरे रहिये।—यह सलाह भी अच्छी और लाभ पहुँचाने-वाली थी; क्योंकि सुलेमानशिकोहसे प्रायः सब लोग प्रसन्न और सन्तुष्ट थे और वह अपने साथ एक ऐसी सेना लिये चला आता था जिसमें बहुतसे खास दाराके नियुक्त किये हुए लोग थे और वे शुजा पर विजय प्राप्त कर चुके थे। किन्तु दाराने यह बात भी नहीं मानी। उसने इसी एक बातका दृढ़ संकल्प कर लिया था कि जिस तरह बन पड़े औरंगजेबको नीचा दिखाना चाहिये।

दाराका दुराग्रह—यदि दारा भाग्यवान् होता और सुसमय दुस्समय पहचानकर काम करता तो बहुत सम्भव था कि वह जीत जाता। परन्तु जिन विचारोंसे उसने किसीकी सलाह नहीं मानी और जल्दीसे भिड़ जाना पसन्द किया उनमेंसे एक तो यह था कि उसने सोचा कि इस समय बादशाह यहांतक मेरे पँजोंमे फँसा हुआ है कि उसके ऊपर मेरा पूरा पूरा अधिकार है, दूसरे यह कि राजकोष मेरे हाथमें है, तीसरे कि समस्त बादशाही सेना मेरी आज्ञाके अधीन है, चौथे शुजा इस प्रकार हारा है कि मानो एकदम नष्ट हो गया है और औरंगजेब तथा मुराद जो एक थकी मांदी सेना लेकर आते हैं इस अवस्थामें जो वे पराजित होंगे तो फिर उनको कहीं ठिकाना नहीं रहेगा। इस प्रकार शत्रुका खटका मिट जायगा और मैं स्वतन्त्र होकर सफलता प्राप्तकर निष्कण्टक राज्य भोग करूंगा। उसने यह भी सोचा कि यदि बादशाहको युद्धक्षेत्रमें जाने दूंगा तो सन्धि हो जायगी और सब भाई अपने अपने प्रान्तको लौट

जायँगे, फिर बादशाह जिसका स्वास्थ्य अब पहलेसे अच्छा होता जाता है पुनः राज्यशासनका भार अपने ऊपर ले लेगा और राज्य-कार्य जिस भांति पहले चलते थे वैसेही फिर चलने लग जायेंगे। सुलेमान शिकोहके आ जानेतक रुके रहनेके विषयमें उसने यह विचार किया कि कहीं ऐसा न हो कि बादशाह उसके आ जानेतक मेरी खराबीका कोई प्रबन्ध कर डाले या औरंगजेबहीसे कोई ऐसा बन्दोबस्त करले जिससे मेरी हानि होनेका भय हो। यह विचार भी उसके मनमें उत्पन्न हुआ कि यदि सुलेमानशिकोहके आनेतक रुका रहा जाय और मान भी लिया जाय कि उसके आनेपर उसकी सहायतासे जीत होगी, पर ऐसी अवस्थामें भी तो इस जीतका कारण लोग उसीको समझेंगे। उसकी वीरताकी पहलेहीसे धूम मच चुकी है, फिर यह कौन कह सकता है कि उस तेजस्वी राजकुमार के चित्त पर उस समय कैसा प्रभाव पड़ेगा जब लोग और भी उसकी प्रशंसा करेंगे। मतलब यह कि जब बादशाह और दरबारके बड़े बड़े सरदार उसकी वाहवाही करेंगे उसको शाबासी देंगे तो क्या मालूम उसके विचार कितने बढ़ जायँगे और पिताकी प्रीति और प्रतिष्ठाका उसे कुछ ध्यान रहेगा या नहीं।

येही कारण थे जिससे दारा बहक गया और अपने बुद्धिमान् मित्रोंकी उसने एक न सुनी। सेनाको युद्धके लिये तैयार होकर कूच करनेकी आज्ञा देकर वह बिदा होनेके हेतु दुर्गमें पिताके पास गया। वृद्ध शाहजहां पहले तो अपने ज्येष्ठ पुत्रसे गले मिलकर रोने लगा, परन्तु फिर कुछ सम्हलकर बोला—"खैर बेटा, तुमने अपनी मरजीका काम किया, खुदा तुमको इसमें सुर्खरू और कामयाब करे; लेकिन याद रखो कि अगर लड़ाई बिगड़ गई तो आकर मुझे

क्या मुंह दिखाओगे ! " पिताकी बातों पर अधिक विचार न करके दारा झटपट वहांसे चला आया। पश्चात् चम्बल नदीकी ओर जो आगरेसे लगभग ६० मीलके अन्तर पर है उसने यात्रा की और वहां पहुँचतेही यह सोचकर कि शत्रुओंकी सेना इसी मार्गसे जायगी उसने नदीका घाट रोक कर पड़ाव डाल दिया। परन्तु वह दीर्घ दृष्टिवाला प्रपंची " फकीर " (औरंगजेब) जिसने प्रत्येक स्थानमें अपने जासूस और भेदिये लगा रखे थे यह बात भली भांति जानता था कि इतने शत्रुओंके रहते नदीपार उतरना कितना कठिन काम है। इतने पर भी उसने अपने डेरे खेमे उस पार आकर लगा दिये और जान बूझकर इतने पास लगाये कि जिसमें दाराकी दृष्टि उन पर पड़ सके। इतना काम करलेनेके उपरान्त उसने यह किया कि चम्पत नामक एक राजाको कुछ भेट पारितोषिक देकर इस बातपर प्रसन्न कर लिया कि वह उसकी सेनाको अपने राज्यसे होकर उस घाटकी ओर निकल जाने दे जहां पानी कम हो या जहांसे नदी सहजमें पार की जा सके। इस राजाने वे दुर्गम जंगली और पहाड़ी पथ जिनके विषयमें कदाचित् दारा यह समझे हुए था कि इस ओरसे औरंगजेब नहीं आ सकेगा स्वयं जाकर उसकी सेना को दिखा दिये। तात्पर्य यह कि इधर तो दारा और उसके सहायक को धोखा देनेके लिये डेरे खेमे ज्योंके त्यों खड़े रहे, उधर औरंगजेब सेनाके सहित दूसरे मार्गसे चुपचाप चम्बलके पार उतर आया। जब दाराको इस बातकी खबर लगी तब लाचार होकर उसे भी वहांसे हटना और उसका पीछा करना पड़ा। इस समय औरंगजेब चम्बलके पार उतरकर बड़ी शीघ्रतासे यमुनाके किनारे पहुँच गया था और अपने सैनिकोंको विश्रान्ति देनेके विचारसे युद्धकी सब

सामग्रियोंसे ठीक होकर देख रहा था कि दारा कब आता है। (यह स्थान जहाँ उसने डेरा डाला था आगरेसे लगभग १५ मीलके अन्तर पर है। पहले इसका नाम समूगढ़ था पर अब इस कारणसे कि औरंगजेबने यहां विजय पाया था फतहाबाद कहा जाता है) दारा भी झटपट वहां आ पहुँचा और औरंगजेबकी सेनाओं तथा आगरे के बीचमें यमुनाके किनारे उसने भी अपने खेमे खड़े किये।

तीन चार दिन तक दोनों सेनायें आमने सामने चुपचाप पड़ी रहीं। इस बीचमें यद्यपि शाहजहांने पत्र पर पत्र भेजे और लिखा कि "सुलेमान शिकोह करीब पहुँच गया है खबरदार बेमौके जल्दी न कर बैठना, बल्कि मुनासिब यह है कि आगरेसे और करीब हो आओ और सुलेमान शिकोहके आ जानेतक लश्कर को किसी मुनासिब जगह ठहराकर इर्द गिर्द खन्दक खुदवा लो और मोर्चे बांध लो।" पर उसने केवल इतनाही उत्तर देकर तुरत लड़ाई की तैयारी कर दी कि "हुजूर कुछ अन्देशा न फरमायें। इन्शा-अल्लाह तीन दिन गुजरने न पायेंगे कि औरंगजेब और मुरादबख्श दोनोंके हाथ पांव बांधकर हाजिर कर दूंगा। उस वक्त हुजूरको इख्तियार है कि जो मुनासिब हो उनको सजा दें।"

औरंगजेब और दारा—निदान सबसे पहले दाराने तोप-खाना खड़ा किया और लोहेके सिक्कड़ोंसे इस भांति तोपोंको परस्पर जकड़ दिया कि शत्रुपक्षके सवारोंको आक्रमण करके घुस आनेका अवकाश न रहे। उसके पीछे ऊँटोंपर एक विशेष प्रकारकी छोटी छोटी तोपें लगाई गईं। ये छोटी तोपें ऐसी थीं कि जिनको ऊँट-सवार बिना नीचे उतरे सहजमें घूमकर चला सकता था। इनके पश्चात् कई पंक्तियां पैदल बन्दूक दागनेवालोंकी थीं। शेष सेना सवारोंकी

थी जिनके पास या तो तलवारें और बर्छियां थीं, जिनको राजपूत व्यवहारमें लाते हैं, या तलवार और तीर धनुष। मुगल लोग अधिकतर तलवार और तीर धनुषसे काम लेते हैं। यहां पर जैसा कि मैं पहले लिख चुका हूं यह समझ लेना चाहिये कि मुगलके अन्तर्गत समस्त गोरे विदेशी मुसलमान, जैसे ईरानी, तूरानी, अरब, रूमी, सब आ गये।

दाराशिकोहने इस सेनाको तीन भागोंमें बाँटा। दाहिनी ओरका सरदार खलीलउल्लहखां बनाया गया जिसके अधीन १० सहस्र मुगल थे। बाईं ओरकी सरदारीका भार प्रसिद्धवीर रुस्तमखां दक्खिनी, राव छत्रशाल और सरदार रामसिंह राठौरको दिया गया; (यह खलीलउल्लहखां दानिशमन्दखांके स्थानमें जिसके यहां कुछ कालतक मैं नौकर था सवारोंकी सेनाका बख्शी अथवा सेनापति बनाया गया था। इसका यह कारण था कि दानिशमन्दखां कदापि नहीं चाहता था कि कोई व्यक्ति शाहजहांके राज्याधिकारमें हस्तक्षेप करे, और इस बातसे दारा रुष्ट होता था अतएव उसने अपने पदसे इस्तीफा दे दिया था) अस्तु इधर दाराने यह प्रबन्ध किया, उधर औरंगजेब और मुरादबख्शने भी प्रायः इसी रीतिसे अपनी सेनाएँ मैदानमें खड़ी कीं। हां, उसने इतना अधिक किया कि उमराकी सेनाओंमें जो दोनों ओर दायें बांयें थीं कुछ हलकी तोपें छिपे ढंगपर लगा दीं। कहा जाता है कि यह युक्ति मीरजुमलाने बताई थी और इसका कुछ अच्छाही फल हुआ। मैं नहीं जानता कि इस युद्धमें इसके अतिरिक्त कि एक प्रकारके बाण दोनों ओरके सवारों पर चलाये जाते थे जिनसे प्रायः घोड़े भड़क जाते और कुछ सिपाही भी गिर पड़ते थे और किसी सामरिक युक्तिसे काम लिया गया था या नहीं,

परन्तु इतना मैं अवश्य कहूंगा कि यहांके सवारोंकी चाल अच्छी है। लड़ाईके समय सहजमें घोड़ोंको घुमाने और चक्कर आदि देनेका इनको बड़ा अभ्यास है। ये लोग ऐसी सुन्दर रीतिसे तीर चलाते हैं कि जितने समयमें कोई बन्दूकवाला दो बार गोली दाग सकता होगा उतने समयमें ये छः बार तीर चला सकते हैं। इनमें यह भी गुण है कि ये बड़ी उत्तमतासे पंक्तिबद्ध खड़े रहते हैं, विशेषकर आक्रमणके समय बहुत इकट्ठे होकर शत्रुओंपर गिरते हैं। इतने पर भी मैं इनको विलायती सैनिक सवारोंके समान समरविद्यामें सुचतुर नहीं समझता। ऐसा न समझनेका कारण मैं आगे चलकर बताऊंगा।

लड़ाई की लीला—अब लड़ाईका हाल सुनिये कि जब दोनों ओर भली भांति तैयारी हो चुकी तब यहांकी रीतिके अनुसार पहले गोले चलने आरम्भ हुए, फिर तीर इस अधिकतासे बरसे कि मानो बादल छा गया; इतनेमें सहसा वृष्टि होने लगी जिससे लड़ाई जो बड़ी प्रबलतासे हो रही थी थोड़ी देरके लिये रुक गई; परन्तु पानी बरसना बन्द होतेही फिर तोपें चलने लगीं। इस समय दाराशिकोह सिंहलद्वीपके एक सुन्दर हाथी पर सवार होकर निकला और सब ओरसे धावा करनेकी आज्ञा देता हुआ स्वयं सवारोंकी एक सेनाके साथ शत्रुओंकी तोपें छीन लेनेके अभिप्रायसे साहस-पूर्वक आगे बढ़ा। इधर शत्रुपक्षने ऐसी वीरतासे सामना किया कि उसके चारों ओर मृतकोंके ढेर लग गये और न केवल वही सेना जो पहलेसे उसके साथ थी वरन् और भी जो पीछे आ गई थी एकदम तितर बितर हो गई। इतने पर भी दारा साहसपूर्वक मैदानमें हाथीपर बैठा बड़ी सावधानी और शूरतासे चारों ओर देखता हुआ अपना पक्ष सबल करनेका उद्योग करता रहा। उसकी देखा

देखी उसके सैनिकोंने भी साहस किया और वे सिपाही जो जगह छोड़कर इधर उधर हट गये थे फिर अपने अपने स्थान पर आ गये। यद्यपि फिर दाराने कई आक्रमण किये परन्तु औरंगजेबके पासतक वह नहीं पहुंच सका, कारण यह कि दूसरी ओरके तोपखानेने इतनी हानि पहुँचाई और इतना प्रभाव उत्पन्न किया कि इस ओरके सिपाहियोंका साहस जाता रहा, वरन् कुछ सिपाही भाग भी गये। परन्तु दाराका वीरत्व देखकर शेष सैनिकोंने मुँह नहीं मोड़ा। वे अपने सेनापतिके साथ बड़ी शीघ्रतासे बढ़े, यहांतक कि तोपोंके निकट पहुंचकर उन्होंने उनसे बंधे हुए सिक्कड़ोंको खोल डाला। इसके पश्चात् शत्रुओंके खेमोंमें घुसकर तोपवाले तथा पैदल सैनिकोंको एकदम मार भगाया। इस अवसर पर दोनों ओरके सवारोंमें घमसान लड़ाई हुई और इतने तीर बरसे कि आकाशका दिखाई देना कठिन हो गया,— और तो क्या, दाराने तीरोंकी बौछाड़ करते करते अपना तर्कश बिल्कुल खाली कर डाला। परन्तु इन तीरोंसे दोनोंमेंसे किसी पक्षकी विशेष हानि नहीं हुई, क्योंकि १० मेंसे ९ तीर यातो निशाने तक पहुँचतेही नहीं थे या इधर उधर जाकर गिरते थे। जब तर्कश एकदम खाली हो गये तब तलवारोंसे काम लिया जाने लगा। दोनों ओरके लोग इस प्रकार लड़ते थे कि जितने अधिक सिपाही मारे जाते थे उतनीही अधिक उत्तेजना फैलती जाती थी। दारा प्रचण्ड साहससे बार बार अपने सरदारोंको पुकार पुकार कर उत्साहित करता और बढ़ावा देता जाता था जिसका यह परिणाम हुआ कि लड़ते लड़ते अन्तमें शत्रुओंके सवार भी भाग गये।

औरंगजेब इस समय दूर नहीं था। वह हाथीपर बैठा सिपा-

हियोंको लड़नेके लिये ढाढ़स दे देकर उत्तेजित करने लगा, परन्तु जब बहुत चेष्टा करने पर भी उसने देखा कि कुछ लाभ नहीं होता, उसके प्रधान सवार दाराको नहीं रोकते हैं वरन् भागे जाते हैं, और दारा ऊबड़ खाबड़ भूमिकी कुछ भी परवा न करके उसके बचे हुए सैनिकोंका भी (जो एक सहस्रके लगभग अधिक जैसा कि मेरे सुननेमें आया था पांच सौसे अधिक नहीं थे) संहार किया चाहता है, तब निर्भीक होकर उसने अपने सरदारोंका नाम ले लेकर पुकारना और कहना आरम्भ किया कि " बहादुरो, खुदा पर भरोसा रखो ! भागनेसे क्या होगा ? खुदा सब जगह मौजूद है । क्या तुम नहीं जानते कि मुल्के दकन यहांसे किस कदर दूर है ? " इतना कहकर अपनी दृढ़ता प्रगट करनेके लिये कि चाहे कुछ हो हम लड़ाईके मैदानसे कदापि नहीं हटेंगे उसने यह विचित्र आज्ञा दी कि " हमारे हाथीके पावोंमें लोहेके सिक्कड़ डाल दो जिसमें कि वह आगे पीछे न हो सके ।" यदि उसके सैनिक फिर लड़नेको तैयार न हो जाते तो वह निस्सन्देह ऐसा कर डालता, परन्तु अपने स्वामीका ऐसा दृढ़ निश्चय देखकर उनके मनमें धैर्य आया और पुनः साहसने उनका साथ दिया ।

इस समय दाराने औरंगजेब पर छापा मारनेका विचार किया परन्तु रणक्षेत्रके ऊबड़ खाबड़ होने तथा शत्रुके सवारोंके कारण जो अब तक मैदानमें और टीलों पर वर्तमान थे (यद्यपि पंक्तिबद्ध नहीं थे) वह वहांतक नहीं पहुँच सका । दारा सोचता था कि औरंगजेबको मार डाले अथवा कैद किये बिना विजय पाना किसी कामका नहीं । औरंगजेब अब लड़ने योग्य नहीं रह गया था अतएव दाराको वास्तवमें तुरन्त आक्रमण करके उसे अपने वशमें कर लेना उचित

था; परन्तु कई कारणोंसे जिनका उल्लेख मैं अभी करता हूं उसका ध्यान एक दूसरी ओर चला गया और औरंगजेब सिर पर शीघ्रही आनेवाली आपत्तिसे बच गया ।

औरंगजेबकी दृढ़ता—दारा औरंगजेबपर आक्रमण करने का विचार कर रहा था इतनेमें उसने देखा कि उसकी सेनाके बाईं ओर बड़ी हलचल मची हुई है। इतनेहीमें उसका एक मुसाहिब यह सम्बाद लाया कि रुस्तमखां और छत्रशाल मारे गये और रामसिंह राठौर जो बड़ी वीरतासे धावा करके शत्रुओंकी सेनामें आ घुसा था घिर गया है। अतएव औरंगजेब पर छापा मारनेका विचार त्याग कर उसे अपनी सेनाके बाएँ भागकी सहायताके लिये आना पड़ा। उसके वहां जानेपर भयानक मार काटके पश्चात् लड़ाईका रंग फिर पलट गया, शत्रुओंकी सेना चारों ओरसे पीछे हटा दी गई, परन्तु अभीतक उनकी ऐसी हार नहीं हुई थी कि जिससे दारा पूरी तरह निश्चिन्त हो जाता। इधर रामसिंहने बड़ा पराक्रम प्रगट किया। उसने मुरादबख्शको बड़ी वीरता और तेजस्वितासे घायल कर डाला। केवल इतनाही नहीं वरन् वह अमारीका रस्सा काट कर उसे हाथीसे भूमिपर गिरा देनेकी भी चेष्टा कर रहा था। मुराद घायल हो गया था और चारों ओरसे राजपूतोंमें घिरा हुआ था, इतने पर भी उसने रामसिंहको सफल-मनोरथ नहीं होने दिया। वह बड़ा फुर्तीला और दूरदर्शी योद्धा था। उसे जो कष्ट पहुँच रहा था उसकी चिन्ता न करके उसने अपने सात आठ वर्षकी उमरके बच्चेको जो पास बैठा था ढालकी छाया करके बचाया और फिर निशाना साधकर इस फुर्तीसे एक तीर मारा कि वीर राजा रामसिंह सदा सर्वदाके लिये इस संसारसे विदा हो गया ।

दाराको राजा रामसिंहकी मृत्युका बहुत शोक हुआ, परन्तु जब उसने देखा कि अपने सरदारके मारे जातेही समस्त राजपूत योद्धे क्रोध और जोशके साथ मुरादबख्शको घेरे हुए हैं, तब कई विघ्नोंके रहते हुए भी स्वयं बढ़कर उसपर आक्रमण करनेका विचार किया। यद्यपि ऐसी अवस्थामें औरंगजेब बचा जाता था और उसको छोड़ देना उचित नहीं था, तौभी दारा मुरादके हाथ आ जानेको भी औरंगजेबके पकड़े जानेसे कम नहीं समझता था; परन्तु उसका ऐसा सोचना व्यर्थ हुआ, उलटे उसेही भयानक रूपमें पराजित होना पड़ा।

विश्वासघाती सरदार—दाहिनी ओरके सैन्यदलके सरदारका नाम खलीलउल्लहखां था। उसकी अधीनतामें १० सहस्र मुगल थे जो ऐसे शिक्षित थे कि केवल वेही औरंगजेबके समस्त सैनिकोंको हरा सकते थे, परन्तु जिस समय दारा बड़ी वीरता और साहससे बाईं ओर लड़ रहा था उस समय इस सरदारने तनिक भी उसकी सहायता नहीं की, वरञ्च लोगोंसे यह बहाना कर दिया कि हमारी सेनाके लिये यह आज्ञा है कि जबतक विशेष प्रयोजन न हो और आज्ञा न दी जाय तबतक एक डग भी आगे न बढ़े और एक तीर भी न छोड़े। किन्तु उसका ऐसा बहाना करना विश्वासघातकता और बेईमानीसे भरा हुआ था।

बात यह थी कि कई वर्ष पूर्व दाराशिकोहने इस सरदारका कुछ अपमान कर डाला था; वह अपमान रूपी आग अबतक इसके हृदय को जला रही थी, अतएव उसने सोचा कि बदला लेनेके लिये यह उपयुक्त समय है। परन्तु दाराशिकोहकी जो हानि उसने अपने अलग रहनेमें सोची थी वह नहीं हुई, क्योंकि दाहिनी ओरके लोगोंकी सहायताके बिनाही उसने अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लिया।

अब इस विश्वासघातीने एक और चाल चली, अर्थात् जब दारा मुरादबख्शके दबानेके अभिप्रायसे अपने सैनिकोंकी सहायता को जा रहा था तब शीघ्रतासे अपने सहायकोंके सहित आगे बढ़ कर इस दुष्टने उसे पुकारा और कहा—"मुबारकबाद हजरत सलामत, अलहम्दुलिल्लाह ! हुजूरको बखैर व सलामती बादशाही और फतह मुबारक हो। लेकिन हुजूर यह तो फरमायें कि ऐसे खतरनाक मौके पर जब कि अमारीके सायबानसे कई गोलियाँ और तीर पार हो चुके हैं इतने बड़े हाथी पर क्यों सवार हैं। अगर खुदा न ख्वास्ता इन बेशुमार तीरों और गोलियोंमेंसे कोई जिस्मे-मुबारक को छू जाय तो हम लोगोंका कहाँ ठिकाना रहेगा। खुदाके वास्ते जल्द उतरिये और घोड़े पर सवार हो लीजिये। अब क्या रह गया है ! सिर्फ इतनी बात बाकी रह गई है कि इन चन्द भगोड़ोंका ज्यादा-तर चुस्ती और मुस्तैदीसे पीछा किया जावे।"

दाराका पराजय—यदि दारा हाथी परसे उतरनेमें अपनी हानि समझता, यदि वह सोचता कि इस हाथी हीकी कृपासे आज वह कैसे कैसे काम कर सका है—और सैनिकोंको उसके दिखाई देते रहनेसे कितना साहस हुआ है, तो वही अपने पिताके सुविस्तृत राज्यका अधिकारी होता, परन्तु राज्यके लोभमें पड़कर उसने खलीलउल्लहकी बातोंका विश्वास किया। थोड़ी देरके बाद जब उसे कुछ सन्देह हुआ तब उसने पूछा कि खलीलउल्लहखां कहाँ है, परन्तु वह अब कहाँ था और कब उसके हाथ आता था ! यद्यपि उस समय दाराने अनेक गालियाँ दीं और यह भी कहा कि मैं उसे जीता नहीं छोड़ूंगा, परन्तु उसका यह धमकी देना और क्रोध प्रगट करना एकदम व्यर्थ हुआ। कारण यह कि सिपाहियोंने जब देखा

कि उनका मालिक हाथी पर नहीं है तब तुरन्त उसके मारे जानेका सम्वाद चारों ओर फैल गया और सारी सेनामें हलचल मच गई। सबको किसी प्रकार प्राणरक्षा करनेकी चिन्ता पड़ गई। क्षणमात्रमें विचित्र परिवर्त्तन दिखाई दिया, अर्थात् विजयी विजित हुए और विजित विजयी। यह विलक्षणता देखिये कि औरंगजेबके केवल पाव घण्टे हाथी पर चढ़े रहनेका यह परिणाम हुआ कि वह भारतवर्षका बादशाह हो गया और कई क्षणोंके निमित्त हाथीसे उतरनेका दारा को यह फल मिला कि वह हाथीसे क्या उतरा मानों राजासन गिर पड़ा और अभागे राजकुमारोंकी श्रेणीमें परिगणित हुआ! देखिये मनुष्य कैसा अदूरदर्शी है; एक छोटीसी बातसे इस संसारमें कैसे बड़े बड़े परिवर्त्तन हो जाते हैं!

बड़ी बड़ी सेनायें बहुत बड़े बड़े काम करती हैं इसमें सन्देह नहीं, परन्तु जब घबराहटमें पड़कर वे नियम-विरुद्ध हो जाती हैं तब उनको उनकी पूर्व अवस्थामें लाना बहुत कठिन होता है। यदि कोई बड़ी नदी उछलकर किनारोंके बाहर बह निकले तो जैसे उसके फैले हुए पानीको बांधना असम्भव होगा वैसेही किसी बड़ी सेनाके नियम-विरुद्ध होकर तितर बितर हो जाने पर उसे सम्हालना और नियम-पूर्वक ठीक करना असाध्य होता है। अतएव जब मैं कुनियमसे चलनेवाले इन सैनिकोंको जो भेड़ बकरियोंके झुण्डोंके समान चलते हैं देखता तो सदा मेरे मनमें यही विचार उत्पन्न होता कि हमारे यहांके (अर्थात् फ्रान्स देशके) केवल २५ सहस्र लड़ने भिड़नेवाले सुशिक्षित सिपाही (१) प्रिन्स काण्डी अथवा (२)

(1) Prince of Conde, better known as Conde the Great.
(2) Marshal Turenne, one of the greatest soldiers of France.

मारशल डुरीनकी अधीनतामें रहकर भारतवर्षके ऐसे सैनिकोंपर (चाहे वे संख्यामें कितनेही हों) विजय प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त जब मैं पुस्तकोंमें पढ़ता हूं कि ग्रीस देशके दस सहस्र सिपाहियोंने कैसी वीरता प्रगट की थी और मकदूनियाके पचास हजार सैनिकोंने जो महान् सिकन्दरके साथ थे ईरानके बादशाह दाराके छः सात लाख आदमियोंको किस भांति हराया था (यदि यह सच हो कि दाराकी सेना भीड़के सिवा वास्तवमें इतनीही थी) तो नियम-विरुद्ध और सुनियम-गठित सेनाओंकी दशाका विचार करनेके बाद मुझे इन ऐतिहासिक कथाओं पर तनिक भी आश्चर्य नहीं होता। मेरी समझमें फरासीसी सिपाही अपने साहससे शत्रुओंका पहला आक्रमण रोककर समग्र हिन्दुस्तानी सेनाको घबराहट में डाल सकते हैं, अथवा सिकन्दरकी भांति शत्रुदलकी किसी विशेष पंक्तिपर ही अपना सम्पूर्ण बल डालकर शेष सेनामें भय और हलचल उत्पन्न कर सकते हैं।

औरंगजेब जो अपना मतलब निकालनेके लिये नीचसे नीच काम कर डालनेको सदा तैयार रहता था यह आकस्मिक और ईश्वरीय विजय पाकर तथा यह समझकर कि अब समय उपयुक्त आया है अपनी चालके जाल फैलानेमें प्रवृत्त हुआ। तुरन्तही विश्वासघाती खलीलउल्लह भी उससे आ मिला। उसके आतेही इसने उसकी खूब प्रशंसा की और अनेक आशाएँ दिखाईं, परन्तु जो कुछ प्रतिज्ञा की वह अपनी ओरसे नहीं किन्तु अपने भाई मुरादकी ओर से; और इसके उपरान्त वह स्वयं उसे मुरादके निकट लेगया। उसने भी समयके अनुसार बड़ी प्रसन्नतासे इसका स्वागत किया। औरंगजेबने दिखानेके लिये खलीलउल्लहसे कहा कि "जनाब, सिर्फ

हजरतही (अर्थात् मुराद) तख्तनशीनीके लायक हैं और यह फतह इन्हींकी काबलियत और हिम्मतसे हासिल हुई है।'

औरंगजेबकी नीति--इधर तो औरंगजेब ऐसी प्रीति-युक्त बातें कहता था उधर रात दिन राज-दरबारके उमराको पत्र लिख लिखकर धीरे धीरे अपने पक्षमें करता जाता था। इन दिनों इसका मामूँ शाइस्ताखाँ भी इसके निमित्त बहुत कुछ उद्योग कर रहा था। उसकी सहायतासे इसको बहुत लाभ भी हुआ, क्योंकि शाइस्ताखाँ एक चतुर बुद्धिमान् और शक्तिशाली पुरुष था। सारे भारतवर्षमें यह बात प्रसिद्ध थी कि वह बहुत सीधी मीठी और प्रभावशालिनी भाषामें पत्र लिख तथा बातें करके बड़े बड़े काम निकाल सकता है। यह भी कहा जाता है कि दाराने किसी समय उसके साथ अनुचित बरताव किया था जिसके कारण उससे इसको बहुत घृणा हो गई थी और यह उस अपमानका बदला लेनेके लिये अवसर ढूँढ रहा था। सो इस अवसरको उसने उपयुक्त समझा। इस ओर राज्यका विकट लोभी होनेपर भी औरंगजेब लोगोंके दिखावेमें ऐसा बना रहता कि मानों इस खटपटमें उसका कुछ स्वार्थ ही नहीं है। जो काम होते मुरादके नामसे होते; लोगोंको जो आज्ञाएँ दी जातीं अथवा लोगोंसे जो प्रतिज्ञाएँ की जातीं वे मुराद-बख्शके नामसे की जातीं। तात्पर्य यह कि मुरादहीकी आज्ञा मानी जाती और वही भाविष्य बादशाह समझा जाता। औरंगजेब अपने बरतावोंसे अपनेको उसका एक कारदार और सामन्त प्रगट करता; यह भाव दिखाता कि राज्यके खटपटमें पड़नेकी उसकी कदापि इच्छा नहीं है, वरन् संन्यासियोंकी भांति पवित्रता और शान्तिसे वह अपने जीवनका अन्त कर देना चाहता है।

इस समय दारा भय और निराशाके समुद्रमें डूब रहा था। आगरे तो वह चला गया परन्तु इस कारणसे कि बादशाहके ये वाक्य—"खैर बेटा तुमने अपनी मरजीका काम किया; खुदा तुमको इसमें सुर्खरू और कामयाब करे; लेकिन याद रखो कि अगर लड़ाई बिगड़ गई तो आकर मुझे क्या मुँह दिखाओगे" अभी तक उसे याद थे, वह पिताके सामने नहीं जा सका। पर शाहजहाँ ने इतना सुनते ही कि दारा यहां आया है एक ख्वाजासराके द्वारा उसके आश्वासनके लिये यह सन्देसा कहला भेजा कि हम तुमको अब भी वैसाही चाहते हैं और तुम्हारी दुरवस्थाका हमको बहुत शोक है। बल्कि उसने यह भी लिख भेजा कि निराश होनेका कोई कारण नहीं है क्योंकि सुलेमानशिकोहकी सेना अभीतक ज्योंकी त्यों सुन्दर अवस्थामें वर्तमान है। हमारी राय है कि तुम अभी देहली चले जाओ। वहांके सूबेदारको आज्ञापत्र भेज दिया गया है; वह तुमको बादशाही अस्तबलसे एक सहस्र घोड़े तथा हाथी देगा और धनसे भी तुम्हारी सहायता करेगा। तुमको आगरेसे दूर न जाना चाहिये बल्कि ऐसी जगह ठहरना चाहिये जहां हमारे पत्र तुमको शीघ्र मिलते रहें। हमको अब भी आशा है कि हम औरंगजेबको वशमें कर सकेंगे वरन् दण्ड दे सकेंगे।—शाहजहांने दाराके निकट ऐसाही सन्देसा कहला भेजा पर वह ऐसा शोकग्रस्त और निराश हो गया था कि इन प्रीतिपूर्ण बातोंका उससे कुछ भी उत्तर देते नहीं बना। कुछ काल पश्चात् उसने बहिन बेगमसाहबके पास कई सूचनाएँ भेजीं और फिर आधी रातके समय अपनी स्त्री, पुत्रियों छोटे पुत्र सिपहरशिकोह और तीन चार सौ आदमियोंके साथ वह देहलीकी ओर चल दिया। पाठक महाशय, इसको तो इसी दुःखद स्थितिमें देहली

की ओर बढ़ने दीजिये, आइये इधर हमलोग देखें कि औरंगजेबने आगरेमें पहुँचकर किस नीति, उपाय और जोड़तोड़से काम लिया।

औरंगजेबने आगरेमें पहुँचतेही सुलेमान शिकोहकी सेनामें फूट का बीज बोया और कई सरदारोंको अनेक युक्तियोंसे अपनी ओर मिलाकर दाराकी आशाओंका एकबारही अन्त कर दिया। राजा जयसिंह और दिलेरखांको जो उसकी सेनाके सबसे बड़े अफसर थे उसने लिखा कि "दारा तो बिल्कुल तबाह हो गया और वह बड़ा लश्कर भी जिसका उसे बहुत भरोसा था शिकस्त फाश खाकर हमारे कब्जेमें आ गया। अब वह ऐसी बेसरोसामानीसे भागा जाता है कि सवारोंका एक रिसाला तक उसके साथ नहीं है। उम्मैद है कि हम बहुत जल्द उसे गिरफ्तार कर लेंगे। और हजरत (शाहजहां) इस कदर अलील हैं कि अब सिर्फ चन्द रोजके मेहमान रह गये हैं। इसलिये इस हालतमें अगर तुम हमारा मुकाबला करोगे तो नतीजा बजुज खराबी और हलाकतके कुछ न होगा। इसके सिवा,—इस अबतर हालतमें दाराशिकोहकी तरफदारी करना निहायत ही नादानी है। तुम्हारे हकमें अब यही बेहतर है कि हमारे पास हाजिर हो जाओ और सुलेमानशिकोहको जो बआसानी गिरफ्तार हो सकता है पकड़कर अपने साथ लेते आओ।"

जयसिंहका उपदेश—जयसिंह कुछ समय तक चिन्ता करता रहा कि अब क्या करना चाहिये। शाहजहां और दाराका उसे अभीतक भय था और वह सोचता था कि राजघरानेके एक कुमार पर इस प्रकार हाथ उठानेका परिणाम अच्छा नहीं होगा। राजकुमारके कैद करनेका अपराध अवश्य दण्डनीय है और सम्भव है वह दण्ड औरंगजेबही की ओरसे मिले। सुलेमान शिकोहके भी

बल पराक्रम और साहससे वह परिचित था—और यह बात भी उसे भलीभाँति मालूम थी कि वह प्राण दे देनेको तैयार हो जायगा परन्तु पराधीनता कभी नहीं स्वीकार करेगा।

अन्तमें अपने मित्र दिलेरखांसे सलाह करके और परस्पर किसी विशेष बातके लिये शपथ लेकर जयसिंहने यह निश्चय किया कि वह सुलेमान शिकोहके खेमेमें जाय, औरंगजेबके पत्र दिखा कर उसे सावधान करदे और अपना विचार उसपर साफ साफ प्रगट कर दे। निदान ऐसा ही किया गया। राजा जयसिंहने राजकुमारके निकट जाकर कहा कि "राजकुमार, जिस भयमद अवस्थामें आप पड़े हैं मैं उचित नहीं समझता कि उसे आपसे छिपा रखूं। जो स्थिति पहले थी उसमें ऐसा परिवर्तन हुआ है कि इस समय आपको न तो दिलेरखां पर भरोसा करना चाहिये न दाऊदखां पर, न सेनाही पर। यदि आप इस समय अपने पिताकी सहायता करनेकी इच्छासे जरा भी आगे बढ़ेंगे तो अवश्य दुर्दशामें पड़ जायँगे। अतएव उचित है कि श्रीनगर (गढ़वाल) के पहाड़ोंकी ओर चले जायँ, वहांके राजाके यहां आपको आश्रय भी मिलेगा और दुर्गम होनेके कारण औरंगजेबके उस स्थानतक पहुँचनेका भय भी नहीं है। वहां जाकर आप यहांकी घटनाओंपर सदा दृष्टि रखें और जब सुयोग मिले तब तुरन्त चले आवें।"

सुलेमानशिकोहकी अवस्था—इतना सुनतेही राजकुमार समझ गया अब इस जगह कोई हितैषी नहीं देख पड़ता; जयसिंह वा सेना किसी पर अपना अधिकार नहीं रहा। अतएव यह सोचकर कि अब यहां ठहरना अपनेको मृत्युमुखमें डालना है उसने सेनाको वहीं छोड़ पहाड़ोंकी ओर यात्रा की। कुछ सच्चे हितैषियों, अधिकांश

मनसबदारों, सैयदों और कितने ऐसे लोगोंने जिनकी अवश्यही जानेकी इच्छा थी इस यात्रामें उसका साथ दिया। शेष सेना जयसिंह और दिलेरखांके अधीन रही। इन दोनोंने उसके जानेसे पहले बहुत कुछ सामान उससे ले लिया। इतनेपर भी उनको सन्तोष नहीं हुआ तो उन्होंने उस बेचारेका बाकी माल असबाब लूटने लानेके लिये भी सिपाही भेजे! इस लूटमें मोहरोंसे लदा एक हाथी भी था जिसके निकल जानेसे स्वार्थी मनुष्य राजकुमारका साथ छोड़कर भाग आये। आगे बढ़ने पर कुछ देहाती गवारोंने और भी लूट खसोटकर दुःखित किया और कुछ लोगोंको मारा भी। इतना होने पर भी जैसे बन पड़ा वैसे सुलेमान शिकोह अपनी बेगम और बाल बच्चोंको साथमें लिये हुए किसी प्रकार श्रीनगर पहुँच गया। वहांके राजाने इसकी प्रतिष्ठाके अनुसार इनका स्वागत किया और कहा कि "जबतक आप इस प्रदेशमें हैं मेरी समग्र सेना आपकी सहायताके लिये तैयार है। यहां आपको किसी प्रकारकी चिन्ता वा भय न करना चाहिये।" राजकुमारको इस बातसे बहुत ढाढ़स हुआ। इसे यहां छोड़कर अब हम आगरेकी ओर ध्यान देते हैं।

दुर्गपर अधिकार—सामूगढ़की लड़ाईके तीन चार दिन बाद औरंगजेब और मुरादबख्श आगरेसे तीन मीलके अन्तर पर एक बागमें आ पहुँचे। वहांसे औरंगजेबने एक विश्वस्त, चतुर, नीतिकुशल और धूर्त व्यक्तिको शाहजहांके निकट भेजा। इसने वहां पहुँचकर औरंगजेबकी ओरसे पितृभक्ति और प्रीतिका वर्णन करनेके पश्चात् कहा कि "दाराशिकोहकी कजराई और बेजा खयालातके बायस ये जो वाकयात पेश आये उनके लिये औरंगजेब को बहुत ही रंज और अफसोस है। हुजूरकी तबीयत अब अच्छी

होती जाती है इसके लिये हुजूरकी खिदमतमें मुबारकबाद अर्ज करने और महज इस गरजसे कि जो कुछ इर्शाद हो उसकी तामील की जाय वह आगरेमें आया है ।”

शाहजहां इन बातोंका अभिप्राय समझता था । यद्यपि औरंगजेब के भेजे हुए आदमीको उसने यह उत्तर देकर लौटा दिया कि “उसकी सआदतमन्दी और फरमाँबरदारीसे हम निहायत राजी और खुश हैं ” परन्तु उसकी महदिच्छा और दाम्भिकतासे वह अनजान नहीं था । उस आदमीके चले जानेके पश्चात् औरंगजेबको अपने वशमें करनेकी इच्छासे उसने राज्यके सरदारोंको बुलवाया और अपनी चतुराई तथा बुद्धिके जालके फैलानेका विचार किया । यद्यपि अभी तक इस बातका अवसर था कि वह खुलेआम उसे बागी प्रमाणित कर देता, परन्तु ऐसा न करके उसने औरंगजेब जैसे धूर्त व्यक्तिके फँसानेके लिये केवल अपनी बुद्धिसे काम लिया । ऐसी अवस्था में उस जालमें स्वयं उसका फँस जाना जिसे उसने अपने पुत्रके लिये बिछाया था कुछ आश्चर्यकी बात नहीं है । अस्तु, शाहजहांने एक विश्वासी ख्वाजासराको औरंगजेबके पास एक पत्रके साथ भेजा जिसमें यह लिखा था कि “ बेशक दाराशिकोहने जो कुछ किया वह बेसमझी और नालायकीसे पुर था । तुमपर तो हम इन्तदाहीसे शफक्कत रखते हैं; पस तुमको हमारे पास जल्द आना चाहिये ताकि तुम्हारे मशविरेसे उन उमूरका इन्तजाम किया जाये जो इस गड़बड़के बायस खराब और अबतर पड़े हैं । ”—परन्तु औरंगजेबने इस पत्रपर विश्वास करके किलेमें चले जानेका साहस नहीं किया क्योंकि वह जानता था कि बेगमसाहब किसी समय बादशाहसे पृथक् नहीं होती और उसका इतना अधिकार है कि जो

कुछ वह चाहती है वही होता है और कदाचित् यह चाल भी उसी की है। उसे यह भी सन्देह हुआ कि बेगमसाहबने अस्त्र शस्त्रसे साज्जित कुछ ऐसी बलशालिनी और बड़े आकारवाली तातारी बांदियां (जो महलमें पहरा देनेके लिये नियुक्त की जाती हैं) नियत कर रखी हैं कि ज्योंही वह किलेमें जाय त्योंही उसपर टूट पड़ें। अतएव यद्यपि उसने अनेक बार बादशाहसे मिलनेकी प्रतिज्ञा की और कहलाया कि मैं अमुक दिन उपस्थित होऊंगा, परन्तु किसी न किसी बहानेसे वह बराबर टालताही रहा। इधर निरन्तर उद्योग करता रहा यहांतक कि बड़े बड़े प्रतिष्ठित सरदारोंके मनका हाल उसने मालूम कर लिया। जब सब बातोंका इच्छानुसार प्रबन्ध हो गया तब एक दिन सहसा उसके पुत्र मुहम्मद सुलतानने जाकर दुर्गपर अधिकार कर लिया जिससे सब लोग हक्के बक्के रह गये। इस उत्साही और साहसी युवकने कुछ सिपाही पहलेहीसे दुर्गके आस पास लगा रखे थे। निदान इस बहानेसे कि बादशाहके पास कुछ सन्देसा लेकर जाता हूं वह सहसा उन सिपाहियोंपर झपट पड़ा जो फाटक पर नियुक्त थे। इस समय उसके जो सिपाही इधर उधर छिपे थे झटपट आ पहुँचे और दुर्गवालोंको जिन्हें इस होनेवाली आकस्मिक घटनाका स्वप्नमें भी ध्यान नहीं था हराकर उन्होंने वहां अपना अधिकार कर लिया।

जिसके पकड़नेके लिये वह इतने दिनोंसे घात लगा रहा था अब स्वयं उसका कैदी बन गया यह देखकर शाहजहां जितना घबराया और भयभीत हुआ होगा वह स्वयं प्रगट है। कहते हैं कि अभागे बादशाहने कैद होते ही मुहम्मदसुलतानके पास यह सन्देसा भेजा कि "मैं तुमसे तख्तकी कसम खाकर कहता हूं और कुरान मजीद मेरे तुम्हारे

दरम्यान है कि अगर तुम इस वक्त ईमानदारी बतोगे तो मैं तुम्हींको बादशाह बना दूंगा। इस मौकेको गनीमत जानकर हाथसे न जाने दो, फौरन चले आओ और दादाको कैदसे छुड़ा लो। याद रखो कि इससे सवाबे-आखिरतके अलावे दुनियामें भी तुमको एक दायमी नेकनामी हासिल रहेगी।"

लोगोंका कथन था कि यदि मुहम्मद सुलतान जरा साहस करके शाहजहांका कहना मान लेता तो कदाचित् सब कुछ हो जाता क्योंकि अबतक भी लोगोंके हृदयमें बादशाहकी भक्ति और प्रतिष्ठा बहुत कुछ बाकी थी। यदि राजकुमार उसे दुर्गके बाहर निकलने देता और वृद्ध बादशाह कुछ सेना लेकर स्वयं औरंगजेबपर आक्रमण करता तो सम्भव था कि सब सैनिक आज्ञा मानकर उसकी सहायता करते, राज्यके बड़े बड़े लोग सच्ची प्रभुभक्ति दिखाते और औरंगजेब भी पिताके विरुद्ध युद्धक्षेत्रमें जानेका साहस न करता, बल्कि उसे सन्देह होता कि कदाचित् ऐसा करनेसे सब लोग मुझसे अलग हो जायँगे और स्वयं मुरादबख्श साथ छोड़ देगा।

सब लोगोंका इस विषयमें भी एक मत था कि समूगढ़की लड़ाई और दाराके भागनेके पश्चात् जैसी भूल शाहजहांसे हुई थी वैसीही भूल इस समय मुहम्मदसुलतानसे हुई। अब इस कारण कि मैंने यह बात उठाई है यह भी कह देना उचित है कि कुछ राजनीतिज्ञोंका यह मत भी था कि दाराके पराजयके पश्चात् बादशाहने महलमेंही बैठे रहकर छलसे औरंगजेबको अपने वशमें करना विचारकर बुद्धिमानी की। यह तो एक साधारण बात है कि परिणाम देखकर लोग किसी उपायकी प्रशंसा या निन्दा करने लगते हैं। चाहे उपाय कैसाही कच्चा और निर्बल रहा हो जब उसका परिणाम

भला हो जाता है तब लोग कहने लगते हैं कि देखो अमुकने कैसा अच्छा ढंग सोचा कि जिसका यह शुभ फल मिला। अतः शाहजहाँ का प्रीति और शुभेच्छा दिखाकर औरंगजेबको अपने वशमें कर लेना कुछ असम्भव नहीं था। यदि ऐसा हो जाता तो उसकी बुद्धि और समझकी लोग वैसेही प्रशंसा करते जैसे इस समय उस-पर यह दोष लगाते थे कि यह बुद्धिहीन बुड्ढा एक ऐसी स्त्री (बेगम-साहब) के कहने पर चलनेसे इस दशाको पहुँचा जो केवल ईर्षा और डाहके आवेशमें अन्धी हो रही थी और यह समझे बैठी थी कि वह चतुर काक (औरंगजेब) जब किलेमें हमसे मिलने आवेगा तब उस पक्षीकी भांति जो स्वयं पिंजरेमें आ जाता है फँस जायगा। अस्तु, अब मुहम्मद सुलतानको देखिये कि उसके विषयमें यहांके राजपुरुष कहते थे कि राजगद्दी उसे अनायास मिलती थी पर उससे वह ली नहीं गई। यदि वह शाहजहांका कहना मानता तो "एक पन्थ दो काज" के अनुसार उसे राजगद्दी तो मिलतीही ऊपरसे दादाको कैदसे छुड़ा देनेकी प्रशंसा भी प्राप्त होती।—ऐसा न होता (जैसा हुआ) कि ग्वालियरके दुर्गमें कैदीकी भांति उसे अपने दिन बिताने पड़ते।

शाहजहाँका कैद होना—यद्यपि कुछ लोग यह भी अनु-मान करते हैं कि सुलेमानशिकोहने पितृधर्म्म पर दृष्टि रखकर शाहजहांकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की, परन्तु सम्भवतः ऐसा जान पड़ता है कि उसको बादशाहकी प्रतिज्ञाका विश्वास नहीं हुआ। उसने यह भी सोचा कि ऐसे चतुर और प्रवीण मनुष्यसे जैसा कि औरंगजेब है लड़ाई मोल लेना एकदम व्यर्थ और सरासर भयंकर है। अस्तु राजकुमारका वास्तविक विचार चाहे कुछ भी रहा हो, उसने

शाहजहांकी बात नहीं मानी और यह बहाना करके उसके निकट जाना भी अस्वीकार कर दिया कि "मुझे औरंगजेबकी तरफ से हुजूरमें हाजिर होनेकी इजाजत नहीं है बल्कि ताकीदी हुक्म यह है कि किलेके कुल दरवाजोंकी कुञ्जियाँ खुद अपनी सुपुर्दगीमें लेकर मैं यहांसे बहुत जल्द वापस जाऊँ; क्योंकि वे हुजूरकी कदम्बोसीके निहायत मुश्ताक हो रहे हैं और सिर्फ इतनीही देर है कि इस तरफसे इतमीनान हो जाय तो फौरन हाजिर हो जायँ।"—अब दो दिनतक तो शाहजहां कुञ्जियोंके देनेमें आगा पीछा करता रहा किन्तु जब उसने देखा कि सब लोग उसे छोड़ छोड़कर चले जा रहे हैं बल्कि थोड़ेसे जो उसके निजके संरक्षक थे वे भी चले गये और बचावकी कुछ आशा न रही तब विवश होकर उसने दुर्गकी तालियां उसे देदीं और कहा कि "अब तो औरंगजेबको जरूरही आना चाहिये और समझदारी भी इसीमें है कि वह आकर जल्द हमसे मिले, क्योंकि सल्तनतके बाज जरूरी इसरार हम उसको समझाना चाहते हैं।"—परन्तु वह अब भी धूर्त्तता और चतुराईसे नहीं चूका! स्वयं न आकर उसने तुरन्त एतबारखाँ नामक अपने एक विश्वासी अनुचरको किलेदार नियुक्त किया जिसने यहां पहुँचतेही सब बेगमों, बड़ी राजकुमारी बेगमसाहब और स्वयं बादशाहको कैद कर लिया, बल्कि किलेके कई द्वार एकदम बन्द करा दिये। शाहजहां और उसके शुभचिन्तकोंका बाहर आना जाना तो कहां, उनकी बातचीत और पत्रव्यवहार तक बन्द हो गये! शाहजहांको किलेदारके पास बिना सूचना भेजे अपने कमरेसे बाहर निकलने तकका अधिकार न रहा!

इस अवसर पर औरंगजेबने पिताको एक पत्र लिखा जो बन्द

किये जानेसे पहले जान बूझकर सब लोगोंको सुनाया गया। उस पत्रमें यह बात लिखी थी,—"यह बेअदबी मुझसे इसलिये सरजद हुई है कि हुजूर जाहिरा मेरी निस्बत इजहारे-उल्फत व मेहरबानी फरमाते थे और यह इर्शाद होता था कि दाराशिकोहके तौर व तरीकसे हम सख्त नाराज हैं मगर मुझे पुख्ता खबर मिली है कि हुजूरने अशर्फियोंसे लदे हुए दो हाथी उसके पास भेजे हैं जिनसे वह नई फौज तैयार करलेगा और इस खूँरेज लड़ाईको तवालत देगा। पस हुजूरही गौर फरमाएँ कि मुझसे इन हरकतोंके जो फर्जन्दोंके मामूली तरीकके खिलाफ और सख्त मालूम होती हैं सरजद हो जाने का बायस क्या दाराशिकोहकी खुदसरी ही नहीं है? इन बातों का सबब कि हुजूर कैद किये गये और मैं फर्जन्दाना खिदमत बजा लानेके लिये इतनी देरतक हुजूरकी खिदमतमें हाजिर नहीं हो सका क्या वही नहीं है?—मैं हुजूरसे बकमाल माजरत इल्तिजा करता हूं कि मेरी इस हरकतकी ताज्जुबअंगेज जाहिरी सूरतपर ख्याल न फर्माकर सिर्फ चन्द रोजके लिये सब्रके साथ इसे बर्दाश्त करें। फिर ज्योंही दाराशिकोह चैन व अमनमें खललन्दाज होने और हुजूरको और मुझको तकलीफ पहुँचानेके काबिल न रहेगा त्योंही मैं खुदबखुद किलेकी तरफ दौड़ा चला आऊंगा और हुजूरके कैद-खनेका दरवाजा अपने हाथोंसे खोलकर हाथ जोड़कर अर्ज करूंगा कि अब कुछ रोक टोक नहीं है।"

मैंने सुना कि शाहजहांने वास्तवमें अशर्फियोंसे लदे हुए हाथी उसी रातको दाराशिकोहके पास भेजे थे जब कि उसने देहलीकी ओर प्रस्थान किया था और इस बातकी सूचना रोशनआरा बेगम ने औरंगजेबको दी थी। यह रहस्य भी उसीने बतलाया था कि

यदि दुर्गमें आओगे तो तातारी बांदियां तुमपर आक्रमण करेंगी। यह भी कहा जाता है कि बादशाहने दाराको जो पत्र लिखे थे उनमें से कई पत्र किसी प्रकार औरंगजेबके हाथ लग गये थे।

तथापि बहुतसे बुद्धिमान् और सूक्ष्मदर्शी लोग इन बातोंपर विश्वास नहीं करते; वे कहते हैं कि ये पत्र जिनको (जैसा कि कहा जाता है) औरंगजेबने किसी प्रकार पा लिया और सर्वसाधारणको सुनाया था बिल्कुल झूठे और बनावटी थे। औरंगजेबने केवल इस लिये इनको प्रगट किया था कि जिसमें शाहजहांके शुभचिन्तक और सहायकगण जो उसके अनुचित व्यवहारोंसे असन्तुष्ट हो रहे थे ठंडे पड़ जायँ। अस्तु सत्य बात चाहे कुछ भी हो, इस बातका निश्चय है कि जब बादशाह इस कठोर रीतिसे कैद हो गया तब प्राय: सभी उमरा औरंगजेब और मुरादके दरबारमें सलाम करनेके लिये उपस्थित हुए। शोक! उस बेचारे वृद्ध और अत्याचार-पीड़ित बादशाहके पक्षमें किसी अमीर वा सरदारने हाथ पांव नहीं हिलाये और किसीके भी फूटे मुँहसे कोई बात न निकली! ये उमरा उन भयंकर अत्याचारियोंके आगे शिर झुकाने जाते थे जिन्होंने उनके स्वामी और पालकके साथ ऐसा कठोर बर्ताव किया था। विशेष शोक इस बातका है कि वेही लोग ऐसा करते थे जो न केवल बादशाहके यहां पलकर प्रतिष्ठित और द्रव्यवान् हुए थे वरञ्च जिनको शाहजहांने एकदम गुलामीसे मुक्तकर उच्च पदोंपर नियुक्त किया था! हां, दानिशमन्दखां आदि कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने औरंगजेब वा बादशाह किसीका पक्षपात नहीं किया, पर ऐसोंकी संख्या बहुत ही कम थी; औरंगजेबकेही आगे शिर झुकानेवाले प्राय: सब थे।

इतने पर भी जब मैं इस दशाका विचार करता हूं कि भारतवर्षके उमरा फ्रान्स आदि योरपीय देशोंकी भाँति किसी सम्पत्तिके स्थायी मालिक नहीं समझे जाते वरन् जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं कि "दरबारियोंको जो भूमि दी जाती है वह केवल पेन्शनकी भांति और उनके निर्वाहके लिये; और जो कुछ उनको दिया जाता है उसका बढ़ाना घटाना या उसे वापस कर लेना बादशाहकी इच्छापर निर्भर करता है" तब मैं इन कृतघ्न उमरावों इतनी निन्दा नहीं करता; क्योंकि जब इनसे इनकी भूमिका अधिकार ले लिया जाता अथवा जो कुछ इनको वार्षिक मिलता है वह बन्द कर दिया जाता है तब ये बड़ी दुरवस्थामें आ पड़ते हैं; यहांतक कि थोड़ासा ऋण भी इनको उस समय कहींसे नहीं मिल सकता।

अस्तु, पिताकी ओरसे निश्चिन्त हो कर दोनों युवराजोंने दरबारियोंकी भेंट स्वीकार की; अपने मामूँ शाइस्ताखांको आगरेकी सूबेदारीका पद सौंपा और राजकोषसे व्ययका प्रबन्ध करके दारा की खोजमें आगरेसे बाहर प्रस्थान किया।

मुरादका कैद होना—जिस दिन ये लोग सैन्यके सहित आगरेसे कूंच करनेको थे उस दिन मुरादके मित्रों और विशेषकर उसके हितैषी ख्वाजा शाह अब्बासने उसे आगरे और देहलीके पड़ोसमेंही रहनेकी सलाह दी। शाहअब्बासने उससे कहा कि "आपको मय अपने लश्करके आगरे या देहलीसे दूर नहीं जाना चाहिये। औरंगजेबकी ये बड़े अदब आदाबकी बातें जो बेहद मीठी मालूम होती हैं फरेब और दगाबाजीका निशान हैं। फिर जब कि हर खासो आम बल्कि खुद वह भी इस बातको तसलीम करता है कि अब बादशाह आप हैं तो यह क्योंकर मुनासिब है कि आप आगरे और

देहलीके नजदीक न रहकर कहीं दूर चले जायँ ? पस, मेरी रायमें आप उसीको दाराशिकोहका पीछा करनेके लिये जाने दें।" –यदि मुराद इस बुद्धिमानीसे भरे हुए उपदेशपर ध्यान देता तो औरंगजेबके आगे अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित होतीं, परन्तु उसे तो उन व्यर्थ प्रतिज्ञाओं और कसमों पर पूरा भरोसा था जो बीचमें कुरान रखकर बहुत बार परस्पर की गई थीं। आखिर दोनोंने आगरा परित्याग कर देहलीकी ओरका रास्ता लिया।

जिस समय वे मथुरामें पहुँचे (जो कि आगरेसे तीस मीलपर यमुनाके किनारे है) तो मुरादके मित्रोंने जो इस बीचमें बहुत कुछ देख और सुन चुके थे विवश होकर परस्पर यह सलाह की कि एक बार फिर उसे समझाना चाहिये, आगे मानना या न मानना उसके अधीन है। निदान उसके पास जाकर उन्होंने कहा कि हमको विश्वसनीय मार्गसे विदित हुआ है कि औरंगजेबकी वास्तवमें कुछ बुरी इच्छा है और किसी भयंकर कार्यके कर डालनेके लिये वह बहुत कुछ उपाय कर चुका है। अतएव उससे मिलनेके लिये खास उसकी मण्डलीमें आपका जाना उचित नहीं है; विशेषकर आजकी रातको तो कदापि न जाइये। इस आपत्तिके टालनेका सबसे सहज उपाय यह है कि शरीरके अस्वस्थ होनेका बहाना कर दीजिये। यह सुनकर जैसा कि नियम है वह स्वयं कुछ आदमियोंके साथ आपके पास चला आवेगा।

मुरादके हितैषियोंने उसे इस प्रकारकी बातें समझाई, पर इन बातोंका उसपर कुछ भी असर नहीं हुआ; उनके निवेदनपर उसने जरा भी ध्यान नहीं दिया; क्योंकि उस समय वह एक ऐसी दशामें था कि मानों किसीने उसपर जादू कर दिया था। अपने

शुभचिन्तक मित्रोंका उपदेश न मानकर उसने उसी रातको औरंग-जेबके कम्पमें जाकर भोजन करनेका न्योता स्वीकार कर लिया। इधर औरंगजेबको पक्का विश्वास था कि मुराद अवश्य निमन्त्रणके अनुसार आवेगा; अतः उसने मीरखां तथा तीन चार अन्य अभिन्नहृदय मन्त्रियोंसे सलाह करके निश्चय कर लिया था कि किस प्रकार मुरादको विवश करना चाहिये।

जब सरलहृदय मुराद वहां पहुंचा तब औरंगजेबने और दिनों की अपेक्षा अधिक आदर सत्कारसे उसका स्वागत किया, बड़ी प्रसन्नता प्रगट की और अपने हाथोंसे उसके मुखपरकी गर्द तथा पसीना पोंछा। भोजनके समय वह हँसी मजाक और आनन्दकी अनेक बातें करता रहा। इससे निश्चिन्त होनेके पश्चात् जब काबुली और शीराजी मदिराके पात्र उपस्थित किये गये तब धीरेसे उठ और मुस्कुराकर उसने मुरादसे कहा—"हजरतको मालूम है कि मैं अपने मजहबी खयालातके बायस इस ऐशो निशातकी सुहबत में मौजूद नहीं रह सकता, ताहम ये लोग जो इस पुरलुत्फ जल्सेके शरीक हैं और मीरसाहब व दीगर मुसाहिब आपकी खिद्मतगुजारी के लिये हाजिर रहेंगे।"—एक तो मुराद स्वयं मदिराका प्रेमी था, तिसपर ऐसी आनन्दमयी मण्डली और मद्यके सुन्दर पात्र देखकर उसे और भी उत्साह हुआ। उसने यहांतक मदिरा पी यहांतक पी कि एकदम बेहोश होकर लेट गया। औरंगजेबकी भी यही इच्छा थी। उसी समय उसके नौकर इस बहानेसे विदा कर दिये गये कि अब आप लोग जायँ, इनको यहीं आरामसे सोने दें। इसके पश्चात् मीरखांने उसके सब अस्त्र शस्त्र (तलवार, खञ्जर इत्यादि) अपने अधिकारमें कर लिये। थोड़ी देरके बाद औरंगजेब भी उसे इस अनु-

चित नींदसे जगानेके बहाने आया और सब पिछला आदर सम्मान भूलकर पहले तो उसने कई ठोकरें मारीं और जब उसने कुछ आँखें खोलकर देखा तब वह तिरस्कारपूर्वक कठोर शब्दोंमें बोला,—"बड़ी शर्मकी बात है कि तुम बादशाह होकर ऐसे गाफिल और बेखबर हो जाओ। भला दुनियाके लोग तुमको बल्कि मुझको भी क्या कहेंगे!" इतना उससे कहकर उसने अपने आदमियोंसे कहा—"इस बदमस्तके हाथ पांव बांधकर खिलवतखानेमें ले जाओ ताकि नशा उतरनेतक यह इस बेशर्मीका सोना वहीं सोये।" इस आज्ञाका तुरन्त पालन हुआ। उसी क्षण पांच छः मनुष्योंने जो अस्त्र शस्त्रसे सज्जित थे उसे आ दबाया। उस समय यद्यपि मुराद बहुत चिल्लाया, बहुत बलप्रयोग कर उसने अपना बचाव करना चाहा, पर उसके पांवोंमें बेड़ियां और हाथोंमें हथकड़ियां डाल ही दी गई और लोग उसे अन्दर लेही गये।—यद्यपि ये बातें बहुत ही गुप्त रीतिसे की गई थीं तथापि मुरादबख्शके उन सेवकोंपर प्रगट हुए बिना नहीं रह सकती थीं जो बहानेसे बाहर भेज दिये गये थे। जब उनके कानों तक इसके चिल्लानेका शब्द पहुंचा तब उन्होंने कोलाहल मचाना आरम्भ किया और भीतर घुसकर बलपूर्वक उसे छुड़ा ले जाना चाहा; परन्तु उन्हींके दलके मीर आतिशकुलीखांने जिसको औरंगजेबने कुछ देकर पहलेहीसे अपने वशमें कर रखा था उनको समझा और धमका कर शान्त कर दिया। उधर सेनामें यह सम्वाद पहुँचते ही सब सिपाहियोंके मनमें सन्देह हुआ कि औरंगजेब जब इतना कार्य्य कर चुका तब कहीं वह सहसा चढ़ाई न कर दे। उनका सन्देह मिटानेके लिये कुछ लोग रातहीको भेज दिये गये जिन्होंने यह प्रसिद्ध कर दिया कि—"औरंगजेबके डेरेमें जो

यह घटना हुई है वह कुछ बड़ी बात नहीं है; क्योंकि हम लोग भी वहीं वर्त्तमान थे। बात यह है कि मुराद् बहुत मंदिरा पीकर अचेत हो गया है और नशेमें सबके प्रति अनुचित शब्दोंका व्यवहार करता है। ऐसा कोई व्यक्ति वहां नहीं था जिसको उसने गालियां न दी हों; यहांतक कि औरंगजेबके विषयमें भी उसने बहुत तिरस्कार और अपमानसूचक बातें कही हैं। संक्षेप यह है कि जब वह बहुत बकने झकने लगा और किसी प्रकार शान्त न हुआ तब उसको एक दूसरे स्वतन्त्र खेमेमें बन्द करना आवश्यक हुआ; परन्तु कल प्रातः काल होशमें आने पर वह पुनः अपने स्थान और पद पर दिखाई देगा।"—एक ओर जिस समय सिपाही इस प्रकारकी बातोंसे समझाये गये उस समय दूसरी ओर बड़े बड़े अधिकारियोंको उच्च आशाएँ दी गईं, घूस तककी नौबत आई और सारी सेनाका मासिक वेतन बढ़ा दिया! निदान सुबह होते होते वह कोलाहल और आन्दोलन जो अब तक हो रहा था एकदम शान्त हो गया—उसका चिन्हमात्र भी शेष न रहा। कारण यह कि ऐसे लोग बहुत कम थे जो इन बातोंका गूढ़ मर्म्म न समझते हों। अस्तु, जब यह बन्दोबस्त हो चुका और औरंगजेबने देखा कि अब कुछ चिन्ता नहीं है तब उसने मुरादको एक जनानी अमारीमें बन्द करके देहली भेजा जहां पहुँचने पर वह सलीमगढ़ नामक दुर्गमें जो यमुनाके मध्यमें है (अब टूटी फूटी अवस्थामें है) कैद किया गया।

दाराके पीछे धावा—अब शाहअब्बास ख्वाजाके अतिरिक्त (जिसके कारण औरंगजेबको कुछ कठिनाइयोंमें पड़ना पड़ा) मुरादकी ओरका कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसने औरंगजेबकी सेवामें आकर उसका पक्ष ग्रहण करना न स्वीकार किया हो। निदान

उसकी सेनाको भी अपने दलमें मिलाकर उसने दाराके पीछे धावा किया जो बड़ी शीघ्रतासे लाहोरकी ओर भागा जाता था। दाराकी इच्छा लाहोरमें पहुंच और वहांकी किलेबन्दी करके अपने मित्रों और शुभचिन्तकोंके एकत्रित करनेकी थी; परन्तु उसका यह प्रबल शत्रु इस भांति उसके पीछे पड़ा था कि लाहोरमें किलेबन्दी करनेका अवकाश न पाकर उसे मुलतानकी ओर भागना पड़ा। औरंगजेबने वहां भी उसको जमने नहीं दिया। इस धावेमें औरंगजेबकी जिस बुद्धि और कार्य्यपटुताका परिचय मिला वह निस्सन्देह प्रशंसनीय है; अर्थात् यद्यपि गर्मीकी ऋतु थी और असह्य गर्मी पड़ रही थी तथापि उसकी सेना रात दिन बराबर आगे बढ़ती ही चली जाती थी और वह स्वयं सिपाहियोंका साहस तथा उत्साह बढ़ानेके लिये थोड़ेसे मनुष्योंके साथ प्रायः चार पांच कोस सेनाके आगे आगे चलता था। इसके अतिरिक्त एक साधारण सिपाहीकी भांति बुरे भले पानी और रूखी सूखी रोटी पर सन्तोष करता और रातको अमीरी ढंगसे पलंगपर न सोकर केवल सामान्य बिस्तर बिछाकर उसीपर लेट रहता था।

इस देशके राजपुरुष कहते हैं कि दारा लाहोर छोड़नेके पश्चात् काबुलकी ओर नहीं बढ़ा यह उसने बड़ी भूल की। उसके हितैषियों ने काबुल जानेके विषयमें उसे बहुत कुछ समझाया था पर सदाके अनुसार इस बार भी न जाने क्यों उसने उनकी बातोंपर ध्यान नहीं दिया। इस समय काबुलका अमीर महाबतखां नामक भारतवर्षका एक बड़ा जबर्दस्त और वृद्ध मनुष्य था। औरंगजेबसे उसकी अमित्रता थी। उसके अधीन दश सहस्रसे भी अधिक लड़ने भिड़नेवाले ऐसे मनुष्य थे जो अफगानों उजबकों और ईरानियोंके विरुद्ध तुरन्त

रणक्षेत्रमें आ सकते थे। दाराके पास धन रत्नकी कमी नहीं थी, अतः यदि वह वहां जाता तो अवश्य महाबतखां और वहांके सैनिकपुरुष प्रसन्नतापूर्वक उसका पक्ष ग्रहण करते। इन लाभोंके अतिरिक्त ईरान और उजबक देश भी वहांसे निकट होते और इन देशोंमें उसे आश्रय मिल सकता। दाराको इस समय इस बातका स्मरण करना उचित था कि बादशाह हुमायूँको जब शेरशाह सूरने (जो पठान जातिका नरेश था) हराकर भारतवर्षके बाहर निकाल दिया था तब उसने ईरानियोंहीकी सहायतासे पुनः राज्यलाभ किया था। पर अभागा दारा तो स्वभावसेही ऐसा था कि विद्वान् और समझदार लोगोंके उपदेशका मूल्य नहीं समझता था। निदान इस बार भी उसने ऐसाही किया कि काबुल न जाकर वह सिन्धुदेशको चला गया और वहां जाकर उसने ठट्ठके प्रसिद्ध सुदृढ़ दुर्गमें आश्रय लिया जो सिन्धुनदके मध्यमें है।

जब औरंगजेबको दाराकी इच्छाका पता लग गया तब उसने सोचा कि अब उसका पीछा करना निष्प्रयोजन है। यह निश्चय कर कि वह काबुलकी ओर नहीं जाता है उसके मनका एक विशेष खटका और सन्देह मिट गया और मीरबाबा नामक अपने दूधभाई की अधीनतामें केवल सात आठ सहस्र मनुष्योंको उसके पीछे भेज कर वह उसी शीघ्रतासे आगरेको लौटा जिस शीघ्रता और तेजीसे यहांतक आया था। इस समय वह यह सोच सोचकर बहुत चिन्तातुर हो रहा था कि उसकी अनुपस्थिति से राजधानीमें न जाने क्या क्या घटनाएँ संघटित हो गई होंगी; और रह रहकर उसे इस बातकी शंका होती थी कि सम्भव है मैदान साफ देखकर जयसिंह, यशवन्तसिंह वा और कोई बलवान् राजा बादशाहको कैदसे छुड़ा दे,

या सुलेमान शिकोह श्रीनगरनरेश और सैन्यसहित पहाड़ोंसे उतर आवे, या सुलतान शुजा आगरे पर चढ़ाई करनेका साहस कर बैठे, इत्यादि। यहांपर एक घटनाका हाल दृष्टान्तकी रीति पर लिखा जाता है जिससे पाठक उसकी कार्य्यपटुताका परिचय पा सकेंगे।

जब कि औरंगजेब उसी तेजीके साथ मुलतानसे लाहोरको लौट रहा था जिस तेजीसे गया था उसने राजा जयसिंहको चार पांच सहस्र धीर योद्धा राजपूतोंके साथ अपनी ओर बढ़ते सुना। इससे वह बहुत ही आश्चर्यान्वित और चकित हुआ। वह इस समय पूर्वके अनुसार थोड़ेसे सिपाहियोंके साथ अपने सैन्यदलसे कई कोस आगे आगे चल रहा था; अतः जयसिंहके आनेका सम्बाद सुनकर उसको ध्यान हुआ कि वह इस समय बहुत बुरी स्थिति में है। बादशाहसे जयसिंहकी जैसी प्रीति थी वह उससे छिपी नहीं थी, इसलिये ऐसी अवस्थामें उसके मनमें इस बातकी शंका उत्पन्न होना कि राजा जयसिंह इस अवसरको जोकि शाहजहांके कैदसे छुड़ाने और उसके दुष्ट अत्याचारी पुत्रको दण्ड देनेके लिये बहुतही उपयुक्त है.हाथसे जाने नहीं देंगे कुछ आश्चर्यका विषय नहीं है। अनुमान किया जाता है कि वास्तवमें राजा साहब औरंगजेब के पकड़नेहीकी इच्छासे यहांतक आये थे, और इस अनुमानकी पुष्टि यह कहकर की जाती है कि अभी थोड़ीही देर पहले औरंगजेबको खबर लग चुकी थी कि राजा साहब देहलीमें थे और वहांसे अद्भुत तेजीके साथ कूच करते हुए यहां आये हैं। अस्तु, कुछ भी हो, मानसिक धैर्य्य और निश्चयात्मक बुद्धिसे औरंगजेबने भावी विपत्तिसे अपना बचाव कर लिया। उसने तानिक भी भय वा घबराहट नहीं प्रगट की, वरन् यह दिखानेके लिये कि उनके आनेसे उसे

बहुतही हर्ष हुआ है वह घोड़ा दौड़ाता और हाथसे संकेत करता हुआ कि शीघ्र आइये, शीघ्र आइये, आनन्दपूर्वक आगे बढ़ा । निकट पहुँचने पर उसने पुकार कर कहा—"सलामत बाशद राजाजी, सलामत बाशद बाबाजी ! खुशामदेद, खुशामदेद ! मैं बयान नहीं कर सकता कि मुझे आपके आनेका किस कदर इन्तजार था। बहुत ही खूब हुआ कि आप आ गये । अब तो लड़ाई खतम हो चुकी और दाराशिकोह तबाहो बरबाद खाक छानता फिरता है। मैंने मीरबाबा को उसके पीछे भेज दिया है और अगलब है कि वह जल्द गिरफ्तार हो जायगा। (इसके पश्चात् अत्यन्त प्रीति और विनय दिखाते हुए अपनी मोतियोंकी माला उनके गलेमें डालकर) हमारी फौज निहायत थकी हुई है इसलिये आपको बहुत जल्द लाहोर पहुँच जाना चाहिये। क्योंकि शायद वहां कुछ बेइन्तजामी और गड़बड़ हो जाय। मैं आपको वहांका सूबेदार मुकर्रर करता हूं और तमाम इख्तियार सौंपता हूँ। मैं भी बहुत जल्द आ मिलूंगा। हां रुखसत होनेसे पहले मुझे वाजिब है कि सुलेमानशिकोहके मुआमिलेमें आपने जो कारगुजारी की उसके लिये आपका शुक्रिया अदा करूं। लेकिन आपने दिलेरखांको कहां छोड़ा ? मैं उसे खूब सजा दूंगा। खैर आप जल्द लाहोरको तशरीफ ले जाइये। अच्छा खुदा हाफिज।

अहमदाबादमें दारा—अब दारा ठट्ठके दुर्गमें पहुँचा तब उसने एक ख्वाजासराको जो अपनी बुद्धिमत्ता और दृढ़ताके लिये प्रसिद्ध था वहांकी सूबेदारी अर्पण की, पठानों तथा सैयदोंको सेनामें भर्ती किया और पुर्तगीजों अंग्रेजों फरांसीसियों और जर्मनीवासियोंको तोपखानेमें नौकर रखा। इन सभोंसे उसने प्रतिज्ञा की कि यदि हम बादशाह हो जायँगे तो तुमको उच्च पदोंपर नियुक्त

करेंगे । इस प्रकार दुर्गका प्रबन्ध करके उसने अपना खजाना वहीं छोड़ दिया क्योंकि अभीतक उसके पास अशर्फियां और रुपये बहुत थे । इसके पश्चात् लगभग तीन सहस्र मनुष्योंके साथ सिन्धुनदके किनारे किनारे बड़ी शीघ्रतासे यात्रा करता हुआ राव कच्छके राज्यसे होकर वह गुजरातमें पहुँच गया और अहमदाबादके बाहर जाकर उसने डेरा डाल दिया। शाहनेवाजखां नामक एक व्यक्ति जो औरंगजेबका ससुर था और जिसकी उत्पत्ति मस्कटके प्राचीन राजकुलमें हुई थी उस समय अहमदाबादका सूबेदार था । वह चतुर और सभ्य था, पर कोई प्रसिद्ध योद्धा नहीं । उसने न जाने मनकी निर्बलता या दाराके सहसा आ पड़ने या और किसी कारणसे यथेष्ट सेना और युद्धकी सामग्री रहते भी नगरके द्वार खोल दिये । केवल इतना ही नहीं, वरन् वह बड़ी प्रीति और स्नेहसे दारासे मिला और बड़े सम्मान सत्कारसे उसने इसका स्वागत किया । दारासे लोगोंने कह दिया था कि यह मनुष्य कपटी है, पर उसकी प्रीति, सरलता, नम्रता और विनय पर विश्वास करके इसने अपने मनका सब भेद उसपर साफ साफ प्रगट कर दिया, बल्कि उन पत्रोंको भी दिखा दिया जो यशवन्तसिंह आदि शुभचिन्तकोंकी ओरसे उसके पास आये थे और जिनमें लिखा था कि हम जहांतक बनता है सेना एकत्रित करके शीघ्र सहायताके लिये आते हैं ।

इधर यह समाचार मिलतेही कि दारा अहमदाबादमें पहुँचकर वहांका मालिक बन गया है औरंगजेबको बहुत ही आश्चर्य और चिन्ता हुई । वह जानता था कि अभी दाराके पास बहुत रुपये हैं और ऐसी अवस्थामें न केवल उसके मित्र वरन् दूसरे राजे भी जो मेरी ओरसे असन्तुष्ट हैं अवश्य उसका साथ देंगे । वह यह भी

खूब समझता था कि अहमदाबाद जैसे सुदृढ़ स्थानसे दाराके पांव उखाड़ देनेकी कितनी अधिक आवश्यकता है; तथापि बन्दी शाहजहांको आगरेमें छोड़कर इतनी दूरके देशकी यात्रा करना उसे उचित नहीं मालूम होता था। इस बातका भी भय था कि अहमदाबाद जानेमें जयसिंह और यशवन्तसिंह जैसे प्रबल पराक्रमी राजाओंके राज्यसे होकर जाना पड़ेगा। इधर एक बड़े सैन्यदलके साथ सुलतान शुजाके आनेका समाचार भी उसने सुना; यह भी उसे विदित हो चुका था कि वह इलाहाबाद तक आ गया है। दूसरी ओरसे उसे सम्वाद मिला कि औरंगरेशकी सहायतासे इस लड़ाईमें योग देनेकी सुलेमानशिकोहने भी तैयारी की है। इस प्रकार चारों ओर कठिनाइयां देखकर उसने सोचा कि दाराको शाहनेवाजखांके साथ जिस अवस्थामें वह है उसी अवस्थामें छोड़कर शुजाकी चढ़ाई तुरन्त रोकनी चाहिये जो कि इलाहाबादमें गंगाके इस पार तक आ गया है।

औरंगजेबकी कठिनाइयां—खजुआ नामक एक छोटे गांवके निकट तालाबके किनारे उत्तम स्थान देखकर शुजाने वहीं डेरा डाल दिया। वहां डेरा डालके वह औरंगजेबके आनेकी बाट जोह रहा था जो ४—४॥ मीलके अन्तर पर एक नदीके किनारे आकर ठहरा था। दोनों छावनियोंके बीच लड़ाईके योग्य एक विशाल मैदान था। औरंगजेब लड़ाईके लिये आतुर हो रहा था अतः इस स्थानमें पहुँचनेके दूसरेही दिन सामान इस पार रखकर आक्रमण करनेके अभिप्रायसे वह नदीके दूसरे तटपर गया। उसी दिन प्रातःकाल मीरजुमला भी उससे आ मिला; क्योंकि दैवके अभागे दाराके प्रतिकूल होनेसे उसके कुटुम्बके लोग छुटकारा पागये थे और औरंगजेब

१२

के शुभके लिये उसके अब भी कैद रहनेकी आवश्यकता नहीं थी। अस्तु, जहांतक बन सका था मीरजुमला अपने साथ बहुतसे सैनिक भी इकट्ठे कर लाया था। सबेरेही लड़ाई आरम्भ हुई; पर शुजाकी इच्छा अपने पसन्द किये हुए और किलेबन्दीवाले स्थान से आगे बढ़कर मैदानमें जानेकी नहीं थी, अतएव जब जब शत्रु आक्रमण करते थे तब तब वह बड़ी चेष्टासे उनको मारकर पीछे हटा देता था। इससे औरंगजेबको कुछ कठिनता पड़ी। शुजाने सोचा था कि जब गर्मीके मारे घबराकर शत्रुदल नदीकी ओर लौटेगा तब सहसा उसपर टूट पड़कर हम लोग सहजमें विजय प्राप्त कर लेंगे। औरंगजेब अपने विपक्षीका यह विचार समझता था इस कारण वह पीछे नहीं हटा, वरन् लश्करको बराबर आगे बढ़ाने की चेष्टा करता रहा। परन्तु इतनेहीमें एक घबराहटमें डाल देनेवाली घटना सहसा संघटित हुई।

राजा यशवन्तसिंहने जो कुछ दिन पूर्व बड़े सद्भावसे औरंगजेब से आ मिले थे सहसा उसकी पिछली सेना पर आक्रमण कर दिया जिसका यह परिणाम हुआ कि वह तितरबितर होकर भाग गई और राजा साहबने खजाना तथा असबाब लूटना आरम्भ किया। तुरन्त यह सम्बाद चारों ओर फैल गया जिससे एशियाके सैनिकों के साधारण नियमके अनुसार सिपाहियोंको भय और घबराहटने आ घेरा। ऐसा समय आ गया तथापि औरंगजेबने धैर्य नहीं छोड़ा; उसने सोचा कि पीछे लौटनेसे सब आशाएँ धूलमें मिल जायँगी; इसलिये जैसे दाराके साथ युद्ध करनेमें उसने किया था वैसेही इस बार भी परिणाम तक दृढ़ रहनेका निश्चय किया; परन्तु प्रतिक्षण उसके सैनिकोंकी घबराहट और चिन्ता बढ़ती ही गई और शुजाने

इस अवसरको बहुतही उपयुक्त समझकर एक बहुत बड़ा आक्रमण किया। इतनेमें सहसा एक तीर लगनेसे औरंगजेबका महावत मारा गया जिससे हाथीका सम्हालना भी कठिन हो गया। यह देखकर वह उसपरसे उतरनेहीको था कि मीरजुमलाने जो निकट था उसे पुकारकर कहा—"हजरत, यह दकन नहीं है। क्या गजब करते हैं? क्या भागकर दकन जायँगे?" मीरजुमलाने आज दिन भर रणमें ऐसी कुशलता दिखाई थी कि लोग आश्चर्यमें आगये थे। इस समय सन्ध्या हो चली थी और लक्षण बुरे दीखते थे तथापि मीरजुमलाने औरंगजेबको हाथीसे उतरनेसे रोककर एक भयंकर परिणामसे बचा लिया। वास्तवमें इस समय चारों ओर निराशा ही निराशा दिखाई देती थी, स्वयं औरंगजेब प्रतिक्षण सोचता था कि अब मैं शत्रुओंके हाथोंमें पड़ा चाहता हूं; परन्तु भाग्यकी प्रबलता कैसी विचित्र है! मीरजुमलाकी बातोंसे उसे धैर्य्य आया और हाथीसे वह नहीं उतरा। थोड़ीही देरमें वह विजयी हुआ और जिस प्रकार समूगढ़की लड़ाई में एक छोटी बातके कारण दाराको युद्धक्षेत्रसे भागना पड़ा था शुजाको भी वैसीही एक घटनाके कारण अपने प्राण बचाकर रण-भूमिसे निकल जाना पड़ा।

जहांतक हो सके बहुत शीघ्र शत्रुओं पर विजय प्राप्त करनेके विचारसे सुलतान शुजा हाथीके नीचे उतरा, पर हाथीसे उतरतेही उसकी भी वही दशा हुई जो दाराकी हुई थी। यह नहीं कहा जा सकता कि जिस व्यक्तिने उसे यह सलाह दी थी उसने विश्वासघात किया था या सच्चे हृदयसे उसे यह सलाह दी थी। जो हो, उसके प्रधान सरदारोंमेंसे अलीवर्दीखां नामक सरदारने उससे हाथीके नीचे उतरनेको कहा और जिस प्रकार दाराको खलीलुल्लहखांने

यह सम्मति दी थी उसी प्रकार वह भी दौड़कर शुजाके पास गया और कुछ दूरहीसे हाथ जोड़कर बोला—"हुजूर इस वक्त हाथीपर ऐसी जानजोखोंमें क्यों बैठे हैं ? क्या गुलामोंका नहीं फरमाते कि दुश्मन भाग जाते हैं और अब सुस्तीसे उनका तअकुब न करना सरासर गलती है, पस जल्दी घोड़ेपर सवार होकर उनका पीछा कीजिये और फिर देख लीजिये कि हिन्दोस्तानका तख्त आपके कद्मोंके नीचे है और आप हिन्दोस्तानके बादशाह हैं।" निदान ऐसा करनेसे वही दृश्य उपस्थित हुआ जो समूहगढ़की लड़ाईमें दाराके सन्मुख हुआ था, अर्थात् ज्योंही शुजा सैनिकोंकी दृष्टि से लोप हुआ त्योंही सबके मनमें यह सन्देह उत्पन्न हुआ कि या तो वह मारा गया या धोखेसे शत्रुओंने उसे पकड़ लिया और उसी समय उसकी सेना ऐसी छिन्न भिन्न हो गई कि उसे पुनः एकत्रित करना असम्भव था ।

औरंगजेबकी आकस्मिक जीत देखकर राजा यशवन्तसिंह लूटके मालसेही सन्तुष्ट हो अपने राज्यको जानेके लिये आगरे आये। जिस समय वे आगरे पहुँचे उस समय नगरमें यह किम्बदन्ती उड़ रही थी कि औरंगजेब हारा और मीरजुमलाके साथ पकड़ा गया है। इसके अतिरिक्त यह खबर भी थी कि शुजा अपने विजयी सैन्यदलके साथ शीघ्र शीघ्र आगरेकी ओर आ रहा है। औरंगजेबके मामा तथा आगरेके अधिकारी शाइस्ताखांने इन किम्बदन्तियोंको सच माना और अपार भयके कारण विष पीकर प्राण देनेको वह तैयार हो गया। निस्सन्देह वह विष पी भी लेता यदि जनानखानेकी स्त्रियां उसपर न आ गिरतीं और प्याला छीनकर न फेंक देतीं। अस्तु, दो दिनतक आगरेके लोग लड़ाईके असली वृत्तान्तसे इतने

अनजान थे कि यदि राजा यशवन्तसिंह साहस करके इस बीचमें लोगोंको धमकाते और भविष्यके लिये कुछ अच्छा भरोसा देते तो अवश्यही शाहजहांको कैदसे छुड़ा सकते; पर यह बात वह अच्छी तरह जानते थे कि समय कैसा है स्थिति किस प्रकारकी है और ऐसे अवसर पर क्या करना चाहिये; अतः आगरेमें अधिक ठहरना और इन बखेड़ोंमें पड़ना उचित न समझकर वे पहले किये हुए विचारके अनुसार अपने राज्यको चले गये।

इधर औरंगजेबको यह चिन्ता हो रही थी कि राजा यशवन्तसिंह न जाने क्या कर रहे होंगे और प्रतिपल उसे ऐसा जान पड़ता था कि अब आगरे से विग्रहके समाचार शीघ्र आना चाहते हैं; अतएव शुजाका अधिक पीछा न करके उसने सैन्यादिके सहित जल्दीसे राजधानीकी ओर कूच कर दिया, पर यह कठिनता उपस्थित हुई कि उसको शीघ्र मालूम हो गया कि इस लड़ाईमे शत्रुओंकी कुछ अधिक हानि नहीं हुई, वरन् शुजाकी धनाढ्यता और उदारताकी बात सुनकर वे सब राजे जिनके राज्य गङ्गाके दोनों तटोंपर हैं उसकी सहायताके लिये अपनी सेनाएँ भेज रहे हैं। यह सम्वाद भी उसे मिला कि शुजा इलाहाबादमें अपने पांव जमाना चाहता है ताकि गङ्गाके इस प्रसिद्ध घाटको जो बङ्गदेशका द्वार समझा जाता है हाथसे न जाने दे।

ऐसी अवस्थामें औरंगजेबने देखा कि केवल दो व्यक्ति ऐसे हैं जिनसे इन कठनाइयोंमें सहायता मिल सकती है। एक उसका ज्येष्ठ पुत्र मुहम्मद सुलतान और दूसरा मीरजुमला। परन्तु इसके साथ ही वह यह भी जानता था जो व्यक्ति कोई प्रशंसनीय काम करता है तो प्रायः ऐसा होता है कि चाहे उसके परिश्रमका कुछही बदला

क्यों न दिया जाय उसे सन्तोष नहीं होता। वह देखही रहा था कि मुहम्मद सुलतान अभीसे स्वतन्त्र और निरंकुश रहना चाहता है और आगरेके दुर्गपर विजय पाने तथा शाहजहांको कैद कर लेनेसे उसके विचार बहुत बढ़ गये है। अब रहा मीरजुमला, सो यद्यपि औरंगजेब उसके साहस, गाम्भीर्य्य और सद्गुणोंकी मनमें प्रशंसा करता था तथापि उसके इन्हीं गुणोंको देखकर वह डरता भी था; क्योंकि एक तो समग्र भारतवर्षमें यह बात प्रसिद्ध थी कि मीरजुमला के पास बहुत धन है, तिसपर लोग यह भी उसके विषयमें खूब जानते थे कि वह समय पड़नेपर अपनी युक्ति नीति और बुद्धिसे कठिनसे कठिन काम भी कर सकता है। इन कारणोंसे औरंगजेब उसको भी किसी बातमें मुहम्मद सुलतानसे घटकर नहीं समझता था।

इसलिये यद्यपि ये कठिनाइयां ऐसी थीं कि किसी साधारण विचार के आदमीको अवश्य घबराहटमें डाल देतीं, परन्तु चतुर औरंगजेब ने एक ऐसी चाल चली कि उन दोनोंको राजधानीसे हटा भी दिया और दोनोंमेंसे कोई रुष्ट भी नहीं होने पाया। अर्थात् एक बड़ी सेना सुपुर्दकर उसने उन दोनोंको शुजासे युद्ध करनेके लिये भेजा। बिदा करते समय उसने मीरजुमलासे कहा "फतहके बाद बंगालके जर्खेज सूबेकी हुकूमत आपहीके कब्जेमें रहेगी, बल्कि आपके बाद आपका बेटा भी इस सूबेदारीका मुस्तहक समझा जायगा और गोकि आपकी खिदमतें बहुतसी इनायतोंके काबिल हैं मगर उनमेंसे बिलफेल एक यह है कि जब आप शुजापर फतह पा लेंगे तब "अमीरुलउमरः" का खिताब जो हिन्दोस्तानमें सबसे बड़ा खिताब है आपको अता किया जायगा।"

मीरजुमलासे इतना कहकर औरंगजेब मुहमम्मद सुलतानकी ओर पलटा और उससे उसने केवल इतना कहा कि "बेटा, खयाल करो कि मेरी औलादमें तुम सबसे बड़े हो और अपनेही कामपर जाते हो। इसमें शक नहीं कि तुमने बड़े बड़े काम किये हैं मगर सच पुछो तो अभी कुछ भी नहीं किया है। जबतक सुलतानशुजा को जो हमारे मुखालिफोंमें एक बहुत बड़ा शख्स है शिकस्त देकर पकड़ न लाओ तबतक सारेही काम अधूरे हैं।"

इतना कहकर औरंगजेबने मीरजुमला और मुहम्मद सुलतान को राजसी वस्त्र और अनेक हाथी घोड़े भेटमें दिये। अन्तमें जिस प्रकार बन पड़ा उसने मुहम्मद सुलतानकी बेगमको और मीरजुमलाके पुत्र मुहम्मद अमीनको अपने पति तथा पिताके साथ जानेसे रोक लिया। मुहम्मदसुलतानकी बेगमको, तो जो गोलकुण्डा-नरेशकी पुत्री थी उसने इस बहानेसे ठहरा लिया कि ऐसे उच्च कुलकी राजकुमारीका लड़ाईके समय सेनाके साथ जाना किसी प्रकार उचित और शोभाप्रद नहीं है—और मुहम्मद अमीन-खांको इस बहानेसे रोक लिया कि अभी उसकी उमर बहुत थोड़ी है और मुझे उसे देखकर बड़ा स्नेह मालूम होता है अतः मैं स्वयं उसकी शिक्षा आदिका प्रबन्ध करूंगा। पर वास्तवमें धूर्त्त औरंग-जेबने उनको इसलिये आगरेमें रोक लिया कि जिसमें दोनों शरीर-बन्धककी रीति पर यहां रहें और उनके कारण मीरजुमला वा मुहम्मदसुलतान किसी प्रकारका कपटाचरण न कर सकें।

अब शुजाका हाल सुनिये। उसे निरन्तर चिन्ता लग रही थी कि कदाचित् बङ्गालके निचले भागके वे राजे जो उसकी छीना झपटीसे अप्रसन्न हो रहे थे किसीके बहँकानेसे पीछे उपद्रव न खड़ा कर बैठें।

जब औरंगजेबके इन प्रबन्धोंकी उसे खबर लगी तब इलाहाबादसे डेरा डण्डा उठाकर वह बनारस और पटनेकी ओर चल पड़ा; क्योंकि उसे भय था कि सम्भव है मीरजुमला इलाहाबादके बदले किसी और घाटसे गङ्गाके पार उतरकर मेरे बङ्गदेशको लौट जानेका मार्ग बन्द करदे। इसी सन्देहसे पहले बनारस और पटने जाकर वह मुंगेरको चला गया जो गङ्गाके तटपर एक छोटा सा नगर है और एक ओर पर्वत तथा दूसरी ओर जंगल और नदी होनेके कारण उत्तम स्थान है; इसके अतिरिक्त बङ्गालका द्वार समझा जाता है। यहां पहुंचकर उसने स्थान दृढ़ करनेका प्रबन्ध किया और नगर तथा नदीके किनारेसे लेकर पहाड़ तक एक बड़ी गहरी खाई खुदवाई। इस घटनाके कई वर्ष बाद इस खाईको मैंने भी देखा था। अस्तु, इतना प्रबन्ध करके शुजा गंगाके घाटको रोके हुए शत्रुओंका मार्ग देख रहा था कि इतनेमें सहसा उसे यह दुःखदायी सम्बाद मिला कि वह सैन्यदल जो गङ्गाके किनारे किनारे बढ़ा आता था केवल धोखा देनेके लिये था और मीरजुमला उसके साथ नहीं है, वरन् वह उन राजाओंको सन्तुष्ट करके जिनके राज्य नदीके दाहिने तटों पर पर्वतोंमें हैं पर्वतोंको पार करता हुआ मुहम्मद सुलतान और कुछ सिपाहियोंके साथ राजमहलकी ओर इस इच्छासे जा रहा है कि हमारे पीछे हटनेका मार्ग रोककर हमको बङ्गालके भीतरकी ओर न जाने दे। अतः यह खाई आदि जो बड़े परिश्रम और प्रबन्धसे बनी थी ज्योंकि त्यों छोड़ देनी पड़ी। मुंगेर और राजमहलके बीच गङ्गाजी कई चक्कर और फेर खाकर गई हैं इससे यद्यपि बहुत कष्ट उठाना पड़ा तथापि वहांसे चलकर शुजा किसी प्रकार मीरजुमलासे कई दिन पहलेही राजमहल पहुंच गया; बल्कि वहां लड़ाईका सामान ठीक करनेका

महल पहुँचनेसे रोकना असम्भव है मीरजुमला और मुहम्मद सुलतान अपने बायें हाथ अनेक दुर्गम और भयानक मार्गोंसे होते हुए इस अभिप्रायसे गङ्गाकी ओर बढ़े कि अपने भारी तोपखाने और सैनिक आदिको भी जो जलमार्गसे आ रहे थे अपने साथ लेलें। निदान जब उन्होंने इतना काम कर लिया और उनके साथी उनको मिल गये तब राजमहलमें जाकर उन्होंने लड़ाई आरम्भ कर दी। पांच दिनतक शुजा खूब लड़ा, पर इसके पश्चात् जब उसने देखा कि मीरजुमलाके तोपखानेकी मारसे उसके मोर्चे (जो वृक्षोंकी डालियों और लकड़ियोंसे बुर्जकी भांति मट्टी और रेत भरकर बना लिये गये थे) नष्ट हुए जाते हैं और सोचा कि बरसातकी ऋतु निकट आ गई है उस समय इनकी और भी दुर्दशा होगी तब रातके अन्धेरेमें वह वहांसे निकल गया; पर दो तोपें जो बहुत भारी थीं वहीं छोड़ता गया। इधर एक तो मीरजुमला इस भयसे उसका पीछा न कर सका कि छापा मारनेकी इच्छासे कहीं वह उसकी घातमें न लगा हो दूसरे शुजाके सौभाग्यवश सवेरा होनेसे पहले ऐसी प्रबल वृष्टि हुई कि उसका पीछा करनेके लिये राजमहलकी ओर यात्रा करनेका विचार करना भी असम्भव होगया। यह वृष्टि बहुतही प्रबल और बरसातका आरम्भ थी जो बङ्गाल देशमें जुलाईसे अक्तूबर तक बहुतही अधिकता से होती है और मार्ग ऐसे खराब हो जाते हैं कि किसी चढ़ाई करने-वाली सेनाके चलनेयोग्य नहीं रहते। निदान लाचार होकर मीर-जुमलाको बरसातके समाप्त होनेतक राजमहलमें ठहरना पड़ा।

इस अवसरमें शुजाको जहां चाहे वहां ठहरकर अपने इच्छा-नुसार उपाय करनेका अच्छी तरह सुयोग मिल गया। उसने बहुत सी नई सेना नौकर रखली जिसमें अधिकांश पोर्चुगीज थे जो कुछ

तोपोंके सहित बङ्गालके उन प्रान्तोंमें आ गये थे जो नीचे की ओर हैं और बहुत हरे भरे फलवान् तथा सुन्दर होनेके कारण जहां प्रायः पश्चिम देशके निवासी आ बसते हैं। ऐसे समयमें वास्तवमें यह शुजाकी चतुराई और सुनीति थी कि उसने इन अपरिचित लोगोंके साथ उत्तम बर्ताव करके उनको अपनी सेनामें भर्ती कर लिया; क्योंकि पुर्त्तगीज असल और दोगले मिलाकर कमसे कम ९—१० सहस्र यहां वर्त्तमान थे और निरसन्देह उनसे शुजाको बहुत सहायता मिल सकती थी। उसने इस अवसर पर कुछ विशेषताके साथ उनके पादरियोंको भविष्यके लिये बहुत आशा दिलाई और पारितोषिकादिके अतिरिक्त यह भी कहा कि आपकी जहां इच्छा हो वहां अपने गिर्जे बनालें।

अभी बरसात नहीं बीती थी और मीरजुमला तथा मुहम्मद सुलतान राजमहलमेंही थे कि इतनेमें दोनोंमें कुछ अनबनाव हो गया। मुहम्मदसुलतान अपनेको समस्त सैन्यका अफसर समझने और मीरजुमलाको तिरस्कारदृष्टिसे देखने लगा। उसके आचार व्यवहार और बातचीतसे प्रकट होने लगा कि वह पिताकी भी कुछ अधिक परवा नहीं करता; बल्कि एक दिन उसने बड़े गर्वके साथ स्पष्ट कह भी दिया कि "आगरेके किलेकी दस्तयाबी मेरीही कोशिश और मिहनतसे हुई, पस अगर हजरत (औरंगजेब) इसके लिये किसी के ममनून हों तो उनको मेराही ममनून होना चाहिये।" इन बातों का परिणाम यह हुआ कि उसने पिताको अपनेपर बहुत रुष्ट कर लिया और फिर जब उसको उसके रुष्ट होनेका समाचार मिला तब इस भयसे कि कहीं वह पकड़कर कैद न कर लिया जाय केवल कुछ थोड़ेसे गिनतीके आदमी साथ लेकर राजमहलसे चल दिया। यहां

से चलकर उसने " अपनेको शुजाकी सेवामें उपस्थित किया।" परन्तु शुजाको इसकी बातोंका जरा भी विश्वास नहीं हुआ, उलटे उसे इस बातका सन्देह हुआ कि सम्भव है औरंगजेब और मीरजुमलाने मुझे मूर्ख बनानेके लिये यह चाल चली हो। अस्तु, मुहम्मद सुलतानकी बड़ी बड़ी प्रतिज्ञाओं और कसमोंपर विश्वास न करके उसने उसको अपनी सेनाका कोई बड़ा अधिपतित्व नहीं सौंपा, वरन् वह सदा उसकी चालकी जांच करता रहा। अन्तमें यह दशा हुई कि सुलतान शुजासे भी उससे बिगड़ गई और कई महीनोंके बाद निराश होकर वह फिर मीरजुमलाके पास गया। मीरजुमलाने थोड़े सत्कारसे उसे स्थान दिया और कहा कि " अगर्चे आपने बहुत बड़ा क़ुसूर किया है, मगर ख़ैर मैं बादशाहसे सिफारिश करके माफ़ीकी दरख्वास्त करूंगा।"

बहुत लोग कहते हैं कि औरंगजेबकेही कहनेसे मुहम्मदसुलतान शुजाके पास गया था क्योंकि औरंगजेब चाहता था कि उसके पुत्रको चाहे कैसी ही भयानक दशामें क्यों न पड़ जाना पड़े पर सुलतानशुजा अवश्य नष्ट हो जाय। यह बात चाहे सत्य हो या न हो और वास्तविक बात चाहे कुछ भी हो, पर जब औरंगजेबको मालूम हो गया कि मुहम्मदसुलतान राजमहलको लौट आया तब सुयोग देखकर कि अब इसे भी कारागारमें बन्द कर देनेका अच्छा बहाना मिल गया है सच्चा अथवा झूठा कोप प्रकट करते हुए उसने उसके पास एक ताकीदी आज्ञापत्र भेजा कि तुम तुरन्त देहलीको चले आओ। अब भाग्यहीन सुलतान मुहम्मद आज्ञा टाल सकताही नहीं था लाचार आगे बढ़ा पर ज्योंही गङ्गाके उसपार उतरा त्योंही हथियारबन्द सिपाहियोंके एक झुण्डने उसे घेरकर पकड़ लिया

और बलपूर्वक एक अमारीमें बन्द करके वे उसे ग्वालियर ले गये। मुझे विश्वास है कि उसकी आयुकी समाप्ति उसी स्थानमें होगी। (सन् १६७६ ई० की ५ वीं दिसम्बरको इसी दुर्गमें मुहम्मदसुलतान की मृत्यु हुई)

इस प्रकार अपने ज्येष्ठ पुत्रकी ओरसे निश्चिन्त होकर औरंगजेब ने द्वितीय पुत्र शाहजादा मुअज्जमसे कहा—" ऐसा न हो कि कहीं तुम भी सरकशी और बलन्दपरवाजीके खयालातमें भाईकी तरह हो जाओ और वही मुआमिला तुमको पेश आवे जो उसको पेश आया है। याद रखो कि सल्तनत एक ऐसा नाजुक मुआमिला है कि बादशाहोंको अपने सायेसे भी हसद और बदगुमानी हो जाती है; पस यह खयाल कभी न करना कि औरंगजेब भी अपने बेटोंसे वही कुछ देख सकता है जो जहांगीरने शाहजहांके हाथोंसे देखा था; या जिस तरह शाहजहांने तख्तोताज खो दिया औरंगजेब भी उसी तरह खो सकता है।" तथापि सब बातों पर विचार करके मैं कह सकता हूं कि औरंगजेबको सुलतान मुअज्जमकी ओरसे ऐसा सन्देह करना अकारण था; क्योंकि वह तो एक तुच्छ दाससे भी अधिक आज्ञाकारी बना रहता है। अस्तु, इस विषयमें मैं विशेष बातें आगे चलकर लिखूंगा; इस समय अन्य आवश्यक बातें लिखता हूं।

जिस समय आगरा और देहलीका यह हाल था उस समय बङ्गालमें लड़ाई पहलेकी तरह हो रही थी; लेकिन कुछ सुस्तीके साथ। जहां तक बनता था शुजा लड़ता था और उसका चतुर शत्रु मीर-जुमला गङ्गासे उतरने और अगणित नदी नालोंके पार करनेमें जैसा ठीक और समयोचित समझता था वैसा करता था। इस बीचमें

औरंगजेब आगरेमें थे; परन्तु अन्तमें जब मुरादबख्शको वह ग्वालियरके दुर्गमें भेज चुका तब उसने उन धोखेकी टट्टियोंको जो लोगोंको भ्रममें डाल रखनेके लिये खड़ी की गई थीं एकदम उठा दिया और सिंहासन पर बैठकर खुलेआम राज्यशासन करना आरम्भ किया। अब उसका सारा चित्त दाराको गुजरातसे निकाल बाहर करनेके उपायोंमें लगा था, पर उन कारणोंसे जो पहले बताये चुके हैं वह अपनी इस इच्छाको पूरा करना सहज नहीं समझता था। तौभी पीछे उसकी अगाध बुद्धि और सौभाग्यसे इस कामके लिये भी एक अच्छा अवसर उसके हाथ लग गया। उसका हाल यों है,—

राजा यशवन्तसिंहने घर पहुँचतेही उस धन सम्पत्तिसे जो खजुआकी लूटमें मिली थी एक बड़ी सेना एकत्रित करनी आरम्भ की और दाराशिकोहको लिख भेजा कि आप शीघ्र आगरेको चले आवें; मैं सैन्यके सहित रास्तेमें आपसे आ मिलूंगा।" इधर दाराने भी बहुत बड़ी सेना इकट्ठी कर ली थी, पर वह कुछ अच्छी नहीं थी; अतः राजा यशवन्तसिंहका इस आशयका पत्र पाकर वह इस आशासे अहमदाबादसे चल पड़ा कि जब मैं ऐसे नामी राजाके साथ राजधानीके निकट पहुँचूंगा तब मेरे शुभचिन्तकोंको मेरे झण्डेके नीचे आकर एकत्रित होनेका साहस हो जायगा। अस्तु यह सोचकर वह बहुत शीघ्र अजमेरमें आ पहुंचा पर राजा यशवन्तसिंह अपनी प्रतिज्ञाका पालन नहीं करसके। कारण यह हुआ कि राजा जयसिंहने यह सोचकर कि लड़ाईका रंगढंग देखनेसे औरंगजेबहीकी जीतकी आशा होती है उसको सन्तुष्ट करनेके लिये यशवन्तसिंहको दाराशिकोहका पक्ष छोड़नेकी सलाह देना उचित समझा और लिखा कि "आपने डूबते हुएके साथी बनानेमें क्या लाभ सोचा?

यदि आप इस विचार पर दृढ़ रहेंगे तो मेरी समझमें इससे कुछ लाभ तो होगा नहीं, उलटे कदाचित् आपको अपनी और अपने कुटुम्बकी दुरवस्था देखनी पड़ेगी और औरंगजेब आपको कभी क्षमा नहीं करेगा। और इसलिये कि मैं भी एक राजा हूं आपसे सविनय निवेदन करता हूं कि राजपूत वीरोंके रक्तकी नदी व्यर्थ न बहाइये और ऐसा न समझिये कि और राजे भी आपका साथ देंगे; क्योंकि मैं ऐसा कभी नहीं होने दूंगा। यह एक ऐसी बात है जो प्रत्येक हिन्दूसे सम्बन्ध रखती है, इस लिये आपको ऐसी आग भड़कानेकी अनुमति किस प्रकार दी जा सकती है जो देश भरमें फैल जाय और फिर कोई उसको न बुझा सके। यदि आप दाराको जिस अवस्थामें वह है उसीमें पड़े रहने देंगे तो औरंगजेब आपके सब पिछले अपराध क्षमाकर देगा और वह धन भी नहीं मांगेगा जो आपने खजुआकी लड़ाईमें लूट लिया था; बल्कि तुरन्त गुजरातकी सूबेदारी आपको मिल जायगी। आप समझ सकते हैं कि एक ऐसे प्रान्तके अधिकार का प्राप्त होना जो आपके राज्यके सन्निकट है कितने लाभकी बात है। वहां निश्चिन्त भावसे आप बड़े आनन्दसे रह सकते हैं। जो प्रतिज्ञा मैं इस पत्रमें करता हूं उसके पूरा करनेका भार मैं अपने ऊपर लेता हूं।" राजा यशवन्तसिंहपर जयसिंहके इस पत्रका बहुत प्रभाव पड़ा; उन्होंने घरसे बाहर न निकलनेका निश्चय कर लिया और औरंगजेब सेना लेकर अजमेरमें दाराशिकोहकी सेनाके सामने जा पहुँचा।

अब ऐसा कौन मनुष्य होगा जिसे इस इतिहासको पढ़कर इस बातका दुःख न होगा कि अभागे दाराको लोगोंने कैसे कैसे उलटे उपाय बतलाये और अन्तमें उसे कैसा धोखा दिया। यद्यपि यशवन्तसिंहके विचारोंके बदल जानेका हाल उसे मालूम हो गया, पर उसके

भयंकर परिणामको कौन रोक सकता था? वह निस्सन्देह अपनी सेनाको अहमदाबाद ले जाता, पर प्रचण्ड गर्मी पड़ रही थी और जलके अभावके कारण जो इस ऋतुमें राजपूतानेमें हो जाता है ३०-३५ दिनतक उन राजाओंके देशोंमें जो यशवन्तसिंहके मित्र और हितैषी थे यात्रा करना अत्यन्त कठिन था। इस पर विशेषता यह थी कि औरंगजेबसा प्रवीण शत्रु नई और सबल सेना लिये हुए उसके पीछे लगा हुआ था। अतएव अन्तमें उसने वीरतापूर्वक रणक्षेत्रमें प्राण दे देना उचित समझा। यद्यपि वह जानता था कि यह लड़ाई बराबरकी नहीं होगी तौभी उसने सोचा कि क्या चिन्ता है, या तो शत्रुको मार लेंगे या स्वयं मर जायँगे। पर अबतक भी बेचारे दाराके लिये जो प्रपंच रचे जाते थे वे उसको मालूम नहीं थे। जिनपर कुछ भी सन्देह नहीं किया जाता था वेही उसकी दुर्दशाके लिये घातमें लगे थे। दुष्ट शाहनवाजखां जिसपर उसे पूरा भरोसा था बराबर औरंगजेबसे पत्र-व्यवहार करता और दाराकी सब युक्तियां छिपी रीतिसे उसपर प्रकट कर देता। परन्तु इस विश्वासघातका दण्ड उसे शीघ्र मिल गया, अर्थात् वह लड़ाईमें मारा गया। कुछ लोग कहते हैं कि स्वयं दाराशिकोहके हाथसे उसकी मृत्यु हुई पर अधिक सच्ची यह बात मालूम होती है कि उसे दाराशिकोहके उन गुप्त हितैषियोंने जो औरंगजेबकी सेनामें थे इस भयसे मार डाला कि यदि यह जीवित रहेगा तो हमारा सब भेद खोल देगा और उन प्रार्थनापत्रोंका हाल उससे कहेगा जो हम दाराशिकोहकी सेवामें भेजते रहे हैं। परन्तु अब इस विश्वासघातीके मारे जानेसे क्या लाभ था? दाराको तो उसी समय उसके साथ समझ बूझकर उचित बरताव करना उचित था जिस समय उसके मित्रोंने समझाया था

कि शाहनेवाजखां विश्वासके योग्य नहीं है; इससे सावधान रहना।

अस्तु, पहर दिन चढ़ने पर लड़ाई आरम्भ हुई। दाराके तोपखाने से जो कुछ ऊँचे और उचित स्थान पर लगा था पहले गोलोंके छूटनेके भारी शब्द सुनाई दिये। पर ऐसा कहा जाता है कि उससे शत्रुओंने यहांतक जाल फैला रखा था कि इन तोपोंसे शब्द मात्र किये जाते थे; इनकी थैलियां बिना गोलोंकी भरी हुई थीं। इस लड़ाईका वर्णन करना व्यर्थ है, क्योंकि इसे लड़ाई नहीं किन्तु प्रपंचसे भरा एक नाशकारक उत्पात कहना चाहिये। पहला गोला चलतेही राजा जयसिंह एक ऐसे स्थान पर आकर खड़े हुए जहांसे दारा उनको देख सकता था। वहां जाकर उन्होंने एक सरदारके द्वारा यह सन्देसा उसके पास भेजा कि "यदि तुम पकड़े जानेसे बचना चाहते हो तो तुरन्त युद्धक्षेत्रसे अलग हो जाओ।" यह सन्देसा पातेही उस बेचारे राजकुमारके चित्तमें ऐसा भय समाया कि वह सामग्री इत्यादिकी ओर कुछ भी ध्यान न देकर एकदम रणक्षेत्र छोड़कर भाग गया। उसने अपने बाल बच्चोंको सकुशल निकाल ले जाना ही बहुत समझा; क्योंकि उस समय वह एकदम जयसिंहके अधिकारमें था। राजा जयसिंहकी नीति थी कि वे सभी राजकुमारोंके साथ सदा प्रतिष्ठाका बरताव करते थे; क्योंकि वे सोचते थे कि राजकुलके किसी व्यक्तिके साथ अनुचित बरताव करनेका किसी न किसी दिन बहुत बुरा परिणाम हो सकता है।

बेचारा दुखियारा दारा जिसका बचाव केवल अहमदाबाद पर पुनः अधिकार प्राप्त करनेपर निर्भर करता था ऐसे लम्बे चौड़े प्रदेशों में होकर जानेको विवस था जो प्रायः सबके सब विपक्षी राजाओंके अधीन थे। खेमेतक उसके पास नहीं थे और अधिकसे अधिक दो

गर्मी बहुत पड़ रही थी और उस पर विशेषता यह थी कि कोली लोग रात दिन पीछा नहीं छोड़ते थे। उसके सिपाहियोंको वे इतना लूटते और काटते थे कि केवल कई पग पीछे रह जाना भी महा भयंकर था। ये कोली इस देशके किसान हैं जो बड़ेही लुटेरे और भारतवर्षमें एक ही दुष्ट हैं। अस्तु, इन सब कठिनाइयों और आपदाओंसे बचकर यद्यपि दारा एक ऐसे स्थानतक पहुंच गया जहांसे अहमदाबाद केवल एक दिनमें पहुंचा जा सकता था और उसे आशा भी हुई थी कि कल अपनेको मैं अहमदाबादमें पाऊंगा और फिर एक सेना एकत्रित कर लूंगा; पर भाग्यहीन और हारे हुए लोगोंकी आशालता क्या कभी लहलहाती है?—उस व्यक्तिने जिसको वह अहमदाबादका किलेदार और प्रबन्धकर्त्ता बनाकर पीछे छोड़ आया था यह स्वामिद्रोहिता और दुष्टता की कि यातो औरंगजेबके धमकानेसे या कुछ लालच दिखलानेसे वह दाराके विरुद्ध हो गया और इस आशयका एक पत्र उसने इसके पास लिख भेजा कि नगरके निकट न आइयेगा, फाटक बन्द हैं और लोग अस्त्रशस्त्रसे सज्जित खड़े हैं!

इस समय मैं भी तीन दिनसे दाराशिकोहके साथ था। मैं उसे अचाञ्चक मार्गमें मिल गया था। उसके साथ कोई वैद्य नहीं था, इसलिये उसने मुझे जबर्दस्ती अपने साथ ले लिया था। अहमदाबादके गवर्नरका पत्र पहुँचनेसे एक दिन पहलेकी बात है कि दाराने मुझसे कहा कि कदाचित् आपको कोली मार डालें। यह कहकर वह आग्रहपूर्वक मुझे अपने साथ उस कारवांमें ले गया जहां वह स्वयं ठहरा था। अब उसकी यह दशा थी कि एक खेमातक उसके पास नहीं था। उसकी बेगम और स्त्रियाँ केवल एक क़नात की आड़में थीं। क़नातकी रस्सियां मेरी सवारीकी बहलीके पहियोंसे

जिसमें मैं सोया करता था बांधी गई थीं। जो लोग इस बातको जानते हैं कि भारतवर्षके अमीर लोग अपनी स्त्रियोंके पर्देके विषयमें कितनी अत्युक्ति करते हैं वे मेरी इस लिखावट पर विश्वास न करेंगे परन्तु मैंने इस घटनाका हाल उस दुःखद अवस्थाके प्रमाणमें लिखा है जिसमें दारा उस समय पड़ा हुआ था। अस्तु, इसी रातको पौ फटनेके समय जब अहमदाबादके हाकिमका उक्त सन्देसा आया तब औरतोंके रोने चिल्लानेने हम सबको रुला दिया। उस समय एक विलक्षण प्रकारकी हैरानी और निराशा छा रही थी; सभी डर के मारे चुपचाप एक दूसरेका मुख देखते थे; कोई उपाय नहीं सूझता था; कुछ नहीं मालूम था कि क्षण भरमें क्या हो जायगा। जब दारा-शिकोह स्त्रियोंसे मिलकर कनातके बाहर आया तब मैंने देखा कि उसके मुख पर मुर्दनीसी छा रही है; वह कभी इससे कुछ कहता है कभी उससे कुछ बात करता है; एक साधारण सिपाहीसे भी पूछता है कि अब क्या करना चाहिये। जब उसने देखा कि प्रत्येक व्यक्ति डरा और घबराया हुआ मालूम होता है तब उसे विश्वास हो गया कि सम्भवतः अब इनमेंसे एक भी मेरा साथ न देगा। वह बड़ा ही हैरान था कि अब क्या होगा; किधर जाना चाहिये; यहां ठहरनेसे तो खराबी ही खराबी दीखती है।

इस तीन दिनकी अवधिमें जब कि मैं दाराके साथ था हमलोगोंको रात दिन बिना कहीं ठहरे हुए जाना पड़ा। गर्मी ऐसी प्रचण्ड थी और धूल इतनी उड़ती थी कि दम घुटा जाता था। मेरी बहलीके तीन बहुत सुन्दर और बड़े गुजराती बैलोंमेंसे एक मर चुका था, दूसरा मरनेकी दशाको पँहुँच चुका था और तीसरा इतना थक गया था कि चल नहीं सकता था। यद्यपि दारा बहुत चाहता था

कि मैं उसके साथ रहूं, विशेषकर इस कारणसे कि उसकी एक बेगमके पैरमें बहुत बुरा घाव था, पर वह इस दुर्दशाको पहुँच गया था कि धमकाने और अनुनय विनय करने पर भी किसीने उसको मेरी सवारीके लिये कोई घोड़ा या बैल या ऊंट नहीं दिया। जब कोई सवारी नहीं मिली तब लाचार होकर मैं पीछे रह गया। दाराको चार पांचसौ सवारोंके साथ जाते देखकर (क्योंकि घटते घटते अब उसके साथ इतनेही सवार रह गये थे) मैं एकदम रो पड़ा। परन्तु अबतक भी दो हाथी उसके साथ थे जिनपर लोग कहते थे कि रुपये और अशर्फियां लदी हुई हैं। उस समय मैं समझा था कि दारा ठट्ठकी ओर जायगा और वर्त्तमान अवस्थाओंको देखते हुए यह उपाय कदाचित् कुछ बुरा नहीं था; पर वास्तविक बात तो यह है कि इधर भी विपत्तिका सामना था और उधर भी। मुझे कदापि ऐसी आशा नहीं थी कि वह उस मरुस्थानसे जो अहमदाबाद और ठट्टके बीचमें है कुशलपूर्वक बचकर निकल जायगा। हुआ भी ऐसा ही। उसके साथियोंमेंसे बहुतसी स्त्रियां मर गई और पुरुषों पर तो ऐसी आपदा आई कि कुछ तो भूख प्यास और थकावटसे मर गये और अधिकांशको निर्दय कोलियोंने मार डाला। यदि ऐसी आपदाओंसे भरी यात्रामें स्वयं दाराशिकोह मर जाता तो मैं उसे बड़ाही भाग्यवान् समझता, पर सब प्रकारके कष्ट और विपत्ति सहता हुआ अन्तमें वह कच्छ प्रान्तमें पहुँच गया।

वहांके राजाने जैसा कि चाहिये बड़ी उत्तम रीतिसे उसका स्वागत किया और अपने यहां उसे स्थान दिया; पश्चात् उसने दारासे कहा कि यदि आप अपनी कन्याका विवाह मेरे पुत्रसे करदें तो मैं अपनी सब सेना आपकी सहायताके लिये उपस्थित कर दूं।

परन्तु पीछे जिस प्रकार यशवन्तसिंहपर जयसिंहका जादू चल गया था उसी प्रकार यहाँ भी हुआ। शीघ्रही उसके भाव बदले हुए दिखाई दिये। जब कई बातोंसे दाराशिकोहने देख लिया कि यह दुष्ट तो मेरे प्राणही लेना चाहता है तब वह तुरन्त वहांसे ठट्ठकी ओर चल दिया।

अब यदि मैं वह सब हाल कहने लगूं कि किस प्रकार दुष्ट कोलियोंका मेरा सामना हुआ, किस रीतिसे मैंने उनको अपने ऊपर प्रसन्न किया और किस युक्तिसे वह थोड़ासा रुपया जो मेरे पास था बच गया, तो कदाचित् इस पुस्तकके पढ़नेवाले ऊब जायँगे; अतएव संक्षेप यह है कि मैंने अपनी डाक्टरी विद्याकी बड़ी प्रशंसा की और मेरे दो नौकरोंने भी जो उसी भयमें डूबे हुए थे जिसमें मैं था उनको यही जताया कि डाक्टरी विद्याके ज्ञान और अनुभवमें इस संसारमें हमारे स्वामीकी कोई बराबरी नहीं कर सकता। दाराशिकोहके सिपाहियोंने इसको ऐसा सताया है कि जो कुछ बहु-मूल्य माल असबाब इसके पास था वह सब इससे छीन लिया गया है। निदान हम लोगोंके सौभाग्यसे इतना कहने सुननेका यह परिणाम हुआ कि दुष्ट कोलियोंका मन कुछ पसीज गया। हम तीनोंको सात आठ दिनों तक कैद रखनेके बाद अन्तमें एक बैल हमारी गाड़ीमें जोतकर उन्होंने हमको वहांतक पहुँचा दिया जहांसे अहमदाबादके गुम्बद देख पड़ते थे। इस नगरमें एक अमीरसे मेरी मुलाकात हो गई जो देहलीको जाता था और उसीकी शरणमें मैं यहांतक चला आया। मार्गमें स्थान स्थान पर आदमियों, हाथियों, घोड़ों, ऊंटों और बैलोंकी लाशें पड़ी देख पड़ीं जो दाराशिकोहकी दुर्दशाग्रस्त सेनाका हाल मानों गला फाड़कर सुना रही थीं।

जिस समय दारा ठट्ठकी आपदापूर्ण यात्रामें लगा हुआ था उस समय बङ्गालमें लड़ाई पहलेकी तरह हो रही थी और शुजा अपने शत्रुओंकी आशासे बहुत बढ़कर साहस और उद्योग दिखा रहा था; तथापि औरंगजेबको उसकी ओरसे कुछ अधिक चिन्ता नहीं थी; क्योंकि मीरजुमलाकी युक्ति और बुद्धिमानीसे वह भली भांति परिचित था। हां, जिस बातका उसे विशेष खटका था वह यह थी कि सुलेमानशिकोह निकट था और यह चिन्ता साधारणतः फैली हुई थी कि श्रीनगरसे जहांसे आगरा आठ दिनसे भी कमका मार्ग है वह वहांके राजा और सेना समेत उतरने वाला है। औरंगजेब ऐसा बुद्धिहीन नहीं था कि ऐसे शत्रुको तुच्छ समझता; सो अब उसको अधिकतर इसी बातकी चिन्ता थी कि किस तरह सुलेमान शिकोहको वशमें लाना चाहिये। इसका सबसे उत्तम उपाय उसकी समझमें यह आया कि राजा जयसिंहके ही द्वारा इस राजासे भी कुछ बन्दोबस्त किया जाय। निदान जयसिंहने श्रीनगर- नरेशके पास इस आशयका एक पत्र लिखा कि यदि आप सुलेमानशिकोह को पकड़कर भेज देंगे तो आपको बड़े बड़े इनाम मिलेंगे नहीं तो बहुत हानि उठावेंगे। इस पत्रका उसने यह उत्तर दिया कि चाहे मेरा सम्पूर्ण देश मुझसे छीन लिया जाय पर मैं ऐसी अप्रतिष्ठा और कापुरुषताका काम नहीं करूंगा। जब औरंगजेबने देख लिया कि धमकी या लालच देनेसे कुछ नहीं हो सकता, यह राजा न्यायके विरुद्ध न होगा, तब उसने अपनी सेनाको पहाड़तलीकी ओर भेजा और अनगिनत बेलदार पहाड़ोंको काटकर रास्ता चौड़ा करनेके लिये नियुक्त किये; पर राजा अपने विपक्षियोंके इन व्यर्थके उद्योगों को जो उसके देशमें प्रवेश करनेके लिये नाहक किये जाते थे निरा

बच्चोंका खेल समझता और हँसता था। वास्तवमें उसका हँसना ठीक था; क्योंकि यदि औरंगजेब जैसे चार बादशाह भी मिलकर उस पहाड़ी देश पर चढ़ाई करते तौभी उन कुढब पहाड़ी भागोंमें प्रवेश न कर सकते। अन्तमें हुआ भी यही कि औरंगजेबको क्रोधमें आकर अपनी सेना पीछे बुलानी पड़ी।

इस बीचमें दाराशिकोह ठट्ठके निकट पहुँच चुका था और केवल दोही तीन दिनका मार्ग बाकी था। मुझको उन फरासीसियों और कई दूसरे युरोपियनोंसे जो इस दुर्गकी सेनामें थे मालूम हुआ कि यहां पहुँच कर दाराको यह समाचार मिला कि मीरबाबाने जो बहुत दिनोंसे दुर्गको घेरे हुए था भीतरवालोंको यहांतक तंग कर दिया है कि आध सेर मांस या चावल २॥) को मिलते हैं और दूसरी वस्तुएं भी बहुत महँगी हैं; तौभी बहादुर किलेदार अबतक उसी प्रकार साहस किये हुए है, बल्कि प्राय: वह दुर्गके बाहर निकल कर शत्रुओंपर ऐसे आक्रमण करता है जैसे चाहियें, हर प्रकारकी सचाई वीरता और स्वामिभक्तिसे मीरबाबाके आक्रमणोंको रोकता है और औरंगजेबकी धमकियों तथा प्रतिज्ञाओं पर हँसता है। उसके इस प्रशंसनीय कामके विषयमें वे युरोपियन भी जो उसकी सेनामें थे कहते थे कि सब सच है। उन्होंने मुझसे यह भी कहा कि जब उसको दाराके निकट आनेका सम्वाद मिला तब उसने और भी उत्साह दिखलाया और इस प्रकार सिपाहियोंका मन अपने हाथमें कर लिया कि दुर्गवाले मीरबाबाका घिराव तोड़कर दाराको दुर्गमें लानेके लिये अपने प्राण तक दे देनेको तैयार दिखाई दिये।

इसके अतिरिक्त उस साहसी सरदारने और भी कई अच्छे उपायोंसे युक्तिनिपुण जासूसोंको मीरबाबाके सैन्यमें भेजकर घेरा

करनेवालोंके मनमें इस बातका विश्वास उत्पन्न कर दिया कि दारा एक बहुत बड़ी सेनाके साथ घेरा तोड़ देनेके लिये यहां आ रहा है और अब शीघ्र पहुँचना चाहता है और यहांतक अत्युक्ति करके कहा कि हम दारा और उसकी सेनाको अपनी आंखोंसे देख आये हैं। यह युक्ति ऐसा चल गई कि घेरेवालोंके छक्के छूट गये। इसमें सन्देह नहीं कि यदि दारा उस समय जा पहुँचता तो मीरबाबाके लोग अवश्य तितर बितर हो जाते; वरन् उनमेंसे कुछ लोग उसकी ओर हो जाते; पर उसके भाग्यमें ऐसाही लिखा था कि किसी उद्योग में वह सफलता न प्राप्त करे। अस्तु, यह समझ कर कि थोड़से आदमियोंके साथ घेरेका तोड़ना असम्भव है पहले तो उसका यह विचार हुआ कि सिन्धु नद पार करके ईरानको चला जाय (यद्यपि इस उपायका काममें आना बहुत ही कठिन था, क्योंकि पठानों और बहुतसे ऐसे छोटे छोटे सरदारोंके देशोंसे होकर जाना पड़ता जो न तो ईरानही अधीन थे न हिन्दुस्तानके) परन्तु सबके सिवा उसकी बेगमने एक निर्बल और वाहियातसी बात कहकर उसका यह विचार भंग कर दिया। अर्थात् उसने कहा कि " अगर आप ईरान जानेका क़स्द करेंगे तो खूब समझ लीजिये कि मुझको और मेरी बेटी दोनों को शाहईरानकी लौंड़ियां बनना पड़ेगा, जो कि ऐसी बेइज्जती है कि हमारे खान्दानमें किसीको गवारा न होगी। " इस बातको बेगम और दाराशिकोह दोनों भूल गये कि हुमायूँ जब ऐसीही आपदाओं में पड़कर ईरान गया था और उसकी बेगम भी उसके साथ थी तब उन दोनोंके साथ कोई अनुचित व्यवहार नहीं हुआ था, बल्कि बहुत ही सम्मान और शिष्टाचारसे वहां उनका स्वागत हुआ था। अस्तु, इसी प्रकार विचार करते करते दाराने सोचा कि जीवनखां पठानके

यहां जाना उचित होगा जो एक प्रसिद्ध और बलवान् सरदार है और उसका स्थान भी कुछ बहुत दूर नहीं है। दाराके मनमें जीवनखांकी सहायताका ध्यान आनेका कारण यह था कि उसके विद्रोह मचाने और दुष्टता करनेके कारण शाहजहांने दो बार उसे हाथीके पांवोंके नीचे कुचलवा डालनेकी आज्ञा दी थी पर दोनोंही बार दाराके कहने सुननेसे वह छूट गया था। दाराको इस समय उसके पास जानेसे यह मतलब था कि उससे कुछ सामरिक सहायता लेकर वह मीर-बाबाको ठट्ठके दुर्गसे हटा सके और वह खजाना जो वहांके किलेदार के पास था लेकर कन्दहार चला जाय जहांसे सहजमें काबुल पहुँच सके। उसे विश्वास था कि उसके वहां पहुँच जाने पर काबुलका सूबेदार महावतखां (जो एक बड़ा भारी अमीर था और काबुलवाले उसे बहुत मानते थे) बिना कुछ आगापीछा किये वरन् बड़े प्रेमसे उसकी सहायता करनेको तैयार होगा; क्योंकि काबुलकी सूबेदारी उसे इसीकी मददसे मिली थी। इन कारणोंसे दाराका ऐसा सोचना कुछ बुरा नहीं था; परन्तु उसकी स्त्रियां उसका यह विचार सुनकर बहुत ही घबराई चिन्तित हुई और बोलीं कि जीवनखांके यहां जाना उचित नहीं है—बल्कि बेगम उसकी पुत्री और पुत्र सिफरशिकोहने उसके पांवों पर गिर गिर कर प्रार्थना की कि आप उधरका विचार छोड़ दें क्योंकि यह पठान एक प्रसिद्ध डाकू और लुटेरा है; ऐसे आदमी पर भरोसा करना अपनी मृत्युको आप बुलाना है। उन्होंने यह भी समझाया कि ठट्ठका घिराव उठा देनेकी कुछ ऐसी आवश्यकता भी नहीं है; इस लड़ाई झगड़ेमें हाथ डाले बिना भी आप काबुलका मार्ग अवलम्बन कर सकतेहैं; क्योंकि मीरबाबा कभी ठट्ठका घेरा छोड़कर आपका रास्ता नहीं रोकेगा।परन्तु यह तो निश्चित

बात थी कि दाराकी उलटी समझ सदा उसको सीधे मार्गसे भड़का देती थी; इसी कारण उनकी बातें उसको बिलकुल अच्छी नहीं मालूम हुई। उसने कहा कि काबुलकी यात्रा बहुत ही कठिन और भयानक है और जिस व्यक्तिके प्राण मैंने बचाये हैं क्या सम्भव है कि वह इस समय मेरी सहायता न करेगा? आखिर बहुत समझाये और प्रार्थना किये जानेपर भी वह काबुल न जाकर (जहांकी यात्रा बारतवमें भयंकर थी) जीवनखां पठानके यहां चला गया। सच है, दुष्ट लोग अपनी नेकनामी बदनामीका कुछ भी भय न कर अपने सहायकों और शुभचिन्तकोंके भी प्राण लेनेको तैयार हो जाते हैं। जबतक वह पठान अर्थात् जीवनखां जिसके यहां दारा गया था यह समझता रहा कि दाराके साथ बहुत बड़ी सेना आती होगी तबतक तो उसने उसके साथ बड़े सम्मानका बरताव किया, उसके साथी सिपाहियोंको सादर स्थान दिया और उनके आरामके प्रबन्ध कर देनेकी अपने आदमियोंको आज्ञा दी, परन्तु जब उसे मालूम होगया कि दाराके साथ दो तीन सौ आदमियोंसे अधिक नहीं हैं तब तुरन्तही उसके भाव बदल गये। यह नहीं पता लगता कि औरंगजेबके कहनेसे अथवा स्वयं अपनी इच्छासे उसने ऐसा विश्वासघात किया; पर जान पड़ता है कि अशर्फियोंसे लदे हुए उन कई खच्चरोंको देखकर उसे लालच आगया जो लूट मारसे अबतक बचे हुए थे। अस्तु उसने यह दुष्टता की कि उस समय बहुतसे लड़नेभिड़ने वाले आदमी इकट्ठा करके पहले तो दाराके सब रुपयेपैसे और स्त्रियोंके आभूषण छीनकर अपने अधिकारमें करलिये; पीछे दाराशिकोह और सिफरशिकोह पर आक्रमण किया और जिन लोगोंने उनको बचाना चाहा उन्हें मार डाला। इसके बाद दाराको बांधकर उसे एक

हाथीपर बैठाया और एक बाधकको इसलिये पीछे बैठा दिया कि यदि वह अथवा उसका और कोई पक्षपाती कुछ भी हाथ पांव हिलावे तो बधक उसी क्षण उसकी समाप्ति कर दे। इस प्रकार अप्रतिष्ठाके साथ उसने दाराको लाकर टटमें मीरबाबाको सुपुर्द कर दिया। मीरबाबाने आज्ञा दी कि इसे लाहोर होते हुए देहली लेजाओ।

जब भाग्यहीन दारा देहलीके निकट पहुंचा, तब औरंगजेब ने अपने दरबारियोंसे इस बातकी राय ली कि ग्वालियरके दुर्गमें कैद करनेसे पहले उसे शहरमें घुमाना चाहिये या नहीं? इसपर कुछ लोगोंने तो यह उत्तर दिया कि ऐसा करना उचित नहीं, क्योंकि प्रथम तो यह बात राजकुटुम्बकी प्रतिष्ठाके विपरीत है, दूसरे इसमें बलवा हो जानेका डर है और कुछ आश्चर्य नहीं कि लोग उसे छुड़ा लें। पर प्रायः लोगोंकी यह राय हुई कि नहीं; उसे अवश्य नगरमें एकबार घुमाना चाहिये ताकि दूसरे लोगोंको भय हो, उनपर बादशाहका रोब छाजाय; जिन लोगोंको अभीतक उसके पकड़े जानेमें सन्देह बना हुआ है उनका सन्देह मिट जाय और उसके छिपे पक्षपातियों की आशाएँ भङ्ग हो जायँ। अन्तमें औरंगजेबने भी इसी रायको उचित समझा और दाराको नगरमें घुमानेकी आज्ञा दी। अभागा दारा और उसका पुत्र सिपहशिकोह दोनों एकही हाथीपर बैठाये गये और बधककी जगह बहादुरखांको बैठाकर नगरमें फिराया गया। परन्तु वह सिंहलद्वीपका पक्का हाथी नहीं था जिसपर दारा बहुत बढ़िया सामग्रियोंसे सजकर बैठा करता था और बहुमूल्य झूलअथवा सोनेके आभूषणोंसे ढँका रहता था; किन्तु यह एक बहुतही छोटा और गन्दा जानवर था। स्वयं उसके गलेमें भी वह बड़े बड़े मोतियोंकी माला, शरीरपर वह जरबफतका कबा और

शिरपर वह पगड़ी नहीं थी जो भारतवर्षके बादशाह और उनके कुमार पहना करते हैं। इन वस्तुओंके स्थानमें पिता पुत्र दोनों बहुतही मोटे वस्त्र पहने थे। इसी दशामें दोनों शहरभर बाजारोंमें फिराये गये। उनकी दशा देखकर मुझे भय होता था कि कहीं खूनखराबी न हो जाय। आश्चर्य है कि एक ऐसे राजकुमारके साथ जो लोगोंको प्रिय था ऐसा बरताव करनेका दरबारियोंको कैसे साहस हुआ? यह और भी आश्चर्यकी बात है कि बचावके लिये कुछ सेना भी साथमें नहीं भेजी गई थी; विशेषकर ऐसी अवस्थामें जब कि औरंगजेबके अनुचित काम देखकर सब लोग कुछ दिनोंसे उससे बहुतही रुष्ट हो रहे थे; अर्थात् पहले पिता (शाहजहाँ) और पुत्र (मुहम्मद सुलतान) और फिर भाई (मुरादबख्श) को कैदकर लेनेसे लोग उससे बहुत ही असन्तुष्ट थे।

इस अतिचारका तमाशा देखनेको बड़ी भीड़ जमा थी। स्थान स्थान पर खड़े होकर लोग दाराके दुर्भाग्य पर हाथ मल रहे थे। मैं भी नगरके सबसे बड़े बाजारमें एक अच्छे स्थानपर अपने दो मित्रों तथा सेवकोंके साथ बढ़िया घोड़ेपर चढ़ा खड़ा था। सब ओरसे रोने चिल्लानेके शब्द सुन पड़ते थे। स्त्री, पुरुष और बच्चे इस प्रकार चिल्लाते थे मानो उनपर बहुतही भयानक विपत्ति पड़ी हो। दुष्ट जीवनखां घोड़ेपर दाराके साथ था। चारों ओरसे उसपर गालियोंकी बौछाड़ पड़ रही थी; बल्कि कईएक फकीरों और गरीब आदमियोंने तो उस पाजी पठानपर पत्थर भी फेंके; परन्तु प्यारे राजकुमारके छुड़ानेका साहस किसीको नहीं हुआ!

इति प्रथम भाग।